06 यादव वोटों पर है सबकी नजर!
07 सालों बीत गये पर पूरे नहीं हुए वादे
20 रणबीर के साथ काम करने में असहज हो जाती हूं

पटना
रविवार
11 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2015
पेज - 20
मूल्य 5 रुपए

# गणादेश

जन गण मन... साप्ताहिक

www.ganadesh.com

आर.एन.आई. रजि. नं. 39661/84 | वर्ष : 31, अंक : 39 | बिहार / झारखंड से एक साथ प्रकाशित | फोन नं- 06183-224005

## इसे भी देखें

### नहीं रहे रामायण के संगीतकार रवींद्र जैन

**मुम्बई :** 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में दूरदर्शन के चर्चित धारावाहिक रामयण को अपने सुर-संगीत से सजाने वाले मशहूर संगीत निर्देशक, गायक और गीतकार रवींद्र जैन का शुक्रवार को 71 साल की उम्र में निधन हो गया। वे लंबे समय से स्वास्थ्य संबधी समस्याओं से जूझ रहे थे। पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक उन्हें मूत्र संक्रमण था। रविवार को वे एक कार्यक्रम में शामिल होने नागपुर में थे, किंतु खराब स्वास्थ्य के चलते कार्यक्रम नहीं दे पाए। वहां से उन्हें एयर एंबुलेंस से मुंबई के लीलावती अस्पताल में लाया गया था। 28 फरवरी 1944 को अलीगढ़ में जन्में रवींद्र जैन ने रामयाण के अलावा कई फिल्मों और धारावाहिकों में संगीत दिया था। उनके संगीत से सजी चर्चित फिल्मों में चोर मचाए शोर, गीत गाता चल, चितचोर और अंखियों के झरोखे से, राम तेरी गंगा मैली, हिना आदि हैं। रवींद्र जैन नेत्रहीन थे, किंतु इन्होंने अपनी प्रतिभा में इसे बाधा नहीं बनने दिया। वे 70 और 80 के दशक के चर्चित संगीतकारों में से एक रहे हैं। रवींद्र जैन ने फिल्मों में संगीत देने के अलावा कई फिल्मों और धारावाहिकों में गाने भी गाए हैं। उनके परिवार में पत्नी दिव्या और पुत्र आयुष हैं।

# चुनावी मौसम में तपता बिहार

## प्रथम चरण

### थम गया प्रचार का शोर, मतदान सोमवार को

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण में सोमवार को होने वाले मतदान के लिए चुनाव प्रचार का शोर शनिवार की शाम पांच बजे थम गया। कुछ नक्सल प्रभावित और अपराध ग्रस्त जिलों में जहां मतदान शाम तीन बजे और चार बजे होना है वहां शनिवार की शाम तीन और चार बजे ही चुनाव प्रचार खत्म हो गया। चुनाव प्रचार के आखिरी दिन सभी दलों ने प्रचार में अपनी ताकत झोंक दी। पहले चरण में दस जिलों के 49 विधानसभा क्षेत्र में मतदान होना है। इस चरण में 583 उम्मीदवारों की किस्मत दांव पर है, जिनमें 54 महिला उम्मीदवार भी अपनी किस्मत आजमा रही हैं। पहले चरण में जिन 10 जिलों में वोटिंग होनी है उनमें समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, भागलपुर, बांका, मुंगेर, लखीसराय, शेखपुरा, नवादा और जमुई हैं। पहले चरण के चुनाव में हम के प्रदेश अध्यक्ष शकुनी चौधरी, लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस, भाजपा की रेणु कुशवाहा, कांग्रेस के सदानंद सिंह समेत कई दिग्गजों की साख दांव पर है।

### शांतिपूर्ण मतदान के लिए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था

पहले चरण के चुनाव के मद्देनजर काफी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। निर्वाचन आयोग सुरक्षा की तैयारियों से संतुष्ट है। आयोग मतदान के 72 घंटे पहले से सुरक्षा की दृष्टि से पूरी सतर्कता बरतने का आदेश दे चुका है। पहले चरण के चुनाव की तैयारियों को लेकर चुनाव आयोग ने सभी 49 विधानसभा क्षेत्रों में तैनात सामान्य आब्जर्वर, पुलिस आब्जर्वर और एक्सपेंडिचर आब्जर्वर से भी बात की। इसके अलावा सुरक्षा के मद्देनजर चुनाव आयोग ने बिहार के अलावा पड़ोसी राज्यों के मुख्य सचिव और डीजीपी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग भी की है। सुरक्षा के मद्देनजर 10 अक्टूबर की शाम 5 बजे से ही संबंधित जिलों की सीमाओं की नाकेबंदी कर दी गई है।

शेष पेज 7 पर

## पूरे हफ्ते छाया रहा आरक्षण और बीफ का मुद्दा

### बीफ पर लालू तो आरक्षण पर भाजपा बैकफुट पर

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** न तो मौसम में ठंडक घुल रही है और न ही चुनाव प्रचार में, बल्कि समय बीतने के साथ-साथ चुनावी पारा और भी तेजी से चढ़ता जा रहा है। इस हफ्ते भी चुनाव प्रचार का तापमान चढ़ा रहा। और इस कदर चढ़ा रहा कि नेताओं के भाषणों की तपिश सबने महसूस की। श्रोताओं ने भी और चुनाव आयोग ने भी। इस हफ्ते चुनाव प्रचार में राज्य के छोटे-बड़े सभी नेताओं ने तो हुंकार भरी ही, राष्ट्रीय स्तर और दूसरे राज्यों के नेता भी अपने-अपने दलों और गठबंधन के लिए वोट मांगते नजर आए। पीएम नरेंद्र मोदी, राजनाथ सिंह, राहुल गांधी समेत बाहर के कई नेता अपने दल और उम्मीदवारों के पक्ष में मतदाताओं को लुभाने के लिए बिहार के दौरे पर रहे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, लालू प्रसाद यादव, जीतनराम

मांझी, सुशील मोदी जैसे बिहार के नेता तो मौजूद रहे ही। बात अगर पिछले हफ्ते के मुद्दे की करें तो चुनाव प्रचार में जहां विकासवाद और आरक्षण का मुद्दा छाया रहा, वहीं इस हफ्ते आरक्षण और विकास के नारे के साथ दादरी कांड के बहाने बीफ का मुद्दा चर्चा के केंद्र में रहा। अगर कहें कि

बीफ का मुद्दा इस हफ्ते हर मुद्दे पर भारी पड़ा तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। लालू का बीफ पर बयान और उस बयान पर सफाई ने राजग खासकर भाजपा को उनपर हमला बोलने का मौका मुहैया करा दिया। बीफ के मुद्दे पर राजद सुप्रीमों बैकफुट पर दिखाई दिए।

शेष पेज 7 पर

### महागठबंधन ने जारी किया न्यूनतम साझा कार्यक्रम

गांवों, युवाओं, और महिलाओं पर जोर के साथ कई और बातें

**पटना :** जदयू, राजद और कांग्रेस के महागठबंधन ने शुक्रवार को साझा कार्यक्रम जारी कर दिया। इसमें राज्य में पांच नए मेडिकल कॉलेज खोलने और समाज के वंचित तबकों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाने के साथ गांवो, युवाओं और महिलाओं की बेहतरी पर जोर दिया गया है। महागठबंधन ने जनसंख्या के आधार पर आरक्षण के साथ-साथ निजी क्षेत्रों में भी आरक्षण लागू किए जाने की वकालत की। नीतीश कुमार के नेतृत्व में बनने वाली महागठबंधन की सरकार के लिए कानून का राज सर्वोच्च प्राधमिकता होगी। यही नहीं निर्बाध बिजली आपूर्ति भी इस साझा कार्यक्रम में है। साझा कार्यक्रम में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने और जातिगत जनगणना जारी करने की की मांग के साथ केंद्र से कई और भी मांग की गई है। गठबंधन के इस साझा कार्यक्रम को जदयू के प्रदेश कार्यालय में महागठबंधन के नेताओं की मौजूदगी में जदयू के प्रदेश अध्यक्ष वशिष्ठ नारायण सिंह के द्वारा जारी जारी किया गया।

#### साझा कार्यक्रम की प्रमुख योजनाओं का नाम और अनुमानित व्यय

| | |
|---|---|
| आर्थिक हल-युवाओं को बल- आरक्षित रोजगार-महिलाओं को अधिकार | 49,800 करोड़ |
| हर घर बिजली लगातार- | 55,600 करोड़ |
| हर घर नल का जल- | 47,700 करोड़ |
| घर तक पक्की गली-नालियां- | 47,700 करोड़ |
| शौचालय निर्माण-घर का सम्मान- | 28,700 करोड़ |
| अवसर बढ़े-आगे बढ़े- | 10,300 करोड़ |

#### साझा कार्यक्रम में इस पर भी जोर

- आरक्षण में छेड़छाड़ बरदाश्त नहीं
- न्याय के साथ विकास
- सुशासन-कानून का राज
- कृषि का विकास
- सबको गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा
- बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

## शिवराज, वसुंधरा के बहाने साधा भाजपा पर निशाना

### केजरीवाल ने भ्रष्टाचार के आरोप से घिरे मंत्री को हटाया

**नई दिल्ली :** दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने घूस लेने के आरोपी अपनी सरकार के एक मंत्री को उनके पद से बर्खास्त कर दिया। केजरीवाल ने शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर दिल्ली के खाद्य आपूर्ति मंत्री आसिम अहमद खान को उनके पद से हटाए जाने का अपना फैसला सुनाया। आसिम अहमद खान पर एक स्टिंग के जरिए एक बिल्डर से 6 लाख रुपये घूस लेने का आरोप है। केजरीवाल ने खान पर लगे आरोपों की सीबीआई से जांच कराने की सिफारिश कर दी है। दिल्ली सरकार ने इमरान हुसैन को नया खाद्य आपूर्ति मंत्री बनाया है। मुख्यमंत्री के मुताबिक खान पर विधानसभा परिसर में बन रही एक इमारत को पहले बनने से रोकने और फिर काम जारी रखने की एवज में 6 लाख रुपए मांगने का आरोप है। आरोप है कि रकम देने के बाद ही इमारत का निर्माण शुरू हो सका।

केजरीवाल के मुताबिक एक व्यक्ति द्वारा इसका ऑडियो स्टिंग उन्हें गुरुवार को मिला। जिसके 24 घंटे के भीतर कार्रवाई करते हुए उन्होंने मंत्री को पद से हटा दिया। केजरीवाल ने कहा कि अगर किसी पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं तो उसे बख्शा नहीं जाएगा, चाहे वह मेरा बेटा ही क्यों न हो। उन्होंने दावा किया कि ऐसा राजनीति में कभी नहीं हुआ। उन्होंने इसके साथ भाजपा पर भी निशाना साधते हुए सवालिया अंदाज में कहा कि क्या भाजपा भी भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज चौहान और राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को हटाएगी। उधर भाजपा और कांग्रेस ने केजरीवाल के एक और मंत्री के आरोपों से घिरने पर निशाना साधा। इससे पहले जितेंद्र तोमर को डिग्री विवाद में घिरने के बाद कानून मंत्री के पद से हटा दिया गया था।

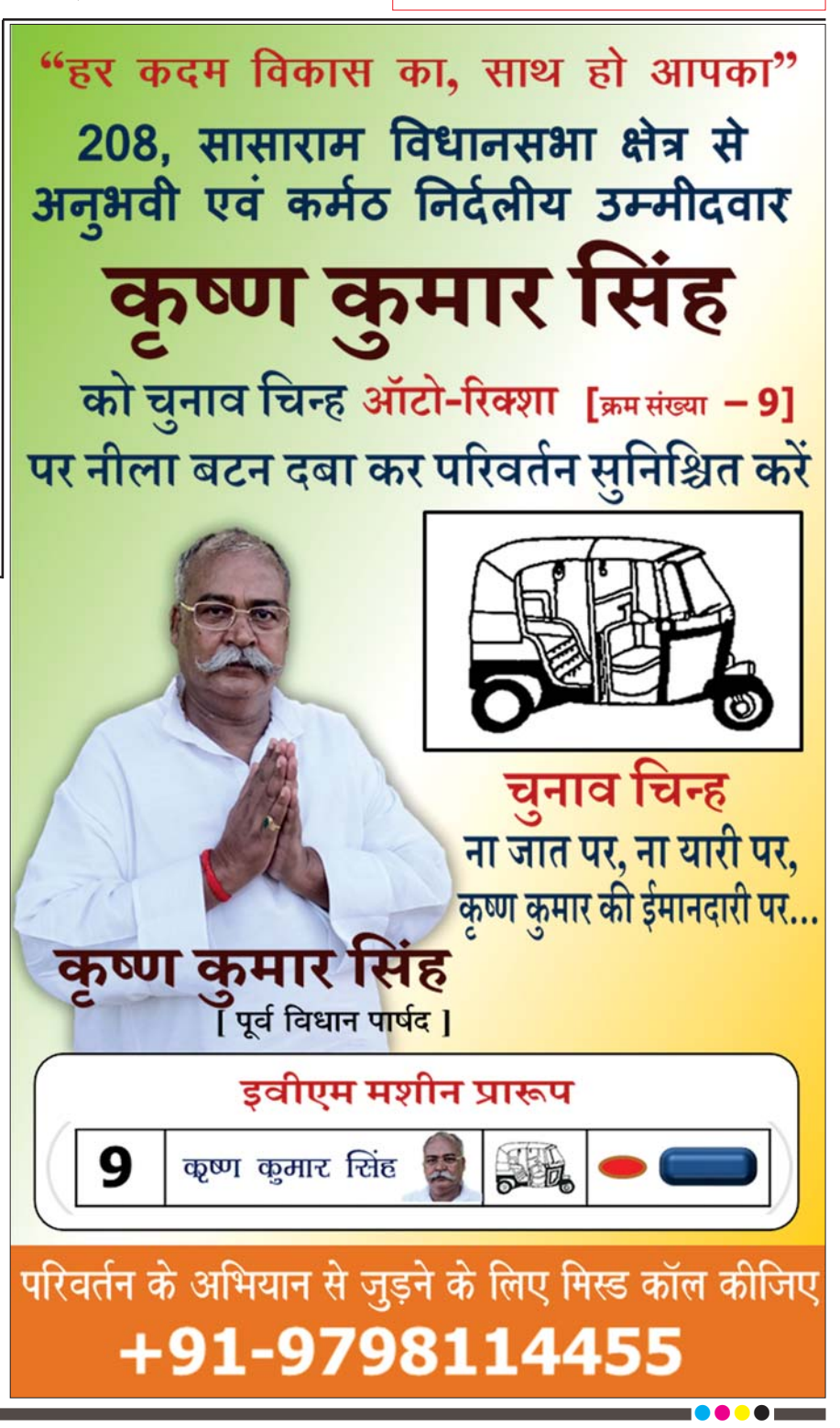

# सत्ता पाने का जरिया न बने धर्म : राष्ट्रपति

**नई दिल्ली :** राजधानी दिल्ली से कुछ ही दूरी पर बसे दादरी में गोहत्या की अफवाह के बाद भीड़ द्वारा एक व्यक्ति की हत्या के कुछ दिन बाद राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने सहनशीलता बनाए रखने की अपील की है। जॉर्डन यात्रा से पहले एक अखबार को दिए इंटरव्यू में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने कहा है, भड़काऊ भाषण और डर फैलाने की कोशिश बंद होनी चाहिए। हमारे मूल्य और संस्कार हमारी राजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा होना चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्रपति ने कहा, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व तो हमारी सभ्यता की नींव हैं। इन्हें दिल में बसा कर रखना चाहिए और उदारता को बढ़ावा देना चाहिए। हमें खासतौर पर इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि धर्म सत्ता की भूख शांत करने का मुखौटा न बनने पाए।

बुधवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में भी प्रणव मुखर्जी ने कहा था कि देश को जोड़ने वाले मूल्यों को खत्म नहीं होने दे सकते। प्रणव मुखर्जी के इस बयान के बाद पीएम मोदी ने भी दादरी हत्याकांड पर अपनी चुप्पी तोड़ी।

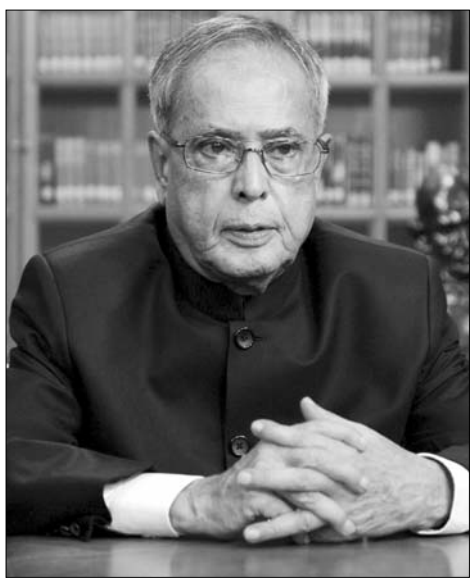

## दादरी हत्याकांड पर पीएम मोदी ने तोड़ी चुप्पी

दादरी हत्याकांड को लेकर पीएम मोदी ने पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी है। बिहार के नवादा की रैली में पीएम मोदी ने दादरी कांड का जिक्र तो किया लेकिन कहा कि हिंदू और मुसलमान गरीबी से लडें। राजनीतिक फायदे के लिए बयानबाजी ठीक नहीं।

## दादरी मामले पर मायावती ने सपा और भाजपा पर बोला तीखा हमला

**लखनऊ :** लखनऊ में काशीराम महानिर्वाण दिवस पर आयोजित एक कार्यक्रम में बसपा सुप्रीमो मायावती ने दादरी मामले पर सपा और भाजपा पर करारा हमला किया। दादरी में गोमांस की अफवाह पर हुई हत्या पर मायावती ने कहा कि समाज को बांटने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इन सब हथकंडों में किन पार्टियों का हाथ है और चुनाव में कौन सी पार्टियां इसका फायदा लेना चाहती हैं। मायावती ने कहा कि यूपी में मात्र सत्ता पाने के लिए बीजेपी और सपा दोनों ही षडयंत्र कर रहे हैं। ये दोनों ही सरकारें दलित और गरीब विरोधी हैं। उन्होंने प्रमोशन में आरक्षण का मुद्दा उठाते हुए कहा कि आरक्षण के मसले पर सपा और भाजपा दोनों का चेहरा सामने आ गया है। सपा पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि जो योजनाएं हमारे कार्यकाल में शुरू की गई थीं उनको इस सरकार ने बदल दिया है। उन्होंने कहा कि बसपा की सरकार आते ही वो सारी योजनाएं फिर से शुरू कर दी जाएंगी।

## स्थानीय घटनाओं के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार नहीं : नायडू

**नई दिल्ली :** दादरी में गोमांस खाने की अफवाहों को लेकर भीड़ द्वारा एक व्यक्ति की हत्या और उसके बेटे को घायल करने की घटना की पृष्ठभूमि में केंद्रीय मंत्री एम वेंकैया नायडू ने कहा कि 'स्थानीय घटनाओं' के लिए केंद्र को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है और लोग खासकर युवा पीढ़ी इस तरह की घटनाओं में नहीं बल्कि विकास में रूचि रखती है। मंत्री ने यह भी कहा कि कई 'स्थानीय घटनाएं' दुर्भाग्यपूर्ण हैं और निंदनीय भी हैं लेकिन किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले स्थानीय हालात पर ध्यान देना चाहिए।

नायडू ने कहा, 'लोग विकास चाहते हैं। मैं आपको बता दूं कि उनकी किसी और चीज में रूचि नहीं है। लोग उब रहे हैं। दादरी में जो हुआ, कौन सही है, कौन गलत है, यह लोगों के लिए मुद्दा नहीं है। यह किसकी सरकार है? क्या यह स्थानीय सरकार है? विधि व्यवस्था राज्य सरकार का मुद्दा है। ये स्पष्टीकरण देना होगा लेकिन लोगों की इसमें रूचि नहीं है।' शहरी विकास मंत्री ने कहा कि युवा पीढ़ी विकास, अच्छी नौकरियां, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, सामाजिक सुरक्षा चाहती है।

उन्होंने इन लक्ष्यों की दिशा में मोदी सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर देने के लिए जन धन योजना, अटल पेंशन योजना जैसी सरकारी योजनाओं की भी बात की। उन्होंने कहा, 'यहां-वहां दूसरी चीजें हो रही हैं। ये सब केंद्र सरकार के कारण नहीं हैं। ये स्थानीय घटनाएं हैं। ये दुर्भाग्यपूर्ण हैं। उनमें से कुछ निंदनीय भी हैं। लेकिन साथ ही आपको संवेदनाओं, स्थानीय हालात को समझना होगा और फिर निष्कर्षें पर पहुंचना होगा।'

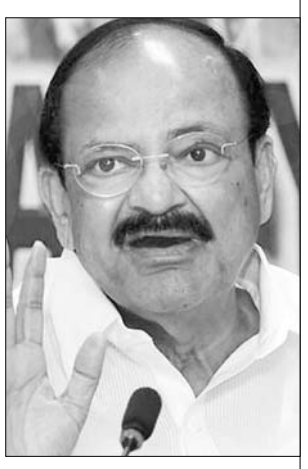

## कुछ नहीं बोलना चाहता, बोला तो अटल जी को बुरा लगेगा : आडवाणी

**आगरा :** यूपी के आगरा में सोमवार को मेरी कहानी-मेरी जुबानी पुस्तक क विमोचन करने एक कार्यक्रम में पहुंचे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी से जब दादरी मामले पर सवाल पूछा गया, तो वे कुछ नहीं बोले, उन्होंने कहा की कुछ बोलूंगा तो अटलजी को अच्छा नहीं लगेगा।

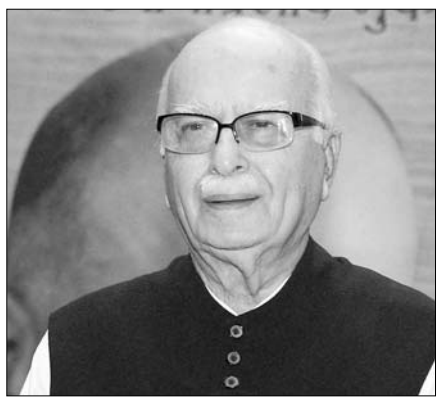

### भाजपा नेताओं ने आजम पर साधा निशाना

केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री रामशंकर कठेरिया और यूपी बीजेपी के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने इस मामले में आजम खान को आड़े हाथों लिया। कठेरिया ने कहा कि जांच इसकी होनी चाहिए कि आजम खान का मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है या नहीं। वहीं, लक्ष्मीकांत ने आजम की तुलना कांग्रेस के नेता दिग्विजय सिंह से की। उन्होंने कहा कि दिग्विजय सिंह की ही तरह आजम भी बयानबाजी कर रहे हैं। गौरतलब है कि उत्तरप्रदेश के गौतमबुद्धनगर जिले के दादरी इलाके में गोमांस खाने की अफवाह के बाद अखलाक नाम के शख्स की हत्या कर दी गई थी। इसके बाद से ही सभी राजनैतिक पार्टियों का बीच सायसी घमासान चल रहा है।

### मोदी सरकार को लिया आड़े हाथों

दादरी में हुई घटना के बारे में आडवाणी से जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मैं दादरी मामले में कुछ नहीं बोलना चाहता। अगर मैं कुछ बोलूंगा तो अटलजी को अच्छा नहीं लगेगा। उन्होंने हालांकि केंद्र में अपनी ही पार्टी की सरकार को भी कठघरे में खड़ा कर दिया। उन्होंने ने कहाकि आजकल जो भी हो रहा है, वह बीजेपी सरकार में कमी को दिखाता है। इस पर गौर करने की जरूरत है। सरकार काम कर रही है, लेकिन आगे और बहुत कुछ करना होगा।

## मनमोहन का लिया पक्ष, मोदी और फड़नवीस पर भड़की शिवसेना

**नई दिल्ली:** एक बार फिर शिवसेना ने मोदी और फड़नवीस सरकार पर हमला बोला है। महाराष्ट्र में भाजपा की सहयोगी पार्टी शिवसेना ने केंद्र और महाराष्ट्र सरकार को निशाने पर लिया है। बढ़ती हुई महंगाई के मुद्दे पर शिवसेना ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आड़े हाथों लेते हुए कहा है कि सरकार के एक साल पूरा होने के बाद भी महंगाई रोकने में नाकाम रही है।

### सामना में लिखा है लेख

शिवसेना ने अपने मुखपत्र सामना में लिखा है कि महंगाई अब जनसामान्य के गले में फांसी का फंदा बन चुकी है। ऐसे में आखिर सरकार क्या कर रही है। भयंकर महंगाई शीर्षक से छपे इस लेख में पार्टी ने लिखा है कि बीजेपी के सत्ता में आने के एक साल बाद भी नई सरकार महंगाई को रोकने में असमर्थ दिख रही है, जबकि पिछली सरकार में महंगाई का ठीकरा मनमोहन सिंह के माथे पर फोड़ना सरल बन चुका था।

### लेख में लिखीं खरी-खरी

सामना में लिखा गया है की नई गुल्ली-डंडे वाली सरकार के कार्यकाल को एक वर्ष पूरा होने को है लेकिन नई सरकार ने जादुई छड़ी घुमाकर अभी तक महंगाई के राक्षस को बोतल में बंद नहीं किया। दाल, प्याज और सब्जियों की कीमत का जिक्र करते हुए पार्टी ने लिखा है कि आम आदमी यह सवाल पूछना चाहता है कि क्या यह सत्ता परिवर्तन महंगाई के राक्षस को अपनी छाती पर सवार करने के लिए किया गया था।

मुखपत्र में आगे लिखा है कि यूपीए के शासनकाल में अर्थवेत्ता मनमोहन सिंह की खिल्ली उड़ाना तमाम लोगों का शौक बन चुका था।

### फड़नवीस सरकार को लिया निशाने पर

शिवसेना ने लेख को जनभावना बताते हुए लिखा है कि दाल समेत खाद्यानों की बढ़ती कीमतों को देखकर मन बेचैन हो रहा है। महाराष्ट्र तो पहले से ही अकाल पीड़ित है। जनता चारों तरफ से अग्निडाह को भोगने के लिए मजबूर है। देवेंद्र फड़नवीस सरकार पर निशाना साधते हुए लेख में लिखा गया है कि महाराष्ट्र सरकार का पहला जन्मदिन आने वाला है। राज्य पर सुख-समृद्धि और सस्ताई के अच्छे दिनों की बरसात हो, इस खातिर ही सत्ता परिवर्तन हुआ था। नई सरकार ने मंत्रालय का जो गृह प्रवेश किया, वह किस मुहूर्त पर हुआ इसका शोध पहले ही दिन से जारी है। सूखा ग्रस्त महाराष्ट्र में सरकार ने आम लोगों पर 1600 करोड़ रूपये का नया कर भार लाद दिया है। आम नौकरी-पेशा और रोज कुआं खोदो, रोज पानी पियो की स्थिति को प्राप्त गरीब की आय और खर्च का संतुलन साधना असंभव हो चुका है।

## बीफ पार्टी करने पर निर्दलीय विधायक की विधानसभा में पिटाई

**श्रीनगर :** जम्मू कश्मीर विधानसभा में भाजपा विधायकों ने निर्दलीय विधायक शेख अब्दुल राशिद की पिटाई कर दी। इस विधायक ने बुधवार को कथित तौर पर अपने घर पर बीफ पार्टी का आयोजन किया था। मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने इस घटना की निंदा करते हुए कहा कि, आप एक विधायक पर हाथ नहीं उठा सकते।

डिप्टी चीफ मिनिस्टर और भाजपा नेता निर्मल सिंह ने कहा कि, जो कुछ हुआ है मैं उसका समर्थन नहीं करता, लेकिन जिस तरह से विधायक ने हॉस्टल पर बीफ पार्टी आयोजित की वह ठीक नहीं था। आपको बता दें कि जम्मू कश्मीर में भाजपा और पीडीपी की गठबंधन की सरकार है।

नेशनल कान्फेंस में अब्दुल्ला ने कहा कि वे भरी दोपहर लोगों को मार रहे हैं और यदि हमने इंजीनियर राशिद को बचाया न होता तो उन्होंने उसे भी घर के भीतर मार डाला होता। पिछले हफ्ते एक मुसलमान को उत्तर प्रदेश के एक गांव में बेरहमी से सिर्फ इसलिए मार डाला गया क्योंकि ऐसी अफवाह उड़ाई गई थी कि उसने एक बछड़े को मार कर उसका मांस खाया था। भाजपा नेता का बेटा इस साजिश में सबसे प्रमुख आरोपियों में से एक है। यह मामला एक देशव्यापी मुद्दा बन गया और इसने बीफ खाये जाने को एक राजनीतिक बहस में बदल दिया। राशिद ने श्रीनगर स्थित एमएलए हॉस्टल पर बुधवार को एक पार्टी आयोजित की थी जिसमें उन्होंने मेहमानों को बीफ सर्व किया था।

राशिद ने साफ किया है कि वह इस पार्टी के माध्यम से सिर्फ यह संदेश देना चाहते थे कि, कोई भी कोर्ट या कानून लोगों को वह खाने से नहीं रोक सकता है जो वह खाना चाहते हैं। आपको बता दें कि जम्मू कश्मीर हाई कोर्ट के उस आदेश के बाद बहुत विवाद हुआ था जिसमें कोर्ट ने बीफ बैन कानून को कड़ाई से लागू करने के लिए कहा था। संप्रदायवादियों का कहना है कि बीफ बैन धार्मिक विचारों पर बहस खड़ी करता है। यह मामला अब सुप्रीम कोर्ट में है।

## साम्प्रदायिक ताकतों को कुचलेंगे चाहे सरकार क्यों न चली जाए : मुलायम

**लखनऊ :** उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव ने दादरी घटना में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तीन नेताओं की साजिश होने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सपा साम्प्रदायिक ताकतों को हर हाल में कुचलेगी, चाहे उनकी सरकार ही क्यों न कुर्बान हो जाए। मुलायम ने लखनऊ में पत्रकारों से कहा कि मुजफ्फरनगर दंगों की साजिश करने वाले तीन नाम दादरी कांड में भी आ रहे। हालांकि उन्होंने इन नामों का खुलासा नहीं किया, पर कहा कि वह जांच करा रहे हैं यदि जांच में इनके नाम की पुष्टि होती है तो वह नामों का खुलासा भी करेंगे और कार्रवाई भी कराएंगे। सपा अध्यक्ष ने कहा कि वह साम्प्रदायिक शक्तियों को कामयाब नहीं होने देंगे, इसके लिए यदि उनकी पार्टी की सरकार भी कुर्बान हो जाए तो चिन्ता नहीं। उन्होंने कहा कि सपा साम्प्रदायिक सद्भाव को सबसे ज्यादा जरूरी मानती है, क्योंकि इसके बगैर विकास सम्भव ही नहीं है। उन्होंने कहा कि देश की सीमाओं की घटनाओं को देखते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द और भी जरूरी हो गया है। दादरी की घटना के लिए जिम्मेदार माने जा रहे तीनों लोगों के नाम की पुष्टि होते ही वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी इन लोगों के खिलाफ कार्रवाई के लिए कहेंगे। उत्तर प्रदेश विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, इसलिए इस तरह की साजिश की जा रही है। अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में अयोध्या की 30 अक्टूबर और दो नवम्बर 1990 की घटना का जिक्र करते हुए सपा अध्यक्ष ने कहा कि केन्द्रीय नेताओं ने उस समय उनका साथ केवल पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत चन्द्रशेखर ने दिया था, हालांकि चन्द्रशेखर की भी कुछ बातें उन्होंने नहीं मानी थी। उन्होंने कहा कि अयोध्या में उन्होंने संविधान की रक्षा की, हालांकि कुछ अप्रिय और कठोर निर्णय लेने पड़े थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति नरम रूख अपनाते हुए मुलायम ने कहा कि जरूरत पड़ी तो वह मोदी से बात करेंगे। सबका साथ सबका विकास का नारा देने वाले प्रधानमंत्री को भी सोचना पड़ेगा। ऐसी घटनाएं विकास में बाधक होती है। सबका साथ नहीं मिलेगा तो विकास कैसे सम्भव है।

## अमेरिका में 16 अलग-अलग कपड़ों में दिखे पीएम : राहुल

**बेगूसराय/शेखपुरा :** कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर एक बार फिर निशाना साधा और कहा कि वह हमेशा 'सूट-बूट' पहने उद्योगपतियों और नौकरशाहों से घिरे रहते हैं और कभी किसानों एवं मजदूरों के साथ नहीं दिखे हैं। राहुल ने कहा, 'हाल की अपनी अमेरिका यात्रा में मोदी अलग-अलग मौकों पर 16 कपड़ों में दिखे।'

राहुल ने बिहार के बेगुसराय और शेखपुरा जिलों में कांग्रेस उम्मीदवारों के समर्थन में आयोजित चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए कहा, 'मोदी को किसानों और मजदूरों की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है क्योंकि वह हमेशा सूट-बूट पहने उद्योगपतियों और नौकरशाहों से घिरे रहते हैं और इन्हीं लोगों की बातें सुनते हैं जैसे सिर्फ उनके पास ही ज्ञान हो।'

कांग्रेस उपाध्यक्ष ने मौजूद जनसमूह से सवाल किया, 'क्या आप लोगों ने कभी फटे-पुराने कपड़े पहने किसानों और मजदूरों के साथ घुलते-मिलते प्रधानमंत्री की तस्वीरें देखी है?' राहुल ने कहा कि मोदी कभी किसानों और मजदूरों से नहीं मिलते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि गरीबों के पास अक्ल नहीं होती है।

उन्होंने मोदी के लिबास पर चुटकी लेते हुए कहा कि मोदी हमेशा अलग-अलग रंग के कपड़े पहने और बड़े लोगों से घिरे दिखते हैं जबकि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हमेशा सफेद कपड़े पहनते हैं और तमाम तरह के लोगों से सहजता से घुलते-मिलते हैं।

राहुल ने काले धन के मुद्दे पर भी मोदी पर हमला किया। मोदी ने वादा किया था कि वह विदेशों में जमा काला धन वापस लाएंगे और हरेक के बैंक खाते में 15 से 20 लाख रुपये जमा करेंगे। कांग्रेस उपाध्यक्ष ने कहा कि अभी तक उनकी मुलाकात किसी ऐसे गरीब आदमी से नहीं हुई है जिसे मोदी सरकार के 16 महीने के दौरान वह धन मिला हो जिसका वादा किया गया था।

राहुल ने 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम पर मोदी की चुटकी लेते हुए कहा कि प्रधानमंत्री अनेक तरह के मुद्दों पर एकतरफा तौर पर अपने विचार रखते हैं, लेकिन उन्हें किसानों और अन्य लोगों के जरूरी मुद्दे सुनने की फुर्सत या रूचि नहीं है।

उन्होंने बिहार को विशेष दर्जा देने के मोदी के चुनावी वादे पर सवाल किया। मोदी ने यह वादा लोकसभा चुनाव के दौरान किया था। उन्होंने युवाओं के लिए रोजगार सृजित करने और किसानों की बदहाली दूर करने के मोदी के वादों पर भी हमले किए। उन्होंने कहा कि एक भी वादा अभी तक पूरा नहीं किया गया।

राहुल ने बिहार में जेडीयू और राजद के साथ धर्मनिरपेक्ष गठबंधन में शामिल होने के कांग्रेस के फैसले की वकालत की और कहा कि सिर्फ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही कोई सरकार बिहार में ईमानदारी से विकास कर सकती है। कांग्रेस उपाध्यक्ष ने मतदाताओं से अपील की कि वे नीतीश कुमार नीत महागठबंधन के पक्ष में मतदान कर उसे सत्ता में लाएं।

लाइव कवर स्टोरी

# स्टेशनों पर बढ़ेंगी सुविधाएं, अब यात्रियों को नहीं होगी परेशानी

रेलवे से सरकार राजस्व के रूप में मोटी राशि वसूल करता है पर स्टेशनों पर मौजूद सुविधाएं यात्रियों के अनुकूल नहीं रहती। दानापुर मंडल के कई स्टेशनों पर यात्रियों के पीने के लिए बेहतर पेयजल भी उपलब्ध नहीं रहता। प्लेटफार्मों पर लगे वाटर फ्रिजर भी खराब रहता है। जिससे गरमी में यात्रियों को गरम पानी पीने के लिए विवश होना पड़ता है। यात्री शेड की भी वहीं हाल है। लोगों को इसके अभाव में जहां धूप में व ठंड में खड़ा होकर ट्रेन पकड़ना पड़ता है तो वहीं, बरसात में यात्री भींग कर ट्रेन पकड़ते हैं। शौचालयों की बात करें तो यहां भी सफाई के नाम पर केवल कोरम पूरा किया जाता है। प्लेटफार्म की लंबाई कम होने से यात्रियों को कई सारी परेशानी उठानी पड़ती है। दानापुर मंडल द्वारा इस बार प्लेटफार्म पर सुविधाएं बढ़ाने से यात्रियों को काफी फायदा होगा।

## प्लेटफार्म पर बढ़ेगी सुविधा

प्लेटफार्मों की लंबाई बढ़ाने के साथ कई अन्य प्रकार की सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा। जिनमें बढ़े हुए प्लेटफार्म को कवर्ड करना, स्टेशन पर यात्रियों के बैठने के लिए बेंचों की संख्या बढ़ाना, वाटर बूथ लगाना शामिल है। पटना और बिहटा को छोड़ बाकि सभी छह स्टेशनों पर फुट ओवरब्रिज भी बनाया जायेगा। इन सभी कार्यों के लिए रेलवे शीघ्र ही टेंडर निकालेगा।

**पटना/बक्सर :** देश में बढ़ती महंगाई से लोगों के भले ही अच्छे दिन नहीं आये हो पर दानापुर मंडल के अंतर्गत आने वाले स्टेशनों के अब अच्छे दिन आने वाले हैं। रेलवे यात्रियों को इन स्टेशनों पर असुविधा को लेकर रेलवे कई कदम उठाने जा रहा है। जिनमें स्टेशनों के प्लेटफार्मों की लंबाई बढ़ाने से लेकर, वाटर बूथ, यात्री शेड और फुट ओवरब्रिज शामिल हैं।

अधिकारिक सूत्रों के अनुसार मंडल के अंतर्गत आठ स्टेशनों को चयन किया गया है। दानापुर मंडल ने इन स्टेशनों का चयन सर्वे करा कर की है। ताकि वास्तविकता का पता चल सके। अधिकारिक सूत्रों के अनुसार पटना और बिहटा स्टेशन पर केवल प्लेटफार्म की लंबाई की बढ़ाई जायेगी, जबकि अन्य छह स्टेशनों पर प्लेटफार्मों की लंबाई के साथ अन्य सुविधाएं भी यात्रियों के लिए उपलब्ध करायी जायेगी। पटना और बिहटा के अलावा बख्तियारपुर, डुमरांव, चौसा, जमनिया और गहमर स्टेशन शामिल हैं।

केवल प्लेटफार्मों की लंबाई बढ़ाने पर रेलवे 15 करोड़ रुपया का बजट रखा है। दानापुर मंडल इन स्टेशनों पर सुविधा बढ़ाने को लेकर शीघ्र ही टेंडर निकालेगा, ताकि शीघ्र की काम शुरू हो सके।

## हादसों पर लगेगी रोक

पटना जक्शन पर 24 व बाकि स्टेशनों पर 22 कोच वाली ट्रेनों के प्लेटफार्म हैं। ऐसे में हमेशा दो कोच प्लेटफार्म से बाहर ही रहते हैं। जिसके कारण यात्रियों को प्लेटफार्म पर न उतर कर सीधे ट्रैक पर उतरना पड़ता है और हादसा का शिकार होना पड़ता है। दरअसल, ट्रेन के अंतिम दो कोच सामान्य यात्रियों के लिए है। जितनी समस्या यात्रियों को उतरने में होती है उससे कहीं ज्यादा ट्रेन पकड़ने के लिए होती है। यदि कोई यात्री परिवार के साथ हो तो समस्या और भी बढ़ जाती है। इतना ही नहीं यात्री बताते हैं कि कई बार फर्जी टीइटी भी यात्रियों से अवैध वसूली कर अंतिम दो बोगियों के पायदान से उतर बाहर चले जाते हैं। दानापुर मंडल ने छोटी लंबाई वाले प्लेटफार्म को चिह्नित कर इनकी लंबाई बढ़ाने के फैसले से इस पर रोक लगेगी। यात्रियों को को भी ट्रेन पकड़ने में कोई समस्या नहीं हो।

## बक्सर से रेलवे को मिलता है 35 करोड़ से ज्यादा का राजस्व

**बक्सर** रेलवे स्टेशन पटना के बाद सबसे ज्यादा राजस्व देना वाले स्टेशनों में शामिल है। हर दिन करीब 12 हजार यात्री बक्सर स्टेशन से विभिन्न जगहों के लिए ट्रेन पकड़ते हैं। यहां से हर साल करीब 35 करोड़ 18 लाख 79 हजार 164 रुपया सालाना राजस्व आता है। पर यहां सुविधाओं का टोटा है। तीन प्लेटफार्म वाले बक्सर स्टेशन पर न तो बेहतर साफ-सफाई होती है और न ही पेयजल की समुचित व्यवस्था है। गरमी के दिनों में यहां शीतल पेय उपलब्ध नहीं हो पाता। जबकि शीतल पेय के लिए प्लेटफार्म दो पर एक फ्रिजर भी लगाया गया है। प्लेटफार्मों पर शेड का भी अभाव है। जिसके कारण यात्रियों को गरमी में जहां तपती धूप में खड़ा होकर ट्रेन का इंतजार करना पड़ता है तो वहीं, ठंड में शीत और बारिश में भींग कर लोग ट्रेन पकड़ते हैं। लोगों की मांग पर स्टेशन के पश्चिमी छोर की ओर एक लाखों की लागत से फुट

ओवरब्रिज बनाया गया, जिसका उद्घाटन रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा ने किया था। लेकिन अभी तक इसे कवर्ड नहीं किया गया। ऐसे में धूप और बारिश के दिनों में लोग इससे जाना पसंद नहीं करते। यहां अज्ञात शवों के लिए कोई शव गृह नहीं बन पाया। ऐसे में शवों को उनके परिजनों की आस में रेलवे अस्पताल में ही रखा जाता है, जो बदबू देने लगता है। शव गृह को बनाने के लिए कोई पहल भी नहीं हो पायी है। डुमरांव और चौसा रेलवे स्टेशन की स्थिति भी खराब है। हालांकि यहां से सभी ट्रेने नहीं है। ऐसे में इस क्षेत्र के भी लोग बक्सर रेलवे स्टेशन ही ट्रेन पकड़ने के लिए आते हैं। उल्लेखनीय है कि डुमरांव स्टेशन से रेलवे को सलाना करीब चार करोड़ राजस्व मिलता है। लेकिन, यहां भी पेयजल, शौचालय, शेड की समस्या से यात्री परेशान रहते हैं। इस बार डुमरांव और चौसा स्टेशन पर सुविधा बहाल होगी, इसके लिए इन्हें चयनियत कर लिया गया है।

### क्या कहते हैं डीआरएम

डीआरएम आरके झा कहते हैं कि रेलवे बजट में 26 कोच की ट्रेन चलाने का निर्णय हुआ है। जिसके कारण दानापुर मंडल के आठ प्लेटफार्मों की लंबाई जायेगी। इसके लिए रेलवे विभाग शीघ्र ही टेंडर निकालेगा और काम शुरू करायेगा। इसके अलावा अन्य छह स्टेशनों पर सुविधाएं बढ़ाई जायेगी।

# 12 से 17 अक्तूबर तक स्वीप कार्यक्रम का आयोजन

**बक्सर:** विधानसभा चुनाव में वोट प्रतिशत बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन लगातार कार्यक्रम चला रहा है। जिला पदाधिकारी सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी रमण कुमार ने समीक्षा बैठक कर स्वीप के द्वितीय और तृतीय चरण के कार्यक्रम आयोजन को लेकर शिक्षा विभाग को कई दिशा निर्देश दिये हैं। कार्यक्रम का आयोजन 12 से 17 अक्तूबर तक होगा। जिसमें विभिन्न विद्यालयों के बच्चे भाग लेंगे। 12 अक्तूबर को बक्सर जिले के सभी मध्य विद्यालय/माध्यमिक विद्यालय और उच्च विद्यालय अपने यहां नैतिक मतदान पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन सुबह दस से दो बजे तक करेंगे। जिसमें कक्षा 8, 9 एवं 10 के छात्र/छात्रा भाग लेंगे। 14 अक्तूबर को जिले के सभी उच्च विद्यालयों में आदर्श मतदान केन्द्र विषय पर पेटिंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन होगा। जबकि इसी तिथि को बक्सर नगर भवन में जिला स्तरीय प्रेरणा महोत्सव (नैतिक मतदान पर भाषण प्रतियोगिता) का कार्यक्रम होगा, जिसमें प्रत्येक प्रखंड से दो छात्र और दो छात्रा भाग लेंगे। दोनों ही कार्यक्रम सुबह ग्यारह से दोपहर एक बजे तक होगा। 17 अक्तूबर को आदर्श मतदान केन्द्र पर पेटिंग -सह- स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन नगर भवन, बक्सर में सुबह ग्यारह

से एक के बीच होगा। इसी तिथि को प्रेरणा महोत्सव के तहत नगर भवन बक्सर में भारत के आम चुनाव एवं भारतीय प्रजातंत्र पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन होगा। इन दोनों कार्यक्रमों में सभी प्रखण्ड स्तरीय टीम /एम0पी0 हाई स्कूल के छात्र/छात्रा एवं नेहरू हाई स्कूल के छात्र/छात्रा भाग लेंगे।

तकनीकी ज्ञान से समृद्ध होगा भारत Est. 2010
विद्यादान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट
VIDYADAAN
अरियांव, अनुमंडल-डुमरांव, जिला-बक्सर (बिहार)
(ए.आई.सी.टी.ई. द्वारा स्वीकृत तथा आर्यभट्ट विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)

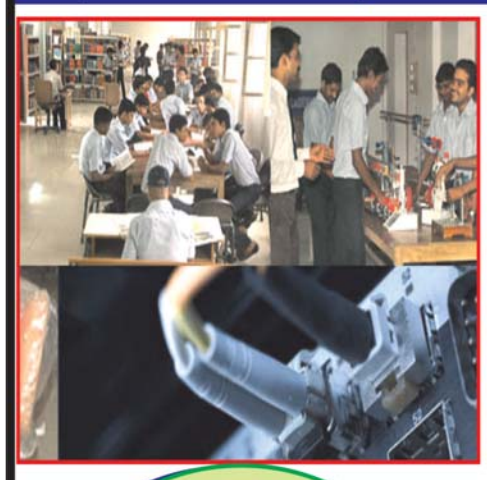

विशेषताएं
- वैज्ञानिकों एवं आई.आई.टी इंजीनियर्स द्वारा स्थापित B.Tech कोर्स की उत्कृष्ट तकनीकी शिक्षा।
- आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय से संबंद्ध बिहार का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज।
- प्लेसमेंट की व्यवस्था एवं तीसरे वर्ष से ही इंडस्ट्री में प्रोजेक्ट पर काम करने का अवसर।

संस्थान द्वारा प्रतिभावान छात्र/छात्राओं के लिए 15% से 90% तक छात्रवृति एवं सरकार द्वारा SC/ST/OBC के लिए 100% तक छात्रवृति

Branches : ECE, CSE, EEE, IT
2015-16, B.Tech Courses में नामांकन जारी
संपर्क सूत्र :
- संस्थान - 9097432411, 9507411444
- बक्सर: ओशो ऑफसेट (डीएम आवास के सामने, चरित्रवन)- 8863009650, 8002301943
- आरा : परमार कॉम्पलेक्स, पूवी रमना मैदान- 8409256522, 8002301943
- मुजफ्फरपुर : डॉ पी. एन. राय लेन, अपोजिट उमा मार्केट मोतीझील - 9534897559, 9835402060, 8409156797

Since - 2004
Join No.1 Institute
ENGLISH
(Spoken/ Grammar/ Competitive/ 10+2)
By- Bimal Sir
ZENITH
Visit on us :- fb/zenitheducom
Gurudas Mathia,
Itarhi Road, Buxar
Call :-920 452 1029

# नहीं मिल रहा घर आने के लिए परदेशियों को कन्फर्म टिकट

## पूजा स्पेशल ट्रेन में भी पहले से ही फुल हो गयी हैं सभी श्रेणियों की सीटें

**सीवान :** पर्व त्योहारों के शुरू होने के साथ ही दूसरे प्रांतों पर रहने वाले परदेशी परिवार सहित अपने घर को लौटना चाहते हैं, लेकिन दूसरे प्रांतों से आने वाली सभी प्रमुख ट्रेनों पर आज ही से कन्फर्म बर्थ उपलब्ध नहीं होने से उनकी परेशानी बढ़ गयी है।

बिहार के लोक आस्था के पर्व छठ में प्राय: सभी परेदशी अपने घर को लौटना चाहते हैं, लेकिन कन्फर्म बर्थ नहीं मिलने से उनकी परेशानी बढ़ गयी है। मुंबई, गुजरात, राजस्थान, नयी दिल्ली व पंजाब से आने वालीं प्राय: सभी प्रमुख ट्रेनों में 17 नवंबर छठ पर्व के पहले कन्फर्म बर्थ उपलब्ध नहीं है। बहुत से लोगों ने 90 दिनों पूर्व आरक्षण कराने गये, तो उन्हें भी वेटिंग टिकट हाथ लगा। लेकिन उन्हें उम्मीद है कि उनका बर्थ कन्फर्म हो जायेगा। नयी दिल्ली से आनेवाली वैशाली, बिहार संपर्क क्रंति, आम्रपाली, लिच्छवी, गरीब रथ, शहीद, न्यूजलपाई गुड़ी एक्सप्रेस,अवध-असम एक्सप्रेस में तो एक तरह से नो रूम की स्थिति है।

### यात्रियों को नहीं मिल पाता है तत्काल टिकट

त्योहारों के शुरू होते ही रेल के तत्काल टिकट की मांग बढ़ जाती है। इ टिकट बनाने वाले बिचौलिए भी अनधिकृत रूप से प्राइवेट आइडी से तत्काल टिकट का धंधा करने लगते हैं। पर्व त्योहारों में इनकी मांग अधिक हो जाती है। ये अंकित मूल्य से करीब दो गुना अधिक रुपये लेकर यात्रियों को अवैध रूप से टिकट उपलब्ध कराते हैं। तत्काल टिकट पर बिचौलियों का कब्जा होने से यात्रियों को काउंटर से तत्काल टिकट नहीं मिल पाता है। काउंटर खुलने के साथ ही तत्काल टिकट वेंटिंग ही निकलता है। कुछ ऐसे भी लोग सक्रिय हैं जो पहले से दूसरे व्यक्तियों के नाम पर साधारण कन्फर्म टिकट बनवा कर रखते हैं तथा जरूरतमंद यात्री को ऊंचे दामों पर टिकट उपलब्ध कराते हैं। हालांकि आरपीएफ द्वारा समय-समय पर अभियान चला कर इन लोगों को पकड़ने के लिए छापेमारी की जाती है, लेकिन इनका धंधा पूर्ण रूप से बंद नहीं हो पाता है।

### ट्रेनों की आरक्षण स्थिति

| ट्रेन संख्या | ट्रेन का नाम | कब तक नहीं है कन्फर्म टिकट |
|---|---|---|
| 15707 | आम्रपाली एक्स. | 18 दिसंबर |
| 14005 | लिच्छवी एक्स. | 03 दिसंबर |
| 12565 | बिहार संपर्क क्रांति | 30 दिसंबर |
| 12553 | वैशाली सुपर फॉस्ट | 30 दिसंबर |
| 14673 | शहीद एक्सप्रेस | 14 दिसंबर |
| 19602 | न्यू जलपाई गुडी एक्स. | 04 जनवरी |
| 15909 | अवध-असम एक्स. | 19 दिसंबर |
| 11060 | गोदान एक्सप्रेस | 17 दिसंबर |
| 151107 | छपरा-मथुरा एक्स. | 12 दिसंबर |

### क्या कहते हैं अधिकारी

रेलयात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो, इसका ध्यान रखा जाता है। आरक्षण काउंटर पर किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं हो, इसके लिए सीसीटीवी कैमरा लगा है। आरपीएफ द्वारा समय-समय पर अभियान चला कर टिकट का अवैध रूप से कारोबार करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाती है।

# टीबी मरीजों की जिंदगी से खेल रहे हैं प्राइवेट डॉक्टर

- धड़ल्ले से हो रही है प्रतिबंधित जांच एलाइजा फॉर टीबी
- जांच के बाद मरीजों को टीबी की दवा खाने की दे रहे सलाह

**सीवान :** जिले में प्राइवेट डॉक्टर टीबी के मरीजों की जिंदगी खुलआम खिलवाड़ कर रहे हैं। इस सबंध में यक्ष्मा विभाग द्वारा प्राइवेट डॉक्टरों को आरएनटीसीपी कार्यक्रम की जानकारी नहीं दिये जाने से टीबी के मरीजों की संख्या में कमी नहीं आ रही है।

सरकार ने टीबी उन्मूलन के लिए जो डॉट प्रोग्राम निकाला, वह सबसे कारगर है। लेकिन विभाग ने प्राइवेट डॉक्टरों को ऐसा निर्देश जारी नहीं किया है कि टीबी के मरीजों को डॉट सेंटर को रेफर करें। सामान्य मरीज, जिन्हें बहुत दिनों से खांसी की शिकायत रहती है, प्राइवेट डॉक्टर मरीजों को प्रतिबंधित जांच एलाइजा फॉर टीबी कराने की सलाह देते हैं।जांच रिर्पोट पॉजिटिव आने पर डॉक्टर टीबी की दवा खाने की भी सलाह देते हैं। करीब तीन साल पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन की अनुशंसा पर ड्रग्स कंट्रोलर ऑफ इंडिया ने एलाइजा फॉर टीबी की जांच को प्रतिबंघित कर दिया था। स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस जांच के आधार पर टीबी के मरीजों को टीबी की दवा नहीं लिखने की सलाह डॉक्टरों की दी।

विशेषज्ञों का मानना था कि यह जांच कारगर नहीं है। आश्चर्य की बात यह है कि यह प्रतिबंधित जांच सीवान के कई पुराने प्रमुख चिकित्सक कराते हैं और मरीजों को टीबी की दवा खाने की सलाह भी देते हैं। प्रभारी यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ एमआर रंजन ने बताया कि शीघ्र ही प्राइवेट डॉक्टरों की एक मीटिंग बुला कर आरएनटीसीपी प्रोग्राम के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी दी जायेगी। उन्होंने बताया कि कुछ ही प्राइवट डॉक्टर टीबी के मरीजों को डॉट सेंटर रेफर करते हैं।

# रावण दहन को लेकर प्रशासन चौकस

- गांधी मैदान में भरपुर होगी रोशनी और पुलिस संभालेगी भीड़

**पटना :** पिछले साल के दशहरा हादसे से सबक लेते हुए जिला प्रशासन और पुलिस इसबार कोई रिस्क नहीं लेगी। गांधी मैदान इलाके के कोने-कोने में रोशनी और हर प्वाइंट पर भीड़ नियंत्रित करने के लिए सिपाही की तैनाती होगी। दोनों जिम्मेवारी प्रशासन व पुलिस ने बांट ली है। समन्वय के लिए संयुक्त बैठकों का दौर शुरू हो चुका है। डीएम-एसएसपी तैयारियों से संबंधित हर बिंदू पर मंथन कर रहे हैं। बैठकों का यह दौर दशहरा तक जारी रहेगा। इसमें रोजाना सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा होगी। दशहरा हादसे की जांच में भगदड़ का कारण पर्याप्त रोशनी की कमी तथा मैदान के सभी गेट बंद होने को पाया गया था।

### वीवीआईपी नहीं, भीड़ के लिए रहेगी व्यवस्था

सारी व्यवस्था भीड़ को ध्यान में रखकर होगी, न कि वीवीआईपी के लिए। 2014 में सारी व्यवस्था चंद लोगों को ध्यान में रखकर किए जाने के कारण लोमहर्षक घटना हुई थी। सुरक्षा तैयारी की जबरदस्त अनदेखी की बात सामने आई थी। एसएसपी विकास वैभव ने कहा कि हमारी प्राथमिकता हर इलाके को रोशन करने की होगी जिसके लिए जिला प्रशासन से चर्चा हो रही है। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए हर प्वाइंट पर फोर्स तैनात होगी। सीसीटीवी कैमरे लगाकर भीड़ पर नजर रखेंगे। शरारती तत्वों को सादे लिबास में मौजूद पुलिसवाले काबू करेंगे।

### मौजूद रहेंगे सभी अधिकारी

सभी अधिकारियों को गांधी मैदान में सुरक्षा व्यवस्था के लिए मौजूद रहना होगा। एसएसपी विकास वैभव ने बताया कि जब शहर की पांच लाख आबादी एक मैदान में हो तो जाहिर तौर पर सुरक्षा का फोकस अन्य जगहों की अपेक्षा वहीं होगा।

### पिछली गलतियां, इस बार चुनौती

पिछली गलतियों को इस बार चुनौती के रूप में लिया जा रहा है। पिछले साल की व्यवस्था की सूक्ष्मता से जांच कर रणनीति बन रही है। जिला प्रशासन और पुलिस की बैठक में हादसे से संबंधित हर जानकारी को साझा किया गया है। इसी के आधार पर तैयारी हो रही है।

### फ्लैश बैक

पिछले साल रावण दहन को लेकर गांधी मैदान में काफी भीड़ थी। गांधी मैंदान से बहार निकलने वाले गेट रोशनी के अभाव में एका-एक भगदड़ मच गयी जिसके कारण लोग एक पर एक चढ़कर बाहर निकलने लगे और मौत के शिकार हो गये। इस भगदड़ में 33 लोगों ने जान गंवायी थी। दरअसल वीआइपी लोगों को गेट से बाहर निकालने के चक्कर में पुलिस का ध्यान बंट गया था।

हादसे के बाद तत्कालीन डीएम और एसएसपी का तबादला कर दिया गया था। हादसे से सबक लेते हुए इस साल इन दो बिंदुओं पर प्रशासन-पुलिस की खास नजर है।

# होटल में बम के अफवाह से अफरा-तफरी

**पटना :** पटना जंक्शन के पास स्थित होटल सिटी सेंटर के फोन पर सात अक्तूबर को होटल में बम होने की सूचना से पूरा होटल और आस-पास के इलाके में दहशत का माहौल हो गया था। फोन से यह सूचना रिसेप्शन पर बैठे रोहित को मिली। जिसने फौरन इसकी सूचना होटल के अन्य कर्मचारियों, मालिक रविरंजन सिंह और पुलिस को दियौ। 10 मिनट के अंदर पटना पुलिस होटल को चारों ओर से घेर ली। होटल को पूरी तरह खाली करावा गया और इसके बाद करीब 100 पुलिसकर्मियों ने चप्पे-चप्पे को खंगाल डाला। पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद पुलिस ने होटल को सेफ घोषित किया। बताया जाता है कि फोन पर ऐसी अफवाह दूसरी बार मिली है। सितंबर में भी पटना पुलिस के डायल-100 पर तीन बार फोन कर सीरियल ब्लास्ट की धमकी दी गई थी। इसके बाद पटना जंक्शन सहित महावीर मंदिर इलाके को पूरी तरह से खंगाला गया था। जिन तीन नंबरों से धमकी दी गई थी, उनमें एक कंकड़बाग निवासी विकास गिरि के नाम से जारी है। उसकी 12 वर्षीया भतीजी ने मजे के लिए फोन किया था। लेकिन, दो अन्य नंबर त्रिपुरा और आंध्रप्रदेश के मिले। ये दोनों नंबर एक ही व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किए गए थे।

# एसएससी परीक्षा पेपर लीक मामले में पकड़ा गया मुजफ्फरपुर से बैंक क्लर्क

**पटना/मुजफ्फरपुर :** एसएससी की सिपाही (जीडी) भर्ती परीक्षा का प्रश्न पत्र लीक होने के मामले में मुजफ्फरपुर से बैंक क्लर्क संतोष कुमार को हिरासत में लिया गया। पटना पुलिस ने जिन 11 आरोपियों को इस फर्जीवाड़े में गिरफ्तार किया था उसके सरगना इंजीनियरिंग छात्र अमित कुमार की स्वीकारोक्ति के बाद संतोष को हिरासत में लिया गया। संतोष ने कई अहम जानकारियां दी हैं। उसके लैपटॉप, दो मोबाइल फोन व बैग को जब्त कर पूछताछ की जा रही है।

संतोष ने जो खुलासे किए उसके आधार पर पुलिस ने पटना, हाजीपुर सहित कई जिलों में छापेमारी की। वह पटना का रहने वाला है। रोज पटना से मुजफ्फरपुर आता-जाता है। पूछताछ के लिए उसे सदर थाने में रखा गया है। संतोष गिरोह का वित्तीय सलाहकार है। मुजफ्फरपुर के एसएसपी रंजीत कुमार मिश्र को सूचना मिली कि रविवार को हुई इस परीक्षा में प्रश्न पत्र आउट करने में एक बैंक क्लर्क भी शामिल है। उसकी तैनाती मुजफ्फरपुर में है। बैंक क्लर्क की तलाश में नगर डीएसपी ने चार घंटे तक यूको बैंक की कई शाखाओं में जाकर पूछताछ की। लेकिन कुछ पता नहीं चला। मुख्य ब्रांच से मिली जानकारी के बाद एलएन मिश्रा कैंपस में स्थित यूको बैंक की शाखा से संतोष को पकड़ा गया।

### पूरे देश में फैला है नेटवर्क

जांच के क्रम में पुलिस को पता चला है कि गिरोह का नेटवर्क बिहार के साथ-साथ पूरे देश में फैला हुआ है। गिरोह से बैंक कर्मी, शिक्षक, पुलिस और छात्रों के जुड़े होने के संकेत मिले हैं। पटना पुलिस ने भागलपुर, गया, दरभंगा, सीवान सहित कई जिलों की पुलिस से संपर्क कर मामले की जांच में सहयोग के लिए कहा है। दरअसल इस गिरोह के सदस्य अलग-अलग शहरों में फैले हैं। गिरोह न केवल परीक्षा में सेटिंग करता है बल्कि राज्य के बाहर के युवाओं के लिए कई अहम दस्तावेज बनाते हैं।

### 11 आरोपी भेजे गए जेल

इधर गर्दनीबाग पुलिस ने गिरफ्तार सभी 11 आरोपियों को जेल भेज दिया। पुलिस ने गिरोह का भंडाफोड़ कर एनआईटी छात्र सहित 11 शातिरों को गिरफ्तार किया था। इनके खिलाफ फर्जीवाड़े का मामला दर्ज हुआ है।

# दुनिया के असमय काल कलवित होने वाले लोगों के लिए गया में पिंडदान

**गया :** गया में केवल खून के रिश्ते रखने वाले ही पिंडदान करते बल्कि मानवता को जिंदा रखने वाले भी पिंडदान करते हैं। यह सिलसिला लगातार 15 वर्षों से चल रहा है। सामूहिक श्राद्ध के आयोजन की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष का कार्यक्रम यहां रखा गया है। इस बार पाकिस्तान में आतंकियों द्वारा मारे गये बच्चों, दिसंबर 2014 में इंडोनेशिया से सिंगापुर जा रहे एयर एशिया विमान हादसे में मारे गये लोगों, पेरिस में इस वर्ष जनवरी में हुए आतंकी हमले और इसी वर्ष अप्रैल महीने में नेपाल तथा भारत में आये भूकंप के शिकार हुए लोगों के लिए भी पिंडदान किया जायेगा। इनके अलावे दिसंबर 2014 में छत्तीसगढ़ के सुकमा में उग्रवादी हमले में मारे गये जवानों के साथ ही जम्मू कश्मीर में एक आतंकी हमले में शहीद हुए गयावासी लेफ्टिनेंट कर्नल संकल्प कुमार को भी ऊपरोक्त आयोजन में याद किया जायेगा। इनके साथ-साथ पिछले साल पटना में विजयदशमी के आयोजन और इस वर्ष जनवरी में पुष्कर महोत्सव में हुई भगदड़ में जान गंवाने वाले तमाम लोगों और विगत अप्रैल महीने में पूर्णिया में आये तूफान में जान गंवाने वालों को भी स्मरण करते हुए पिंडदान होगा। उल्लेखनीय है कि विष्णुपद के निकट देवघाट पर दोपहर में होनेवाला यह आयोजन श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य के दिशा-निर्देश के अनुरूप संपन्न होगा।

वर्ष 2001 से ही हर साल मातृ नवमी पर होनेवाले इस कार्यक्रम का आयोजन बाबू सुरेश नारायण मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पहले इस कार्यक्रम का आयोजन समाजसेवी पत्रकार सुरेश नारायण व्यक्तिगत तौर पर स्वयं किया करते थे। उनके निधन के बाद पिछले वर्ष से यह आयोजन उनके पुत्र चंदन सिंह की देखरेख में ऊपरोक्त ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है।

चंदन सिंह के मुताबिक, इस बार भी उनकी संस्था के तत्वावधान में बड़ी संख्या में देश-दुनिया के उन तमाम लोगों के लिए पिंडदान किया जायेगा, जो असमय काल-कवलित हो गये। उन तमाम दूसरे जाने-अनजाने लोगों के लिए भी, जिनके लिए इस गया कर्मकांड को संपन्न करनेवाला कोई नहीं है।

# मुजफ्फरपुर की बेटी को मिला अमेरिका में द स्काउट गोल्ड का अवार्ड

**पटना/मुजफ्फरपुर :** बिहार के मुजफ्फरपुर की बेटी श्रेया ठाकुर को अमेरिका के पेंसिलवेनिया में स्काउट का सबसे प्रतिष्ठित द गर्ल स्काउट गोल्ड अवार्ड मिला है। वह भारतीय मूल की अमेरिकी निवासी है। मुजफ्फरपुर के बीबीगंज स्थित गांधी नगर की रहने वाली है। श्रेया ठाकुर अमेरिका में स्नातक फाइनल इयर की छात्रा है। उसे यह अवार्ड पिछड़े इलाकों के बच्चों में विपरीत परिस्थितियों में जीवन रक्षा के गुर सिखाने के लिए मिला है।

अमेरिका में पढ़ाई कर रही श्रेया ने समाजसेवा व जागरूकता अभियान में योगदान देकर अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। स्काउट के अपने प्रोजेक्ट के लिए उसने जन्मभूमि को चुना। इस साल जून में वह बिहार पहुंची थी और यहां समस्तीपुर और मुजफ्फरपुर के गांवों में बच्चों के बीच जागरूकता फैलाई। इसके लिए उसे दिल्ली में थोड़ी हिन्दी भी सिखनी पड़ी।

मुजफ्फरपुर में उसने बरूराज के मनपुरा गांव में जाकर बच्चों को प्राथमिक उपचार के लिए जागरूक किया। अमेरिकी माहौल में पली-बढ़ी श्रेया ने जेठ की दोपहरी में समस्तीपुर के कुबौली के एक दर्जन से अधिक स्कूलों में बच्चों के बीच प्राथमिक उपचार व जीवन रक्षा का गुर सिखाया। इसके तहत उसने बच्चों को दिल का सामान्य दौरा पड़ने, अधिक खून बहाव को रोकने, डायरिया, डिहाइड्रेशन से बचाव व इनमें अपनाए जाने वाले प्राथमिक उपचार की भी जानकारी दी।

### इन स्कूलों में चलाया अभियान

कस्तूरबा गांधी मध्य विद्यालय, कस्तूरबा गांधी बालिका उच्च विद्यालय, मध्य विद्यालय कुबौली राम, मध्य विद्यालय वैनी, राम प्रताप हाई स्कूल कुबौली राम, सर्वोदय हाई स्कूल वैनी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, बंगरा, मध्य विद्यालय मनपुरा शामिल है।

### दादी और नानी का प्यार भी खींच कर लाया बिहार

17 वर्षीय श्रेया अमेरिका में साइंस ओलंपियाड, यूनाइटेड नेशन साइंस फेयर, नेशनल ऑनर सोसाइटी आदि प्रतियोगिताओं में भी कई मेडल जीत चुकी है। श्रेया और पेंसिलवेनिया के उत्तर पूर्व इलाके के प्रतिभागियों को जून 2016 में स्पेशल सेंटेलियन गोल्ड अवार्ड दिया जाएगा। जून 2016 में गोल्ड मेडल प्रतिभागियों को स्पेशल सेंटेलियन गोल्ड अवार्ड मिलेगा। श्रेया दिसंबर में मुजफ्फरपुर आएगी। श्रेया का दादी इंदिरा देवी और नानी प्रमिला सिन्हा से गहरा जुड़ाव रहा है। इसी कारण वह बिहार पहुंची।

# 32 सीटों पर 458 उम्मीदवार दिखाएंगे दम

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** बिहार विधानसभा के दूसरे चरण के लिए 458 प्रत्याशी मैदान में हैं। राज्य निर्वाचन आयोग के मुताबिक दूसरे चरण के लिए कुल 471 उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया था, जिसमें से 13 उम्मीदवारों ने अपना नाम वापस ले लिया। दूसरे चरण में बिहार विधानसभा की 32 सीटों के लिए 16 अक्टूबर को मतदान होना है। दूसरे चरण में मतदाताओं की कुल संख्या 85, 86, 704 है।दूसरे चरण में बिहार के जिन 6 जिलों में वोटिंग होनी है, वे कैमूर, रोहतास, जहानाबाद, अरवल गया और औरंगाबाद हैं। चुनाव आयोग के मुताबिक सबसे ज्यादा 22 प्रत्याशी अरवल के कुर्था विधानसभा सीट से खड़े हैं, जबकि सबसे कम सात उम्मीदवार गया के इमामगंज विधानसभा क्षेत्र से हैं। गोह विधानसभा सीट से 21 और औरंगाबाद तथा भभुआ से 20-20 उम्मीदवार मैदान में हैं। इस चरण में हम के अध्यक्ष जीतनराम मांझी और बिहार विधानसभा अध्यक्ष उदय नारायण चौधरी समेत कई दिग्गजों की किस्मत दांव पर है। मांझी इस बार दो जगह से चुनाव में उतरे हैं मखदुमपुर और इमामगंज से जबकि उनके पुत्र संतोष मांझी कुटुम्बा से चुनाव लड़ रहे हैं। इमामगंज सीट पर मांझी के सामने उदय नारायण चौधरी हैं।

## दूसरा चरण : 16 अक्तूबर, दिन शुक्रवार

**6 जिले, 32 विधानसभा सीट**
**कुल उम्मीदवार**- 458
**कुल मतदाता**- 85,86,704
**जिले**- कैमूर, रोहतास, जहानाबाद, अरवल गया और औरंगाबाद
**विधानसभा क्षेत्र**
203. रामगढ, 204. मोहनिया(एससी), 205. भभुआ, 206. चैनपुर, 207. चेनारी (एससी), 208. सासाराम, 209. करगहर, 210. दिनारा, 211. नोखा, 212. डिहरी, 213. काराकाट, 214. अरवल, 215. कुर्था, 216. जहानाबाद, 217. घोसी, 218. मखदमपुर (एससी), 219. गोह, 220. ओबरा, 221. नवीनगर, 222. कुटुम्बा (एससी), 223. औरंगाबाद, 224. रफीगंज, 225. गुरुआ, 226. शेरघाटी, 227. इमामगंज (एससी), 228. बाराचट्टी (एससी), 229. बोधगया (एससी), 230. गया टाउन, 231. टिकारी, 232. बेलागंज, 233. अतरी, 234. वजीरगंज.

# त्रिकोणीय संघर्ष के चलते कैमूर में कड़ा मुकाबला

## 2010 में भाजपा, जदयू, राजद और लोजपा के खाते में आई थी एक-एक सीट

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** दूसरे चरण में जिन विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होना है, उनमें कैमूर जिले की चार विधानसभा सीटें रामगढ़, चैनपुर, मोहनियां और भभुआ भी हैं। लोगों के साथ साथ राजनीतिक विश्लेषकों की भी निगाहें इन चारों विधानसभा सीटों पर लगी हुई है। नजर इसलिए भी लगी हुई है कि कैमूर जिले ने पिछले विधानसभा चुनाव में किसी एक पार्टी की झोली में चारों सीटें नहीं डाली, बल्कि चारों प्रमुख पार्टियों जदयू, भाजपा, राजद और लोजपा के खाते में एक एक सीट गई।

पिछले विधानसभा चुनाव के सीटवार परिणाम देखें तो भभुआ से लोजपा के प्रमोद कुमार सिंह जीते थे, जबकि दूसरे स्थान पर भाजपा के आनंद भूषण पांडेय थे। प्रमोद कुमार सिंह बाद में जदयू में चले गए। चैनपुर में भाजपा ने बाजी मारी थी। भाजपा के बृज किशोर बिंद ने बसपा के डॉ. अजय आलोक को 13 हजार से ज्यादा वोट से हराया था। मोहनियां से जदयू के छेदी पासवान ने राजद के निरंजन राम को मात दी थी।

2014 के आम चुनाव में छेदी पासवान ने भाजपा का दामन थामा और संसद में पहुंच गए। उनके जाने के बाद हुए उपचुनाव में निरंजन राम ने भाजपा के टिकट पर इस सीट से जीत हासिल की। कैमूर जिले की चौथी सीट रामगढ़ पर राजद का दबदबा रहा है। यहां से राजद के जगदानंद सिंह लगातार चुनाव जीतते रहे हैं। 2009 के लोकसभा चुनाव में बक्सर सीट से सांसद बन जाने के बाद राजद ने अंबिका सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया और 2010 में अंबिका सिंह ने निर्दलीय प्रत्याशी अशोक कुमार सिंह को मात दी थी। अगर इस चुनाव में कैमूर की इन चारों विधानसभाओं के हालात की बात करें तो इसबार समीकरण पिछली बार से अलग हैं, जिसके चलते मुकाबला भी काफी कड़ा है।

कैमूर की सीटों पर बसपा का भी अच्छा-खासा प्रभाव है जिसके चलते यहां त्रिकोणीय संघर्ष भी नजर आ रहा है। हालांकि बिहार के अन्य विधानसभा क्षेत्रों की तरह यहां भी मुख्य मुकाबला महागठबंधन और राजग के बीच ही है, किंतु यहां की चारों सीटों में से कौन किसपर जीतेगा कहना मुश्किल है। बसपा ने पूरे दमखम के साथ ताल ठोककर मुकाबले को और दिलचस्प बना दिया है। अगर सीटवार प्रमुख उम्मीदवारों की बात करें तो रामगढ़ से राजद के अंबिका ठाकुर और भाजपा के अशोक सिंह आमने सामने हैं, जबकि बसपा से प्रमोद कुमार सिंह मैदान में हैं।

चैनपुर विधानसभा से जदयू के महाबलि सिंह, भाजपा के बृज किशोर सिंह और बसपा से जमा खां मैदान में हैं। मोहनियां से भाजपा के निरंजन राम और कांग्रेस के संजय पासी के अलावा निर्दलीय उम्मीदवार चंद्रशेखर पासवान भी मुकाबले को रोचक बना रहे हैं। जबकि भभुआ से प्रमुख उम्मीदवारों के रूप में भाजपा के आनंद भूषण पांडेय, जदयू के प्रमोद सिंह और बसपा भरत सिंह मैदान में हैं। देखना है 16 अक्टूबर को मतदाता किसके पक्ष में वोट करके उसे अपना प्रतिनिधि चुनते हैं।

## चारों विधानसभा पर एक नजर

### भभुआ
**कुल मतदाता**- 206452
**पुरुष मतदाता**- 110187
**महिला मतदाता**-96265
**पिछले विधानसभा में मतदान का प्रतिशत**- 57.60
**पिछले पांच विधानसभा की स्थिति**
2010 डॉ. प्रमोद कुमार सिंह लोजपा
2005 (अक्टूबर) राम चंद्रा सिंह यादव बीएसपी
2005 (फरवरी) डॉ. प्रमोद कुमार सिंह आरजेडी
2000 प्रमोद सिंह आरजेडी
1995 राम लाल सिंह सीपीआई
1990 विजय शंकर पांडेय कांग्रेस

### चैनपुर
**कुल मतदाता**- 235057
**पुरुष मतदाता**- 124904
**महिला मतदाता**-110153
**पिछले विधानसभा में मतदान का प्रतिशत**- 60.36
**पिछले पांच विधानसभा की स्थिति**
2010 बृज किशोर बिंद बीजेपी
2005 अक्टूबर महाबली सिंह राजद
2005 फरवरी महाबली सिंह राजद
2009 बृज किशोर बिंद बीजेपी
2000 महाबली सिंह बीएसपी
1995 महाबली सिंह बीएसपी
1990 लाल मुनि चौबे बीजेपी

### मोहनिया (सुरक्षित)
**कुल मतदाता**- 199547
**पुरुष मतदाता**- 107538
**महिला मतदाता**- 92009
**पिछले विधानसभा में मतदान का प्रतिशत**-55.92
**पिछले पांच विधानसभा की स्थिति**
2010 छेदी पासवान जदयू
2005 (अक्टूबर) छेदी पासवान जदयू
2005 (फरवरी) सुरेश पासी आरजेडी
2000 सुरेश पासी बीएसपी
1995 सुरेश पासी बीएसपी
1990 शिवधर पासवान जनता दल

### रामगढ़
**कुल मतदाता**- 202955
**पुरुष मतदाता**- 108842
**महिला मतदाता**-94113
**पिछले विधानसभा में मतदान का प्रतिशत** - 60.37
**पिछले पांच विधानसभा की स्थिति**
2010 अबिंका सिंह आरजेडी
2009 अबिंका सिंह आरजेडी(उपचुनाव)
2005 (अक्टूबर) जगदानंद सिंह आरजेडी
2005 (फरवरी) जगदानंद सिंह आरजेडी
2000 जगदानंद सिंह आरजेडी
1995 जगदानंद सिंह जनता दल
1990 जगदानंद सिंह जनता दल

मगध की 26 सीटों पर दूसरे चरण में वोटिंग

# मगध के मुकाबले में कौन मारेगा बाजी !

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**भारतीय** इतिहास और भारतीय राजनीति में मगध का गौरवशाली स्थान रहा है। द्वन्द युद्ध के बेमिसाल योद्धा जरासंध और ज्ञान के पुरोधा बुद्ध का यह क्षेत्र हर दौर और हर युग में अपनी जीवंत उपस्थिति दर्ज कराता रहा है। आधुनिक समय में 1980 और 90 के दशक में यहां पनपे और जड़ें जमाए सशस्त्र क्रांति का नारा देने वाले वामपंथी उग्रवाद ने भारत समेत पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा था तो बिहार में जातीय सेनाओं के जन्म और ठौर का ठिकाना भी बना मगध। यह वही दौर था जब सिलसिलेवार नरसंहारों ने शांति के मसीहा बुद्ध की धरती मगध को लहुलुहान कर दिया था। इसके छींटे और इससे उपजी वैमनस्यता की तपिश आज भी महसूस की जा सकती है। बिहार विधानसभा के इस चुनाव के दूसरे चरण में इसी मगध में महागठबंधन और राजग के बीच कड़ा मुकाबला है।

दूसरे चरण में जिन सीटों पर चुनाव होना है, उनमें मगध की 26 सीटें भी हैं। मगध के चार जिलों अरवल, जहानाबाद, औरंगाबाद और गया की इन 26 सीटों पर सीधी लड़ाई जदयू, राजद और कांग्रेस के महागठबंधन और भाजपा, हम, रालोसपा और लोजपा के राजग के बीच है। मुकाबले में वाम गठबंधन भी है और उसके उम्मीदवार महागठबंधन या राजग को वाक ओवर नहीं देंगे यह भी तय है।

2010 के विधानसभा चुनाव में राजग ने यहां 24 सीटों पर कब्जा किया था। राजद को एक सीट मिली थी, जबकि एक सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी जीता था। तब स्थिति भी दूसरी थी और समीकरण भी। जदयू और भाजपा ने मिलकर चुनाव लड़ा था। उस चुनाव में जदयू ने 16 और भाजपा ने आठ सीटों पर कब्जा किया था। इसबार दोनों न सिर्फ अलग-अलग हैं बल्कि आमने-सामने हैं। यही नहीं उस समय इस इलाके के महत्वपूर्ण नेता जीतनराम मांझी जदयू के थे। मांझी इस बार भाजपा के साथ मिलकर महागठबंधन को चुनौती दे रहे हैं। दूसरी तरफ पिछली बार के मुख्य प्रतिद्वंदी राजद और जदयू साथ हैं। उल्लेखनीय है कि मगध में पिछली बार जहां सबसे ज्यादा सीटें जदयू ने जीती थी, वहीं राजद ज्यादातर सीटों पर दूसरे स्थान पर रहा था।

अगर जातिगत समीकरण पर नजर दौड़ाएं तो ये इलाका मुख्य रूप से पिछड़ों और अति पिछड़ों का इलाका माना जाता है। इसमें भी अति पिछड़ों की संख्या अधिक है, किंतु सवर्ण और दलित-महादलित भी कई सीटों पर निर्णायक भूमिका में हैं।

मगध में क्षेत्र में जातिगत असमानता की दीवार बड़ी है तो आर्थिक विषमता की खाई चौड़ी भी है। कोई भी दल या प्रत्याशी इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। वाममोर्चा इसी को आधार बनाकर मुकाबले को त्रिकोणीय बनाने की कोशिश में लगा है। वाम गठबंधन इसमें कितना सफल हुआ ये तो 16 अक्टूबर को पता चलेगा, किंतु फिलहाल महागठबंधन और राजग के बीच सीधे मुकाबले में वह ऐसा तीसरा कोण बनने सफल तो है ही, जिसकी अनदेखी कोई नहीं कर सकता।

# जिले का हॉट सीट बना दिनारा

राणा अवधूत कुमार

**दिनारा विधानसभा**

**जिले** के सबसे हॉट सीट बने दिनारा में जदयू और भाजपा के बीच सीधी टक्कर की लड़ाई होगी लेकिन संगठन से राजनीति में आये भाजपा प्रत्याशी राजेंद्र सिंह नामांकन के साथ ही जिला में ही नहीं बल्कि सूबे में चर्चा के केंद्र बने हुए हैं। उनकी लोकप्रियता और कद का अंदाजा इसी से लगता है कि प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया दिनारा को केंद्र बना वहां की लाइव स्टोरी दिखा रहे हैं। संघ एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की संस्कृति के साथ एक लंबी-चैडी कैडर बेस कार्यकर्ता जो पार्टी से इतर भी अपना प्रभाव रखते हैं के साथ आक्रामक प्रचार- प्रसार के साथ राजेंद्र सिंह के मुकाबले बिहार के एक कैबिनेट मंत्री जय कुमार सिंह लड़ाई में हैं। लेकिन सूत्रों के मुताबिक मंत्री जी प्रचार-प्रसार के साथ ही अन्य मामलों में भी भाजपा प्रत्याशी से पीछे चल रहे हैं। हालांकि अभी चुनाव तक उंट किस करवट बैठेगा कहना आसान नहीं है।

संघ में अपनी उंची पकड़ रखने वाले राजेंद्र सिंह वैसे तो यहां के स्थानीय उम्मीदवार हीं है लेकिन इनका अधिकांश समय बाहर ही बीता। बावजूद विधानसभा में उनकी ताकत व हैसियत का गवाह बना दिनारा उच्च विद्यालय का प्रांगण। जहां उनके नामांकन जनसभा में झारखंड सरकार के मुखिया रघुवर दास सरकार के कैबिनेट मंत्री सरयू राय, सीपी सिंह, नीरा यादव सहित छह कैबिनेट मंत्री, आठ विधायक और चार लोकसभा सांसद भी पहुंचे थे। हैरत की बात थी कि बिहार प्रदेश भाजपा का कोई बड़ा चेहरा इस कार्यक्रम में शामिल नहीं था, अब इसमें भाजपा की क्या रणनीति है यह अभी थोड़ा संशय में है लेकिन इतना तो तय है कि यदि भाजपा की सरकार प्रदेश में बनती है तो राजेंद्र सिंह को बड़ी जिम्मेवारी मिलेगी और यह सदेंश आज सायबर दुनिया में बड़ी तेजी से मतदाताओं के बीच वायरल हो रही है। नतीजा चाहे जो भी आये लेकिन भाजपा जिला में इस सीट को लेकर संतुष्ट नजर आ रही है। हालांकि महागठबंधन प्रत्याशी को भीतरघात का सामना भी करना पड़ रहा है। सवर्ण, यादव व मुसलिम बहुल इस विधानसभा क्षेत्र में महादलिततों की संख्या भी काफी प्रभावित करने की स्थिति में है तो महागठबंधन के लिए भी यह सीट कोई मुश्किल नहीं है वैसे भी यह सीट राजद-जदयू के खाते में ही रही है। कभी रामधनी तो कभी सीता सुंदरी।

वहीं परिसीमन के बाद बिक्रमगंज अब काराकाट को जाने की बजाय जय कुमार सिंह ने पिछले चुनाव में क्षेत्र बदल दिनारा से टिकट हासिल कर न सिर्फ चुनाव जीता बल्कि सहकारिता मंत्री बन थोड़े ही दिनों विशेष रूप से नीतीश कुमार के बुरे दिनों में मांझी प्रकरण में बखूबी अपनी निष्ठा साबित की, लेकिन अब मौजूदा हालत में उन्हें सिर्फ नीतीश का चेहरा ही बेड़ा पार लगा सकता है। लेकिन यह भी आसान नहीं हैं।

कारण कि जिस प्रचार अभियान की अनूठी जन संपर्क अभियान के तहत भाजपा लोगों को आकृषित कर रही है वहीं किसानों को पैक्सों से मिले कड़वे अनुभवों को लेकर भी विरोध के स्वर उठ रहे हैं वहीं बसपा, कम्युनिस्ट और समाजवादी पार्टी से भी यादव समुदाय का उम्मीदवार उतरने से चुनावी गणित पूरी तरह से उलझ कर रह गया है।

# हिंदुत्व व धर्मनिरपेक्ष ताकतों में सीधी टक्कर

राणा अवधूत कुमार

**डेहरी विधानसभा**

**अकलियतों** के लिए सुरक्षित तो नहीं लेकिन सेफ माने जाने वाले डेहरी विधानसभा क्षेत्र में एक बार फिर से महागठबंधन के उम्मीदवार इलियास हुसैन सबको पीछे छोड़ने की तैयारी में जोर-शोर से लगे हुए हैं। पिछले 10 वर्षों को छोड़ दिया जाये तो पहले अब्दुल क्यूम अंसारी और बाद में इलियास हुसैन यहां के लगातार प्रतिनिधि होने के साथ मंत्री भी बने और क्षेत्र में विकास कार्यों को काफी हद तक अंजाम तक पहुंचाया।

बावजूद इसके पिछले दो चुनावों में राष्ट्रसेवा दल के प्रदीप जोशी से उन्हें न सिर्फ कड़ी टक्कर मिल रही है बल्कि दो चुनावों में लगातार शिकस्त मिल रहा है। वैसे बदले हुए माहौल में जहां इस बार इलियास हुसैन राजद-जदयू-कांग्रेस के महागठबंधन के उम्मीदवार बने है तो लाजिमी है कि जदयू के वोट के साथ धर्मनिरपेक्ष वोट भी उनके खाते में जायेंगे। वहीं रालोसपा के अंदरूनी कलह और दावेदारों को टिकट न मिलने से भी महागठबंधन को लाभ मिलने की पूरी संभावना है। वैसे जानकारों के मुताबिक तकनीकी रूप से मजबूत इलियास हुसैन के पास विकास को लेकर एक ठोस विजन तो है। इसके साथ ही यह भी संभावना है कि महागठबंधन की सरकार बनने पर इलिया हुसैन को मंत्री के रूप में बड़ी जिम्मेवारी मिलेगी। वहीं राष्ट्रसेवा दल के प्रदीप जोशी अपनी व्यवहारकुशलता और जनसेवा की भावना के साथ एक बार फिर चुनावी मैदान में हैं। जहां उन्हें उग्र हिंदुत्व के नाम पर एक बार फिर सफलता मिलने की उम्मीद है वहीं एनडीए से रालोसपा उम्मीदवार जितेंद्र कुमार उर्फ रिंकू सोनी नरेंद्र मोदी के सहारे चुनावी समर पार करने के मूड में है। हालांकि डेहरी में अपने प्रतिनिधित्व काल में किये गये कार्यों की बदौलत इलियास हुसैन अपने विरोधियों पर भारी पड़ते दिखायी पड़ रहे हैं।

वहीं लालू- नीतीश समेत स्टार प्रचारकों के क्षेत्र में आने के बाद डेहरी विधानसभा में भी मतदाताओं का रूख काफी हद तक बदलने की संभावना जतायी जा रही है। राजपूत, यादव व वैश्य बहुल इस क्षेत्र में मतदाताओं को विकास के लिए समर्पित उम्मीदवारों को अपना वोट देने की अपील प्राय: सभी प्रत्याशियों द्वारा किया जा रहा है।

## चुनाव से संबंधित नेताओं की राय

“ बिहार सरकार पिछले दस वर्षों से जनता की आंखों में धूल झोंक रही है लेकिन अब बिहार की जनता ने मूड बना लिया है कि केंद्र व राज्य दोनों जगह एक ही दल की सरकार रहेगी तभी विकसित बिहार का सपना पूरा हो सकेगा। दिनारा सहित जिले के सभी सातों विधानसभा सीटों पर एनडीए की भारी जीत साबित करेगी कि मोदी के नेतृत्व में देश के साथ अब बिहार को तरक्की से कोई नहीं पीछे कर सकता।

**रवींद्र सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता, पटना**

“ टिकट बंटवारे में पार्टी नेतृत्व ने जिला कमेटी की अनुशंसा को ध्यान में नहीं लेकर व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर टिकट दे दिया जिसका खामियाजा चुनाव में महागठबंधन को उठाना पड़ सकता है। यह कहां का न्याय है कि चार बार के हारे प्रत्याशी को पुन: टिकट दे दिया गया जबकि सभी दलों सहित आम मतदाता भी इस बार परिवर्तन के लिए सासाराम में प्रत्याशी बदलने की मांग कर रहा था।

**ईश्वरचंद कुशवाहा, पूर्व जिलाध्यक्ष जदयू, रोहतास**

## पहले साइकिल से प्रचार, अब लग्जरी गाड़ी पर सवार

# पहले के मुकाबले बहुत बदल गए हैं चुनाव प्रचार के वाहन

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** वक्त बदलने के साथ ट्रेंड भी बदलता है और टेक्नीक भी। बिहार विधानसभा चुनाव पर भी ये बात लागू होती है। चुनाव का ट्रेंड भी बदला है और टेक्नीक तथा स्टाइल भी। इसी बदलाव के क्रम में प्रचार का तौर तरीका भी बदला और प्रचार के वाहन भी। पहले के चुनाव में गाड़ियों के नाम पर चंद गाड़ियां होती थी, जबकि आज तरह-तरह की महंगी और डिजायनर गाड़ियां चुनाव प्रचार में दौड़ती दिखाई दे रही हैं।

चुनाव प्रचार में इस्तेमाल होनेवाले साधनों की अगर बात करें तो आजादी के बाद लंबे समय तक चुनाव प्रचार के लिए उम्मीदवार गाड़ियों पर कम निर्भर रहते थे। वे पैदल घूम-घूमकर मतदाताओं से सीधा संपर्क करते थे या बहुत हुआ तो साइकिल पर चलते थे। मोटरसाइकिल और जीप और कार बहुत कम उम्मीदवारों के पास होती थी। उड़नखटोले यानी हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल तो प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री या कुछ बड़े नेता ही करते थे।

आजादी के बाद शुरूआती वर्षों में पैदल और साइकिल के अलावा चुनाव प्रचार में टमटम और बैलगाड़ियों का भी बोलबाला था। प्रत्याशी जुलूस निकालने के लिए ज्यादातर इनका इस्तेमाल करते थे। कार और जीप में बहुत कम नेता मतदाताओं से संपर्क करते थे। चार पहिया वाहन तब बहुत कम दिखाई पड़ते थे और गांवों में जब कोई प्रत्याशी अपनी चार पहिया गाड़ी से पहुंचता था तो लोग उम्मीदवार को कम देखते-सुनते थे, गांव में पहुंची उसकी गाड़ी लोगों की निगाह में ज्यादा रहती थी। उस समय कारों में एंबेसडर और प्रीमियम पद्मिनी थी। हालांकि नेता ज्यादातर एंबेसडर का ही इस्तेमाल करते थे।

चुनाव प्रचार के लिए बाद में उम्मीदवारों ने मोटरसाइकिल का भी इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। मोटरसाइकिल में उस वक्त राजदूत और बुलेट थी, लेकिन ज्यादा चलन राजदूत का ही था। उम्मीदवार दूर दराज क्षेत्रों में जनसंपर्क के लिए मोटरसाइकिल का इस्तेमाल करते थे। यह जनसंपर्क आज की तरह के मोटरसाइकिल रैली की तरह नहीं होता था, बल्कि उम्मीदवार किसी समर्थक के साथ मोटरसाइकिल से पहुंचता था। अस्सी के

दशक तक प्रचार के लिए इस्तेमाल का ट्रेंड लगभग यही रहा। हां, समय के साथ चुनाव प्रचार के वाहनों में ट्रैक्टर का भी चलन शुरू हुआ, किंतु ये ग्रामीण इलाकों और रैलियों आदि तक ही रहा। रिक्शा से भी प्रचार होने लगा। नब्बे के दशक से प्रचार के तरीके में बदलाव आया और वाहनों में भी। धीरे-धीरे साइकिल, बैलगाड़ी, टमटम आदि चुनावी प्रचार के परिदृश्य से गायब होने लगे। हालांकि इसकी शुरूआत 1985 के चुनाव में ही हो गई थी, किंतु नब्बे के दशक में शुरू हुए आर्थिक उदारीकरण के दौर ने चुनाव प्रचार में इस्तेमाल होनेवाले वाहनों में भी बदलाव लाना शुरू कर दिया। कई तरह की गाड़ियां चुनाव प्रचार में उतर गई थीं। इनमें टाटा सूमो और महिंद्रा की अर्माडा शामिल थी। 90 के दशक में बिहार चुनाव में बाहुबल और दबंगई का भी जोर बढ़ने लगा था। इसी की देन थी बुलेटप्रूफ गाड़ियों की डिमांड। जिन क्षेत्रों में आपसी रंजिश ज्यादा थी या अपराध का बोलबाला था, उन क्षेत्रों में बुलेटप्रूफ गाड़ियों की मांग काफी रही। बुलेटप्रूफ गाड़ियों की डिमांड कम होने की जगह उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई।

नई सदी में तो एक से एक देसी विदेशी कंपनियों की गाड़ियां चुनाव प्रचार में दिखाई देने लगी। हालांकि एंबेसडर अपने रूतबे के साथ मौजूद थी, किंतु टाटा सूमो और महिंद्रा की अर्माडा जैसी गाड़ियां भी चुनाव प्रचार में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रहीं थी। टाटा सूमो को तो चुनाव प्रचार में अच्छी इज्जत भी हासिल थी। लेकिन नई सदी में जिस गाड़ी का सबसे ज्यादा जलवा रहा वह गाड़ी है बोलेरो। महिंद्रा की यह गाड़ी वर्ष 2000 में बाजार में आई थी और आते ही यह नेताओं की पहली पसंद बन गई। आज भी जब नई नई कई गाड़ियां बाजार में आ गई है, चुनाव प्रचार में बोलेरो की डिमांड कम नहीं हुई है।

2005 और 2010 के विधानसभा चुनाव तक बाजार में कई तरह की गाड़ियां आ चुकी थी। इनमें कई महंगी गाड़ियां भी थी और नेताओं को अपने रूतबे के लिए मुफीद लगती थीं। लिहाजा 2005 और 2010 के चुनाव प्रचार में इन नई गाड़ियों ने भी खूब धमक मचाई। इनमें क्वालिस, स्कार्पियो, सफारी, पजेरो, इनोवा, टवेरा जैसी कई गाड़ियां थीं। इस चुनाव में भी प्रचार के लिए इन गाड़ियों की मांग बनी हुई है। इनके अलावा कुछ अन्य लग्जरी गाड़ियां भी चुनाव प्रचार में इस्तेमाल हो रही हैं। हर नेता और उम्मीदवार अपनी हैसियत और रूतबे के हिसाब से गाड़ी का इस्तेमाल कर रहा है।

जिस तरह से नेता अपने प्रचार के लिए और अपने जनसंपर्क के लिए गाड़ियों का इस्तेमाल कर रहे हैं उससे उनकी माली हैसियत का भी अंदाजा लगता है, लेकिन यह भी तथ्य है कि महंगी से महंगी लग्जरी गाड़ियों में प्रचार करने से रूआब भले ही बढ़ जाता हो, इससे मतदाताओं को भरमाया नहीं जा सकता।

## बिहार में यादवों का मसीहा कौन ?

# यादव वोटों पर है सबकी नजर!

गणादेश न्यूज नेटवर्क

**पटना :** यह सभी जानते हैं कि बिहार की राजनीति में जाति एक महत्वपूर्ण तथ्य है और चुनावी राजनीति में तो निर्णायक। जो मानते रहे हैं कि चुनाव मुद्दों पर लड़े जाते हैं, वे भी इस हकीकत से इंकार नहीं कर सकते कि बिहार में चुनाव जाति के आधार पर लड़े जाते हैं। एक टीवी न्यूज चैनल पर राजद सुप्रीमों लालू प्रसाद ने जब कहा था कि बिहार में कुछ प्रतिशत लोग भले ही जाति के आधार पर वोट नहीं देते हों, किंतु चुनाव सौ फीसदी जातिगत आधार पर ही लड़े जाते हैं तो उन्होंने कड़वा किंतु बिहार की राजनीति का सच ही बयान किया था।

बहरहाल, बिहार की राजनीति के जातिगत समीकरणों में यादव एक प्रमुख जाति है और बिहार की अधिकतर सीटों पर ये महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में है। लिहाजा इस पर हर पार्टी और गठबंधन की नजर रहती है। इस चुनाव में तो यादव वोट बैंक पर दावेदारी को लेकर काफी रस्साकस्सी हो रही है। आज जब हर पार्टी और गठबंधन में यादव वोटों के अनेक मसीहा आ गए हैं तो सवाल है कि बिहार में यादव वोटों पर किसकी दावेदारी कायम होगी और ये वोट बैंक किसके पाले में जाएगा।

अगर बात यादव जाति को बड़े और महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में पहचानने की है तो सबसे पहला नाम लालू प्रसाद यादव का आयेगा। हालांकि लालू प्रसाद यादव से पहले भी बिहार में यादवों के बड़े नेता हुए किंतु इन्हें एक वोट बैंक के रूप में सबसे पहले जाना और इस्तेमाल किया राजद सुप्रीमो ने ही। 1990 के दशक में जब बिहार में लालू प्रसाद का शासन था, उन्होंने यादवों को एकजुट करने की कोशिश की। वो इसमें सफल भी रहे। उन्होंने मुस्लिम-यादव गठजोड़ को माई (MY) समीकरण में बदला और लंबे समय तक शासन किया। ये किसी को भी पता है कि तकरीबन 15 साल के लालू-राबड़ी के राज के पीछे इस माई समीकरण की निर्णायक भूमिका था। पिछले चुनाव में जब राजद बुरी तरह हारा था तब भी माना गया था कि यादव लालू प्रसाद के साथ बने रहे थे।

**बिहार की राजनीति के जातिगत समीकरणों में यादव एक प्रमुख जाति**

**चुनाव में यादव वोट बैंक पर दावेदारी को लेकर काफी रस्साकस्सी**

**कभी लालू के साथ रहे पप्पू यादव भी अपनी पार्टी बनाकर लालू को चुनौती दे रहे**

**रामकृपाल ने पिछले लोस चुनाव में राजद का साथ छोड़ भाजपा का दामन पकड़ लिया था**

इसबार के विधानसभा चुनाव में भी लालू प्रसाद खुद को यादवों का सबसे बड़ा नेता बता रहे हैं और एक नजर में देखा जाय तो हैं भी। बिहार में यादव बिरादरी उनके साथ हमेशा खड़ी रही है, मुश्किल से मुश्किल वक्त में भी। इसीलिए कभी-कभी दबे छुपे स्वर में तो कभी कभी खुलेआम राजद को यादवों की पार्टी भी कहा जाता रहा है। यादव वोटबैंक पर लालू के इस एकाधिकार को इसबार चुनौती मिल रही है। विरोधी गठबंधन और दल भी यादव वोटों पर दावेदारी ठोक रहे हैं। भाजपा में यादव नेता के रूप नंदकिशोर यादव बड़ा नाम है। भाजपा उन्हें लालू के मुकाबले यादव नेता के रूप में पेश करती भी रही है। इसबार भाजपा के पास रामकृपाल यादव के रूप में एक और यादव नेता है। कभी लालू प्रसाद का दाहिना हाथ समझे जानेवाले रामकृपाल यादव ने पिछले लोकसभा चुनाव में राजद का साथ छोड़ भाजपा का दामन पकड़ लिया था। इसके अलावा भूपेंद्र यादव को बिहार का प्रभारी बनाकर यादव वोटों को अपने पाले में करने की पूरी कोशिश की है।

कभी लालू के साथ रहे पप्पू यादव भी अपनी जनाधिकार पार्टी बनाकर लालू प्रसाद को चुनौती दे रहे हैं। पप्पू यादव तो खुद को यादवों का सबसे बड़ा नेता साबित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे। पप्पू यादव लालू प्रसाद को कंस का और खुद को कृष्ण का वंशज बताने में भी पीछे नहीं रहे। इसके अलावा ददन यादव भी बक्सर और आसपास के जिलों में यादव नेता के रूप में पहचान रखते हैं। कभी राबड़ी देवी सरकार में मंत्री रहे डुमरांव के पूर्व विधायक ददन यादव इसबार जदयू के टिकट पर डुमरांव से ही चुनाव लड़ रहे हैं। समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव भी अपनी यादव नेता की छवि के सहारे ही बिहार चुनाव में ताल ठोंक रहे हैं।

लब्बोलुआब यह कि इसबार हर दल यादव वोटों पर नजर गड़ाए हुए है। कमोबेश हर दल ने पिछली बार की तुलना में यादव उम्मीदवारों को ज्यादा टिकट दिया है। राजद ने भी पिछली बार की तुलना में ज्यादा यादव प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं। राजद ने इस बार 48 यादव उम्मीदवारों को टिकट दिया है।

ये संख्या न सिर्फ पिछली बार के 33 उम्मीदवारों के मुकाबले में ज्यादा है, बल्कि इसबार के चुनाव में बाकी दलों से भी अधिक है। भाजपा ने भी इसबार 22 सीटों पर यादव प्रत्याशी खड़े किए हैं। 15 से अधिक सीटें ऐसी हैं जहां महागठबंधन और राजग के यादव प्रत्याशी आमने सामने हैं। देखना है यादव मतदाता इसबार क्या निर्णय लेते हैं। क्या वे लालू के साथ पहले की तरह बने रहेंगे या फिर किसी और दल या नेता को चुनेंगे।

## पार्टियों ने जताया पंचायत प्रतिनिधियों और जिप सदस्यों पर भरोसा

# कई निर्दलीय के रूप में भी मैदान में ठोंक रहे हैं ताल

**पटना :** इसबार बिहार विधानसभा के चुनाव में जिस तरह मुखिया, जिला परिषद सदस्य, ब्लॉक प्रमुख आदि पंचायत और नगर निकाय के सदस्य अपनी किस्मत आजमा रहे हैं उससे यही लगता है कि पंचायत और नगर निकाय के चुनाव राज्य और देश की राजनीति करने की चाहत रखनेवालों के लिए प्रशिक्षण केंद्र की तरह है। कई विधानसभा क्षेत्रों में पंचायती राज और नगर निकाय के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में इस चुनाव में अपना पर्चा भरा है। हालांकि नामांकन दाखिल करने वाले ऐसे प्रतिनिधियों में ज्यादातर स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं, किंतु राजनीतिक पार्टियां भी इनपर भरोसा करने में पीछे नहीं रही है। आलम यह है कि छोटी-छोटी पार्टियों से लेकर बड़ी पार्टियों तक ने कई जगहों पर नगर निकाय और पंचायत प्रतिनिधियों को अपना उम्मीदवार बनाया है।

पंचायत प्रतिनिधियों और नगर निकाय के सदस्यों को टिकट देने में सबसे आगे भाजपा रही है। उसने 10 प्रतिनिधियों को टिकट दिया है। बसपा भी इस मामले में पीछे नहीं रही है। बसपा के टिकट से आठ पंचायत प्रतिनिधि चुनाव लड़ रहे हैं, जबकि जदयू ने पांच पंचायत प्रतिनिधि मैदान में उतारे हैं। राजद, सपा और लोजपा ने दो-दो ऐसे प्रतिनिधियों को टिकट दिया है। इसके अलावा अन्य दूसरी पार्टियों ने भी पंचायत प्रतिनिधियों को टिकट देने में कोताही नहीं बरती है।

निर्दलीय उम्मीदवारों के रूप में भी पंचायत और नगर निकाय के प्रतिनिधियों की संख्या कम नहीं है। इन निर्दलीय उम्मीदवारों में कई ऐसे भी हैं जो किसी पार्टी से जुड़े थे और वहां से टिकट मिलने की आस लगाए हुए थे। जब पार्टी से टिकट नहीं मिला तो पार्टी छोड़

निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में नामांकन कर दिया। वहीं ऐसे भी मामले हैं, जहां पार्टी ने वर्तामन विधायक का टिकट काट कर पंचायत प्रतिनिधि या नगर निकाय सदस्य को मैदान में उतारा है। विधायकी का चुनाव लड़ने में महिला सदस्य भी पीछे नहीं हैं। राजनैतिक दलों ने भी इन्हें टिकट देने में कोताही नहीं बरती है।

दरअसल पंचायत सदस्यों और नगर निकाय के प्रतिनिधियों द्वारा इस कदर विधानसभा के चुनाव में उतरने का कारण इनकी राजनीतिक महात्वकांक्षा के साथ साथ विधानसभा चुनावों के प्रचार से होड़ लेता इनका प्रचार भी है। पिछली बार पंचायत और नगर निकाय के चुनाव में जिस तरह से प्रत्याशियों ने चुनाव प्रचार किया वह विधानसभा के चुनाव में होनेवाले प्रचार की तरह ही ग्लैमरस और खर्चीला था।

पहले ये चुनाव इस तरह से नहीं लड़े जाते थे। पंचायत और नगर निकाय के चुनावों में धन-बल के बढ़ते प्रभाव ने इनमें जीते प्रतिनिधियों की महात्वकांक्षाओं को हवा देने का काम किया। राजनैतिक दलों ने भी इनपर भरोसा करने में कोताही नहीं बरती। ऐसे में पंचायत प्रतिनिधि और जिला पंचायत के सदस्य चाहें वे मुखिया हों, प्रमुख हों, जिला परिषद अध्यक्ष या सदस्य हों, अगर वे एमएलए बनने का ख्वाब सजाते हैं तो क्या बुरा है।

# मुसलिम वोटों पर टिकी है सबकी निगाहें

हैदर अली

**सासाराम :** बिहार में विधानसभा चुनाव के परवान चढते ही सियासी पारा आसमान में पहुंच गया है जहां सभी सियासी दल बिहारी मतदाताओं को अपनी ओर रिझाने में कोई भी कोर-कसर बाकी नहीं रखना चाह रहे हैं. इसी क्रम में मुसलिम मतों को केंद्रित कर सियासी दल भी अपनी रणनीति बनाने में जुट गये हैं. जहां लालू प्रसाद अपनी माय समीकरण यानी मुसलिम और यादवों को समेट कर रखने में अपना पूरा जोर लगाये हुए हैं, वहीं नीतीश कुमार भी अपने कार्यकाल के दौरान अकलियत समुदाय के लिए किये गये अपने कार्यों को लेकर मुसलिमों को अपनी ओर लामबंद करने में जुटे हैं.वहीं भाजपा के प्रति अपनी जायज नाराजगी को शायद भाजपा भी समझ चुकी है तभी न तो टिकट बंटवारे में न अकलियतों के मतों को विशेष रूप् से टारगेट करने में रुचि लेती है. उसकी भूमिका यह विशेष रूप से रहती है कि अकलियतों के मत उनके विरोधियों में अधिक से अधिक बिखरे.

रोहतास में भी मुसलिम मतदाताओं की अच्छी-खासी संख्या है. वैसे तो पूरे बिहार सूबे में करीब 17 प्रतिशत की आबादी वाले मुसलिम समुदाय के वोटों पर नजर तो सभी दलों की है लेकिन रोहतास में भी महागठबंधन के साथ ही कुछ अन्य दल व निर्दलीय भी अकलियतों के मतों के सहारे ही चुनावी वैतरणी को पार करने के लिए हरसंभव कोशिश करने में जुटे हुए हैं. सासाराम, दिनारा, चेनारी में तो इनकी संख्या औसतन 50000 के आसपास है वहीं पूरे जिले में तीन लाख की आबादी वाले मुसलिम मतदाताओं की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किसी जनप्रतिनिधि ने नहीं किया. सासाराम में इस बार मुसलिम वोटर बदलाव के मूड में दिख रही है. जहां निर्दलीय कृष्ण कुमार सिंह की ओर अधिकांश मुसलम मतों का ध्रुवीकरण होने की संभावना प्रबल होती दिख रही है.

जो चुनाव परिणाम को काफी हद तक बदल सकने में सक्षम नजर आ रहा है. अब ऐसी स्थिति में मुसलिम वोटर कई सीटों पर प्रमुख दलों का दावा पलट सकते हैं. इस जिले से कई विधायक-कैबिनेट मंत्री सहित उंचे पदों पर काबिज हुए.अभी पिछले सरकार में ही दो मंत्री इस जिले से थे लेकिन सहकारिता विभाग और स्वास्थ्य विभाग की इस जिला मेंक्या हालत है यह तो किसी आम आदमी से भी छिपी नहीं है इसी तरह तमाम मंत्री-विधायकों को मुसलिम इलाकों की समस्याओं से वाकिफ न हो लेकिन कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य आज तक नहीं हुए.जिससे अल्पसंख्यकों` जीवन-स्तर में सुधार हो सके. जिसका नतीजा है कि पिछले कई दशकों से मुसलिम मतों का सिर्फ वोट बैंलेंस के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है लेकिन इस बार कई मुसलिम पार्टियों के बिहार विधानसभा चुनाव में उतरने के बाद से एक बार फिर से मुसलिम मतों का बिखराव होगा या ध्रुवीकरण. यह अभी कहना मुश्किल है. हालांकि हैदराबाद सांसद अससुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इतेहादुल मुसलमीन यानी एआइएमआइएम सीमांचल के 24 विधानसभा सीटों पर महागठबंधन का खेल जरूर बिगाड सकती है. हालांकि ओवैसी ने अभी तक सीमांचल के छह विधानसभा सीटों पर ही अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा की है.

इसके साथ ही इतेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल और पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया जैसी मुसलिम पार्टियों ने सीमांचल सहित बिहार के कई जिलों के चुनावों में अपने प्रत्याशियों को चुनाव में उतारा है. जो चुनाव भले न जीते लेकिन कई महारथियों का खेल तो खराब कर ही सकते हैं.

# भाजपा पानी की तरह बहा रही है पैसा- खगेंद्र ठाकुर

**पटना :** वरिष्ठ आलोचक और भाकपा नेता खगेंद्र ठाकुर ने आरोप लगाया है कि भाजपा बिहार विधानसभा चुनाव में कॉरपोरेट घरानों से मिल रहे धन-बल के चलते पानी की तरह पैसा बहा रही है और बिहार में पूंजीवाद का मार्ग प्रशस्त करने में लगी है। ये बातें उन्होंने पिछले दिनों पटना में आयोजित संगोष्ठी विधानसभा चुनाव और वामदल में कही। खगेंद्र ठाकुर ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा विधानसभा चुनाव में आम लोगों का ध्यान वास्तविक मुद्दों से हटाकर काल्पनिक मुद्दों को उछालने में लगी है। इस संगोष्ठी को केदारदास श्रम एवं समाज अध्ययन संस्थान ने आयोजित किया था।

### भारी पड़ा चुनाव प्रचार, घर में हो गई चोरी

विधानसभा चुनाव में चोरों की भी बन आई है। चुनाव प्रचार में व्यस्त होने के चलते नेता अपने घर पर नहीं रह पा रहे हैं, जिसके चलते चोर बिना डर भय के चोरी की वारदात को अंजाम दे रहे हैं। इधर नेता जी चुनाव प्रचार अभियान पर, उधर चोर घर में चोरी को अंजाम देने। कुछ ऐसा ही हुआ पिछले दिनों एक नेता जी के घर में। नेता भी कोई ऐसे वैसे नहीं, बल्कि बिहार सरकार में कुछ समय पहले तक मंत्री थे। पिछले दिनों पटना के वीआईपी इलाके में स्थित इन पूर्व मंत्री जी के मकान से लाखों के जेवरात समेत 25 हजार रुपए नकद और अन्य कीमती सामानों पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। चोरों को पहले से पता था कि घर पर कोई नहीं है और नेताजी चुनावी मौसम में चुनाव प्रचार के अपने अभियान पर घर से बाहर हैं। चोरों को लगा कि मौका अच्छा है और वे घर में घुस गए, वह भी मेन गेट का ताला तोड़कर और चोरी करने के बाद फरार हो गए।

## जाति और रिश्तेदारी जोड़ रहे जनप्रतिनिधि

# सालों बीत गये पर पूरे नहीं हुए वादे

**पंकज कुमार**

**बक्सर :** जिले के चारों विधान सभा क्षेत्रों के लिए प्रत्याशियों ने नामांकन कर दिया। इस बार 79 उम्मीदवार चुनाव के मैंदान में हैं। सबसे ज्यादा बक्सर विधान सभा में 31 उम्मीदवारों ने ताल ठोका है। नामांकन के साथ ही प्रत्याशी अपने-अपने क्षेत्रों में पूरे जोर-शोर से चुनाव प्रचार में लग गये हैं। गांवों का दौरा जारी है। हर क्षेत्र के अपने-अपने मुद्दे हैं। प्रत्याशी मुद्दों के साथ-साथ जाति और रिश्तेदारी को भी जोड़ रहे हैं। सुबह से ही गांवों में गाड़ियों की पी-पो सुनाई दे रही है। एक प्रत्याशी के जाते ही दूसरा प्रत्याशी आ धमकता है। यह नजारा सिर्फ इस बार का नहीं है। हर बार चुनाव में ऐसा ही होता है। चुनाव जीतने के बाद मुद्दे गौण हो जाते हैं। इस बार के चुनाव में भी कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जो सालों दर साल बीत जाने के बाद भी उसे जनप्रतिनिधियों ने पूरा नहीं किया। जिसका नतीजा यह है कि जिले में जहां एक तरफ किसानों की समस्या का निदान नहीं हुआ है, तो दूसरी तरफ सड़क, बिजली और शिक्षा की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं हुआ। हर विधान सभा क्षेत्र में अलग-अलग समस्याएं हैं। जिसके निदान के लिए वर्षों से लोग आस लगाये बैठे हैं।

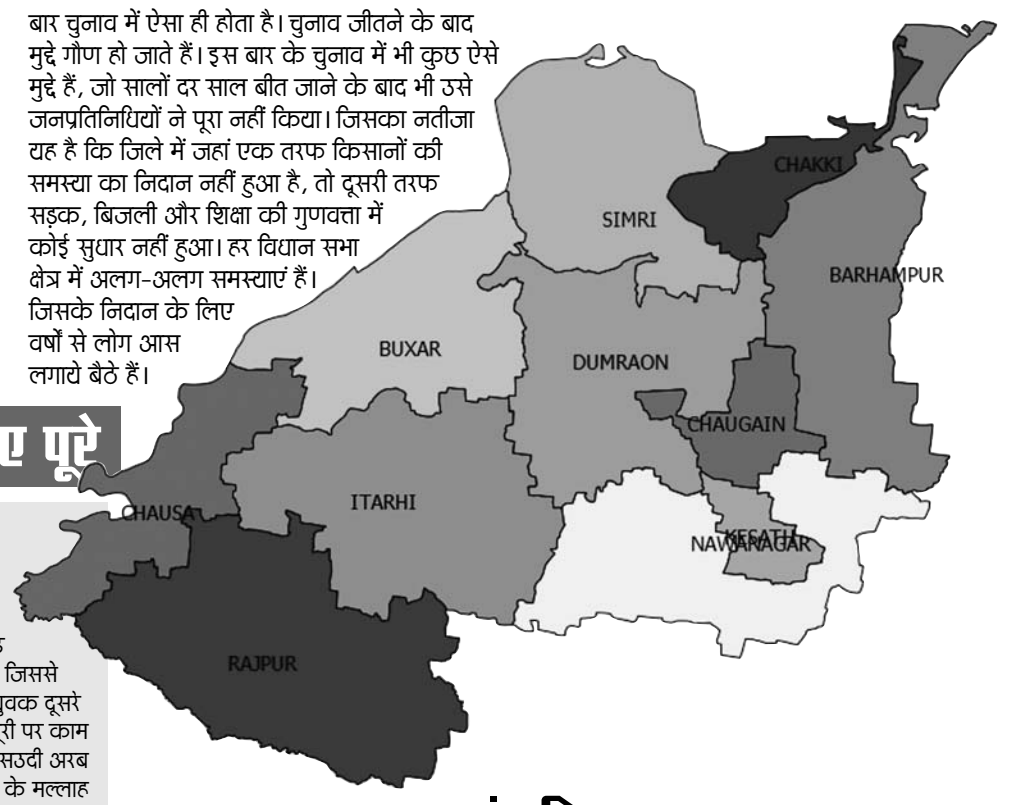


## मुद्दे जो अब तक नहीं हुए पूरे

### बक्सर विधान सभा

बक्सर विधान सभा क्षेत्र में दो प्रखंड हैं। बक्सर और चौसा। यहां बिजली, सड़क और स्वास्थ्य के अलावे औद्योगिक क्षेत्र का विकास नहीं होना बड़ा मुद्दा है। बिआडा की सैकड़ों एकड़ जमीन पर सरकार ने कोई ऐसा उद्योग स्थापित नहीं कराया, जिससे लोगों को बक्सर में ही रोजगार मिल सके। हर साल सैकड़ों युवक दूसरे राज्यों में रोजगार की तलाश में जाते हैं और महज कम मजदूरी पर काम करते हैं। बाहर में श्रम की कीमत कम होने के कारण लोग सउदी अरब भी जा रहे हैं। ताकि उनकी आर्थिक स्थिति सुधर सके। नगर के मल्लाह टोली के सुनील बताते हैं कि सूरत में काम करने गये थे पर वहां काफी कम राशि मिलता है, जिसके कारण अब वह सउदी जायेगा। यह एक युवक की हाल नहीं है बल्कि सैकड़ों बेरोजगारों की स्थिति है। स्वास्थ्य की स्थिति भी इतना ही खराब है। बक्सर जिला मुख्यालय है और शहरी क्षेत्र है पर यहां स्वास्थ्य सेवा के नाम पर कुछ भी नहीं। शहर के बीचों बीच स्थित पुराना अस्पताल में कोई सुविधा नहीं रहती है। शहर से दूर सदर अस्पताल को चले जाने से शहर के लोगों को काफी परेशानी होती है। रात्रि में यदि किसी की तबीयत खराब हो गयी तो सरकारी अस्पताल में आने लोगों को सोचना पड़ता है। बिजली आज भी कई गांवों में नहीं पहुंच सकी है। तो वहीं, बक्सर को अब तक पर्यटक स्थल भी नहीं बनाया जा सका। पिछले बार चौसा में स्थित गंगा पंप नहर कैनाल भले ही मुद्दा था पर इस बार यह मुद्दों में शामिल नहीं हैं। लेकिन, इसके अलावे कई मुद्दों से जनप्रतिनिधियों को सामना करना पड़ेगा।

### डुमरांव विधानसभा

डुमरांव विधानसभा क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या मलई बराज परियोजना का पूरा नहीं होना है। यह योजना इस क्षेत्र में करीब 25 वर्षों से अधर में लटका हुआ है। रोहतास और बक्सर के सीमा रूप सागर के पास काव नदी पर बांध बनाना था। बांध बनने से डुमरांव और भोजपुर रजवाहा में पानी आने लगेगा, जिससे इस क्षेत्र के किसानों को खेती में सिंचाई का लाभ पहुंचता पर ऐसा नहीं हो सका। पिछले वर्ष रूप सागर में योजना को मूर्त देने के लिए भूमि पूजन की गयी पर रोहतास के लोगों ने पूजा के दौरान ही हंगाम खड़ा कर दिया। जिसके बाद काम बंद हो गया। पिछले चुनाव में जदयू विधायक दाउद अली ने इस परियोजना को पूरा करने का वादा किया था। लेकिन, पांच वर्षों की सरकार में इस वादा को पूरा नहीं किया जा सका और आज भी इस क्षेत्र के किसान सिंचाई की समस्या से परेशान हैं। इसके अलावे सड़क और बिजली भी इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। क्षेत्र के लोगों का कहना है कि अब तक हर बार चुनाव में वोट देते आयें है पर किसी भी जनप्रतिनिधि ने आम जनता की सुविधाओं का कोई ख्याल नहीं रखा। इस क्षेत्र में डुमरांव, चौंगाई, केसठ और नावानगर प्रखंड शामिल हैं।

### राजपुर विधानसभा

राजपुर विधानसभा क्षेत्र का भी वहीं हाल है। इटाढ़ी और राजपुर प्रखंड से बने इस क्षेत्र में किसानों की स्थिति खराब रहती है। राजपुर पश्चिमी क्षेत्र में नहरों में पानी अंतिम छोर तक पहुंच ही नहीं पाता। ऐसे दो दर्जन से अधिक गांव हैं, जहां हजारों एकड़ भूमि पर सिंचाई के अभाव में खेती नहीं हो पाती। राजपुर के श्याम सुंदर सिंह, ज्योति सिंह, बबन पांडेय और अशोक सिंह बताते हैं कि कर्मनाशा नदी में कैनाल लगाने की परियोजना बनाई गई थी। पिछले वर्षों जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बक्सर आये थे तो वे स्वीकृति भी दिये थे। इसे बनाने के लिए 55 करोड़ रुपया का प्रोजेक्ट तैयार कराया गया पर अब तक इस पर काम नहीं लगा। जिससे किसानों की स्थिति ज्यों-कि-त्यों है। लोग बताते हैं कि केवल खाने पर धान उगाया जाता है। शेष जमीन परती रहती है। लोग इस भूमि पर केवल रबी फसल ही लगा पाते हैं। बिजली की भी समस्या इस क्षेत्र को लोगों को है।

### ब्रह्मपुर विधानसभा

ब्रह्मपुर विधानसभा सिमरी, चक्की और ब्रह्मपुर प्रखंड से बना है। यहां 150 फीट भूमि के नीचे आर्सेनिक पाया जाता है। सिमरी और ब्रह्मपुर के दियरा इलाके में आज भी लोग आर्सेनिक युक्त पानी पीने के लिए विवश हैं। लोग इस पानी को पीकर बीमार पड़ते हैं। चर्म रोग, हड्डी रोग और बीपी समेत अन्य रोगों से लगातार ग्रसित होते जा रहे हैं। लेकिन, इस क्षेत्र में पेयजल के लिए समुचित व्यवस्था नहीं की गयी। पहले से जो चापाकल लगे हैं, वह भी खराब पड़े हैं। वहीं, ब्रह्मपुर से तीन किलोमीटर उत्तर सपहीं गांव के पास गोकुल जलाशय है। यह गंगा की क्षारण है। जिसमें सालो भर पानी रहता है। पच्चीस किलीमीटर के दायरा में फैला हुआ है। यहां प्रवासी पंक्षियों का आना-जाना लगा रहता है। ग्रामीण इस जलाशय को झील बनाने की मांग करते हैं ताकि यहां पर्यटन स्थल स्थापित हो सके। लेकिन, लोगों के इस उम्मीद पर अब तक पानी ही फिरा है। यह भी इस क्षेत्र के लिए मुद्दा है।

### जनहित फ्रंट ने पीएम को सौंपा ज्ञापन

**सासाराम :** बीते 9 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रोहतास के सुअरा हवाई अड्डा मैदान में चुनावी सभा हुई. जहां प्रधानमंत्री ने अपने विरोधियों पर कडा प्रहार करते हुए बिहार में भाजपा के नेतृत्व में सरकार बनाने की अपील जिले की जनता से की. भाजपा द्वारा आयोजित इस चुनावी जनसभा से पूर्व हवाई अड्डा मैदान में ही शेरशाह विश्वविद्यालय की मांग सहित कई अन्य मांगों को लेकर सामाजिक संगठन जय हिन्द फ्रंट ने पीएम नरेंद्र मोदी को एक ज्ञापन सौपा. जिसमें मुख्य रूप से मांग युवाओं को उद्यम, किसानों को न्याय, भोजपुरी को 8वीं अनुसूची में शामिल करना था.चूंकि पूर्व में भाजपा के कई वरीय नेताओं के आश्वासन के बाद भी आठवीं अनुसूवी में नहीं शामिल किये जाने को लेकर भोजपुरी भाषियों में रोष भी प्रकट हो रहा है.जबकि पीएम मोदी स्वयं आरा-सासाराम सहित कई चुनावी सभाओं में जनता का संबोधन भोजनपुरी भाषा से ही करते रहे हैं.

## पेज एक का शेष

# थम गया प्रचार का शोर, मतदान सोमवार को

### चप्पे-चप्पे पर रहेगी सुरक्षा बलों की नजर

पहले चरण के चुनाव को शांतिपूर्ण कराने और किसी भी तरह के उग्रवादी या आपराधिक तत्वों से निपटने के लिए भारी पैमाने पर सुरक्षा बलों की तैनाती की गई है। शहरों, कस्बों और गांवों के अलावा सुदूरवर्ती इलाकों में भी सुरक्षा चाक-चौबंद की गई है। चुनाव पर हेलीकॉप्टर से भी नजर रखी जाएगी, जिसमें एसटीएफ के कमांडो सवार रहेंगे। नीचे जमीन पर अर्द्ध सैनिक बलों की करीब सात सौ कंपनियां मुस्तैद होंगी। चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाबलों को तैनात किया जा रहा है। नदियों में स्वचालित मोटरबोट की मदद से एसडीआरएफ के साथ सुरक्षाबल गश्त करेंगे। जरूरत पड़ी तो रेसक्यू ऑपरेशन के लिए भी इन जवानों को ले जाया जाएगा। नक्सलियों के चुनाव बहिष्कार के मंसूबे को नाकाम करने के लिए एंटी लैंडमाइंस गाड़ी के अलावा बड़े पैमाने पर मोटरसाइकिल से गश्त के इंतजाम किए गए हैं। दियारा व टाल के क्षेत्रों में मतदान केन्द्रों पर अर्द्धसैनिक बल मुस्तैद रहेंगे पर गश्त के लिए घुड़सवार पुलिस की भी तैनाती होगी।

### सोमवार को इन 49 विधानसभा सीटों पर होगा मतदान

1. कल्याणपुर (एससी), 2. वारिसनगर, 3. समस्तीपुर, 4. उजियारपुर, 5. मोरवा, 6. सरायरंजन, 7. मोहिउद्दीनगर, 8. विभूतिपुर, 9. रोसडा(एससी), 10. हसनपुर, 11. चेरिया बरियारपुर, 12. बछवाडा, 13. तेघडा, 14. मटिहानी, 15. साहेबपुर कमाल, 16. बेगुसराय, 17. बखरी(एससी), 18. अलौली(एससी), 19. खगडिया, 20. बेलदौर. 21. परबत्ता, 22. बिहपुर, 23. गोपालपुर, 24. पीरपैंती (एससी), 25. कहलगांव, 26. भागलपुर, 27. सुलतानगंज, 28. नाथनगर, 29. अमरपुर, 30. धोरैया (एससी), 31. बांका, 32. कटोरिया(एसटी), 33. बेलहर, 34. तारापुर, 35. मुंगेर, 36. जमालपुर, 37. सूर्यगढ़ा, 38. लखीसराय, 39. शेखपुरा, 40. बरबीघा. 41. रजौली (एससी), 42. हिसुआ, 43. नवादा, 44. गोविंदपुर, 45. वारसलीगंज, 46. सिकंदरा (एससी), 47. जमुई, 48. झाझा, 49. चकाई

### बीफ पर लालू तो आरक्षण पर भाजपा बैकफुट पर

हालांकि दादरी मुद्दे को लेकर उन्होंने पीएम मोदी और भाजपा पर करारा हमला बोलने में कोई कोताही नहीं दिखाई। आरक्षण को लेकर भाजपा पर उनका हमला भी बदूस्तर जारी रहा। बीफ और दादरी मुद्दे के बहाने नीतीश कुमार ने भी भाजपा और पीएम पर निशाना साधा। इस हफ्ते महागठबंधन और कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में राहुल गांधी ने भी चुनावी रैलियां की। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने अपने भाषणों में मोदी को निशाना बनाया और उनके डिजायनर कपड़ों और कपड़े बदलने पर तंज किए। बहरहाल, बिहार में चुनाव प्रचार को लेकर अटकलें लगाई जा रही थी कि इसबार चुनाव में विकास मुद्दा रहेगा। चुनाव प्रचार शुरू हुआ तो यह मुद्दा रहा भी। नीतीश कुमार ने जहां अपने कार्यकाल को आधार बनाकर सुशासन और विकास के नाम पर वोट मांगे वहीं पीएम नरेंद्र मोदी ने बिहार में विकासवाद का नारा दिया। हालांकि लालू प्रसाद आरएसएस प्रमुख के बयान को आधार बनाकर आरक्षण का मुद्दा उछाला, किंतु विकास की बातें उनके भी भाषणों में दिखाई पड़ती रही। लेकिन दादरी कांड के बाद जिस तरह बीफ के मुद्दे ने चुनाव प्रचार में इस बार जोर पकड़ा है, उससे लगता है कि बिहार चुनाव में बीफ और सांप्रदायिकता भी बड़ा मुद्दा बनेगा और दोनों मुख्य गठबंधनों की तरफ से इस बहाने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की कोशिशें भी तेज होंगी।

## बड़े दलों के बीच निर्दलीय व छोटे दल पड़ रहे बीस

**सासाराम :** सासाराम विधानसभा में आगामी 16 अक्टूबर को मतदान की तैयारी के साथ आम मतदाताओं की बेचैनी भी बढती चली जा रही है. एक ओर जहां दलीय प्रत्याशी अपने कैडर वोटों के साथ अन्य वोटरों में भी सेंध लगाने की जुगत में हैं तो वहीं जदयू से दो बार विधान पार्षद रहे और अब सासाराम में निर्दलीय प्रत्याशी कृष्ण कुमार सिंह भी चुनाव को रोचक स्थिति में पहुंचा दिये हैं. गौरतलब है कि पिछले 25 वर्षों से यहां भाजपा व बीच में एक बार राजद के अशोक कुमार विधायक रहे हैं. लेकिन इस बार परिवर्तन की बयार शायद दलीय प्रत्याशियों पर भारी न पड जाये. कारण कि कृष्ण कुमार सिंह के पक्ष में जातीय समीकरण के साथ मुसलिम मतों का ध्रुवीकरण होने की संभावना नजर आने से राजद-भाजपा प्रत्याशियों को मुश्किलों का सामना करना पड सकता है. वैसे भी चुनाव में कई छोटी जातियों के मत काफी प्रभावशाली होने की स्थिति में कृष्ण कुमार सिंह के लिए स्थिति काफी अनुकूल होती दिख रही है. वहीं प्रचार-प्रसार व जनसंपर्क में भी निर्दलीय प्रत्याशी अन्य पर भारी पडते दिखायी पड रहे हैं. वहीं दूसरी ओर समाजवादी पार्टी की टिकट पर चुनाव लड रहे युवा प्रत्याशी सत्येंद्र शाह भी युवा वोटरों के साथ अल्पसंख्यक, वैश्य और अन्य पिछडी जातियों में सेंध मारते नजर आ रहे हैं. इस स्थिति में सासाराम में ये दोनों प्रत्याशी भाजपा-राजद के प्रत्याशियों पर बीस दिखायी पड रहे हैं. वहीं दूसरी ओर पुराने उम्मीदवारों में से ही किसी एक को चुनने की मजबूरी से भी मतदाताओं को विकल्प के रूप में ये दोनों उम्मीदवार नजर आ रहे हैं.

# बिहार के चुनाव पर देश की नजरें टिकी

**राणा अवधूत कुमार**

**सासाराम :** राजनीति में उतार-चढ़ाव को यदि शिद्दत से महसूस करना हो तो बिहार की सियासी हलचल से ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान कोई और दूसरा नहीं हो सकता। पिछले 25 वर्षों के इतिहास खंगालने पर जितनी विभिन्नता यहां के राजनीति में देखने को मिलेगा उतना शायद किसी और सूबे में नहीं दिखेगा। यहीं कारण है कि बिहार के इस चुनाव पर पूरे देश की नजरें लगी हुई हैं। और हो भी क्यों न आखिर एक तरफ जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं चुनाव में मुख्य वक्त के तौर पर एनडीए प्रत्याशियों के पक्ष में चुनाव प्रचार-प्रसार करेंगे वहीं दूसरी ओर महागठबंधन के लिए लालू-नीतीश प्रचार की कमान संभाले हुए हैं। बिहार में इस समय विधानसभा चुनाव का रंग पूरी तरह से परवान चढ़ चुका है। वहीं हाइटेक युग के चुनाव प्रचार और बेतहाशा धनबल और बाहुबल का प्रयोग कई मायनों में यह अहसास कराता है कि आने वाले दिनों में चुनाव सामान्य लोगों के लिए तो बिल्कुल ही सहज नहीं होगा। योग्यता के बजाय धनपशुओं के सहारे संचालित होने वाले इन चुनावों में नैतिक, ईमानदार व समर्पित लोगों की बजाय कल-छल और बल के सहारे लोग चुनावी वैतरणी पार करेंगे वहीं जहां अनैतिक साधनों के सहारे भ्रष्टाचार को बढ़ाने वाले लोगों का सरकार व राजनैतिक दलों में प्रभाव बढ़ता जायेगा तो इस विपरित परिस्थिति में स्वच्छ लोग सियासत से किनारा कर लेंगे।

यह भावी राजनीति का तकाजा ही है कि लगभग सभी दलों में टिकट बंटने के बाद बगावत के सुर एक समान रूप से दिख रहा है। फिर चाहे वह भाजपा हो राजद हो या सत्ताधारी जदयू। बागियों की आंच से बिहार का कोई भी दल अछूता नहीं है।

वहीं टिकट बंटवारे में जातीय समीकरण के साथ ही पैरवी रसूखवालों के साथ राजनैतिक दलों के बड़े नेताओं के परिजनों को भी खूब भाव दिया गया। चाहे भाजपा के सीपी ठाकुर के बेटे की बात हो या सांसद अश्विनी चैबे के पुत्र को टिकट मिला हो वहीं राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद के दोनों बेटों तेज प्रताप व तेजस्वी यादव को विधानसभा का टिकट मिला तो रामविलास पासवान ने अपने सगे-संबंधियों को टिकट देने में कोई कोताही नहीं बरती। वहीं नयी पार्टी बनाकर बिहार की राजनीति में उतरे हम में पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी ने भी अपने रिश्तेदारों को टिकट देने में कोई कंजूसी नहीं किये।

जबकि रालोसपा में तो टिकट बंटवारे के बाद से कई लोग पैसे लेकर टिकट बेचने का आरोप शीर्ष नेतृत्व पर लगा रहे हैं। डेहरी विधान सभा में नामांकन के पहले दिन तक प्रत्याशी का चयन न होने की स्थिति में रालोसपा ने भाजपा नेता को टिकट दिया। जिसे लेकर पार्टी नेताओं में टिकट के प्रमुख दावेदार फतेह बहादुर सिंह और अकोढीगोला प्रखंड प्रमुख के अभिभावक ललन सिंह ने बगावत कर रालोसपा के खिलाफ विरोधियों को भरपूर मदद करने के साथ ही रालोसपा को हराने के लिए कमर कस कर तैयार हो चुके हैं। एनडीए जहां नरेंद्र मोदी के नाम पर चुनाव में उतर रही है वहीं महागठबंधन नीतीश कुमार के पिछले दस सालों में किये गये कार्यों और उनके करिश्माई चेहरा के सहारे चुनाव में विरोधियों को पस्त करना चाह रही है। रोहतास में तो सत्ताधारी जदयू के जिलाध्यक्ष ईश्वरचंद कुशवाहा ने तो टिकट बंटवारे से असंतुष्ट होकर पार्टी कमेटी से इस्तीफा देकर पूरी कमेटी ही भंग कर दी।

लेकिन गौर करने वाली बात है कि सोनिया गांधी या राहुल गांधी की अभी तक महागठबंधन के नेताओं के साथ संयुक्त चुनावी सभा को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है हालांकि लालू-नीतीश सहित तमाम महागठबंधन के बड़े नेता पिछले एक पखवाडे से चुनाव प्रचार में एडी-चोटी का जोर लगाये हुए हैं। वहीं भाजपा के प्रदेश नेता भी अपने सहयोगियों के साथ चुनावी पर्व को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। अहम बात है कि चुनाव से पूर्व ही जब प्रधानमंत्री ने आरा में बिहार के विशेष पैकेज की घोषणा किये तभी से बिहार सरकार और केंद्र सरकार के नुमांइदों के बीच एक वाकयुद्ध शुरू हो गया है।

जहां बिहार सरकार इसे पुराने फंड को ही रिपैकेजिंग कह रही है वहीं केंद्र सरकार इसे बिहार सरकार की मतदाताओं को भ्रमित करने की कोशिश कह रही है। हालांकि पूरे सूबे में चुनाव की रणभेरी बनजे के साथ ही सभी सियासी दल अपने तरीके से मतदाताओं को रिझाने और अपनी ओर करने के प्रयास में जुटी हुई है। बिहार के चुनाव पर वैसे तो पूरे देश की नजरें टिकी हुई है। एक तरफ एनडीए का कुनबा तो दूसरी और महागठबंधन वहीं लड़ाई को संघर्षशील और दिलचस्प बनाने के लिए छह दलों का तीसरा मोरचा भी बना है लेकिन गौर करने वाली बात होगी कि इस चुनाव में उनका क्या प्रभाव होगा। पप्पु यादव, तारिक अनवर, नागमणि, देवेंद्र यादव, रघुनाथ झा जैसे एक जमाने में बिहार के कद्दावर नेता रहे इन लोगों का बिहार की सियासत में कितना प्रभाव बचा है यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा लेकिन इतना तो तय है कि इन दलों से लड़ने वाले खिलाड़ी कई पुराने व दिग्गज खिलाड़ियों का खेल और चुनावी गणित जरूर बिगाड़ देंगे।

वहीं एनडीए को अपने एक वर्ष के कामकाज और शासन के आधार पर केंद्र के साथ बिहार में भी भाजपा सरकार बनाने के लिए प्रयासरत है। वहीं लालू-नीतीश-सोनिया का गठबंधन संघ-भाजपा के चेहरे को उजागर करने के साथ ही जदयू सरकार के कामकाज को सामने रख चुनाव में लोगों से अपने पक्ष में मतदाताओं को गोलबंद करते नजर आ रहे हैं। वैसे चुनाव के बाद सरकार किसकी बनेगी यह कहना तो अभी मुश्किल है लेकिन इतना तो तय है कि इस बार बिहार विधानसभा का चुनाव देश की दशा और दिशा तय करने वाला होगा। जिसमें बिहार के तीन बड़े नेताओं नीतीश कुमार, लालू प्रसाद यादव और सुशील कुमार मोदी की प्रतिष्ठा दावं पर लगी हुई है।

रोहतास जिले में भी चुनाव की तैयारी प्रशासनिक रूप से लगभग पूरी हो गयी है। एक अक्टूबर तक नाम वापसी के बाद जिले के कुल सात विधानसभा क्षेत्रों में कुल 104 प्रत्याशी मैदान में हैं। जिनमें सासाराम में 14, नोखा में 15, करगहर में सर्वाधिक 18, काराकाट में 12, डेहरी में 15, चेनारी में 13 तो दिनारा विधानसभा में कुल 17 उम्मीदवार चुनावी दंगल में ताल ठोंक कर उतर चुके हैं। जहां प्रमुख दलों के साथ निर्दलीयों की संख्या भी पिछले चुनाव की तरह काफी अच्छी है कुछ निर्दलीय उम्मीदवार तो दलीय प्रत्याशियों को भी कडी टक्कर दे रहे हैं। जिले में मतदान आगामी 16 अक्टूबर को होने वाले हैं।

चुनाव में कम समय होने से प्रत्याशी प्रचार-प्रसार में दिन-रात एक किये हुए हैं वहीं मतदाताओं की खामोशी चुनाव के रोमांच को और ज्यादा बढ़ा रहे हैं।

## आयोग की सख्ती के बावजूद नहीं थम रहा विवादित बयानों का सिलसिला

# लालू, शाह और ओवैसी पर एफआईआर दर्ज

**गणादेश न्यूज नेटवर्क**

**पटना :** बिहार विधानसभा चुनाव इस बार नेताओं के अमार्यदित और अशालीन बयानों के लिए भी याद रखा जाएगा। हाल यह है कि चुनाव आयोग की सख्ती होने के बावजूद नेता एक दूसरे पर व्यक्तिगत टिप्पणी करने से बाज नहीं आ रहे हैं। नेताओं के बयानों ने चुनाव प्रचार में कड़वाहट घोल दी है। विवादित बयान देने और अमर्यादित भाषण देनें में बड़े नेता भी पीछे नहीं हैं। आलम ये है कि चुनाव आयोग ने लालू और अमित शाह पर एफआईआर दर्ज की तो एआइएमआइएम नेता अकबरूद्दीन ओवैसी की गिरफ्तारी के आदेश जारी हो गए।

पिछले दिनों अपने चुनावी भाषमों में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह और राजद सुप्रीमों लालू प्रसाद यादव लगातार एक दूसरे के खिलाफ भड़काऊ भाषणों का इस्तेमाल करते रहे। अमित शाह ने लालू प्रसाद यादव को जहां चारा चोर कहा तो वहीं लालू प्रसाद ने अमित शाह को नरभक्षी बना डाला। चुनाव आयोग ने इन नेताओं के जिन भाषणों पर संज्ञान लिया उनमें अमित शाह द्वारा बेगुसराय के सिंघौल में 30 सितंबर को एक चुनावी जनसभा में दिया भाषण था। इस भाषण में अमित शाह ने लालू प्रसाद यादव को चारा चोर कहा था। जबकि चार अक्टूबर को सिकंदरा में आयोजित जनसभा में अमित शाह को नरभक्षी बताया था।

इसके अलावा एआइएमआइएम नेता अकबरूद्दीन ओवैसी ने किशनगंज के कोचाधामन की एक चुनावी जनसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शैतान, दरिंदा आदि कह डाला था। जिसके बाद उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। यही नहीं ओवैसी के भाषण को भड़काऊ और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचानेवाला मानते हुए किशनगंज के एसपी ने ओवैसी के गिरफ्तारी के आदेश भी दे दिया। अकबरूद्दीन ओवैसी एआइएमआइएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी के छोटे भाई और हैदराबाद से पार्टी के विधायक हैं और अपने भड़काऊ भाषणों के लिए हमेशा सुर्खियों में रहते हैं। भड़काऊ भाषणों और विवादित बयानों को लेकर नेताओं के खिलाल चुनाव आयोग द्वारा एफआईआर दर्ज तो हुई है, किंतु नेताओं के बयानों की तल्खी कम नहीं हुई है। 6 अक्टूबर को शेखपुरा की एक चुनावी रैली में लालू प्रसाद यादव ने पीएम मोदी पर हमला बोलते हुए कहा कि दादरी कांड में पीएम धृतराष्ट्र बन गए हैं। यही नहीं उन्होंने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि भाजपाई कुत्ता पालते हैं, जबकि बिहारी गाय पालते हैं । उधर पीएम मोदी ने 8 अक्टूबर को एक चुनावी रैली में लालू के शैतान वाले बयान पर तंज कसा था और कहा था कि उन्होंने (लालू) शैतान का ऐसे स्वागत किया जैसे कोई अपने रिश्तेदारों का करता है। नरेंद्र मोदी की इस टिप्पणी से नाराज लालू प्रसाद ने उन्हें ब्रह्म पिशाच कह दिया। बहरहाल जिस तरह से बड़े नेता अपने भाषणों में व्यक्तिगत और अमर्यादित टिप्पणी करने से बाज नहीं आ रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि चुनाव आयोग की सख्ती के बावजूद इस चुनाव में अमर्यादित बोलों का सिलसिला थमनेवाला नहीं है। सवाल है कि अगर ऐसा रहा तो चुनाव आयोग क्या करेगा। क्या एफआईआर दर्ज करने और संयम बरतने का निर्देश देकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेगा या कोई ठोस कार्रवाई भी करेगा।

### नेताओं को चुनाव आयोग ने संयम बरतने का दिया निर्देश

चुनाव प्रचार में बढ़ रही तल्खी और अमर्यादित भाषणों को देखते हुए चुनाव आयोग ने सभी राजनीतिक दलों को संयम बरतने का निर्देश दिया है। आयोग ने कहा है कि दल और उनके नेता व्यक्तिगत प्रहारों से बचें और एक दूसरे के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग न करें तथा ऐसी किसी गतिविधि और काम से बचें जो महिलाओं के सम्मान और प्रतिष्ठा के विपरीत समझा जाता है। चुनाव प्रचार के दौरान उच्च आदर्शों को बनाए रखने पर जोर देते हुए चुनाव आयोग ने इस संबंध में अपने 17 सितंबर के पत्र को पुनः जारी भी किया है।

## पार्यावरण को बचाने की अनूठी पहल

# कोपेनहेगेन से साइकिल चला पहुंचा गया

10515 किमी की दूरी तय की

**गया :** प्रदूषण के प्रति विश्व में जागरुकता लाने और पर्यावरण संरक्षण के लिए डेनमार्क के मार्टिन ने एक अनूठी पहल की। साइकिल से उसने डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन से बोधगया की दूरी नाप डाली। उसने लगभग 10515 किमी की दूरी साइकिल से तय की। बोधगया में उसका स्वागत सेंट एमजी विद्यालय परिसर में किया गया। एक सप्ताह गया-बोधगया का भ्रमण करने के बाद फ्लाइट से वापसी यात्रा करेगा। उसने गणादेश साप्ताहिक अखबार से अपनी यात्रा को साझा किया।

### किस-किस देश का दौरा कर पहुंचे

कोपेनहेगन से एक अप्रैल का यात्रा शुरू की। उसने अपनी यात्रा के दौरान जर्मनी, पोलैंड, रूस, बेलारूस, कजाकिस्तान, अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, चीन व नेपाल होते बिहार की सीमा में प्रवेश किया। डोभी होते वह सोमवार को बोधगया पहुंचा।

### ईंधन बचाने की दी नसीहत

यात्रा के दौरान मार्टिन ने गूगल मैप से मदद ली। अपनी साइकिल में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम लगवाया। बताया कि रास्ते में लोगों ने मदद की। कहीं परेशानी नहीं हुई। विभिन्न देशों की संस्कृति को जानने का मौका मिला।

पहली बार उसने साइकिल से इतनी लंबी यात्रा की। रास्ते में उसने लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए ईंधन बचाने की नसीहत दी। साइकिल का अधिक इस्तेमाल करने पर जोर दिया।

### बुद्ध के संदेश से आकर्षित

लगभग 32 साल का मार्टिन पेशे से छात्र है व हमेशा कुछ नया करने में भरोसा करता है। विश्व में बढ़ रहे प्रदूषण के प्रति जागरुकता को उसने यह पहल की। बोधगया के महत्व के बारे में उसे जानकारी थी। बुद्ध के शांति, प्रेम व करुणा के संदेश के बारे में जानता था। यही कारण है कि उसने बोधगया को डेस्टिनेशन चुना।

# फसलों की क्षति से किसान चिंतित

- सिसरा, सेरथुआ, कोल्वा बिगहा, जगदीशपुर, नन्दना, चिरी समेत कई गांवों के किसान हो रहे हैं परेशान
- किसान प्रशासन से इस बारे में ठोस कदम उठाने की कर रहे मांग

**घोसी (जहानाबाद):** प्रखंड क्षेत्र के कई गांवों के किसान नीलगायों के आतंक से परेशान हैं। इलाके के सरवां, सिसरा, सेरथुआ, कोल्वा बिगहा, जगदीशपुर, नन्दना, चिरी समेत दर्जनों गांवों में नीलगायों ने किसानों की रोजी-रोटी छीनना शुरू कर दिया है। नीलगाय फसलों को काफी नुकसान पहुंचा रही है।

इलाके के किसान इसे आतंक का पर्याय बताने लगे हैं। कुछ गांव के किसानों ने बताया कि नीलगायों ने फल्गु नदी के किनारे बसे सभी गांवों के लोगों की सुख-चैन छीन लिया है। हालांकि कई गांवों के किसान रात में थाली बजाकर इन्हें भगाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। लेकिन इसका कोई असर नहीं हो रहा। नीलगाय खेतों में लगी फसलों को रौंद बर्बाद कर रही है और किसान असहाय बने हैं।

कई लोग तो बचाव के लिए नये-नये तरकीब भी इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ ने खेतों में आदमी की शक्ल में पुतला बनाकर स्थापित कर रखा है तो कुछ घर-बार से ही सीटी बजा इन्हें हड़काने का प्रयास कर रहे हैं। किसान नरेश शर्मा, बाल्मिकी शर्मा, सुनील कुमार समेत कई किसानों ने जिला प्रशासन से नीलगायों के आतंक से छुटकारा दिलाने की मांग करते की है।

इन लोगों ने मांग की है कि इस दिशा में प्रशासन कोई ठोस प्रयास करे ताकि खेतीहर लोग राहत की सांस ले सकें कई बार तो आंखों के सामने फसल बर्बाद होते देख किसानों का गुस्सा भी फूट पड़ता है। लाठी-डंडों के सहारे बल पूर्वक इन्हें खदेड़ने का प्रयास भी करते हैं लेकिन फिर भी नहीं भागते।

# सेंट्रल टीम ने लिया मलेरिया प्रभावित गांवों का जायजा, आठ मरीज मिले पॉजिटिव

गया : पटना से आयी केंद्र सरकार के स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय की छह सदस्यीय टीम ने मलेरिया प्रभावित परैया, टिकारी व नगर प्रखंड के गांवों का जायजा लिया। टीम के सदस्यों ने मलेरिया प्रभावित परैया प्रखंड के सोलरा, टिकारी प्रखंड के दरियापुर व नगर प्रखंड के केशरू गांव में पीड़ित मरीजों की जांच की। कुछ लोगों के एमपी स्लाइलड भी कलेक्ट किये गये। इस दौरान आठ मरीज मलेरिया पॉजिटिव मिले। नगर प्रखंड के केशरू गांव में किट से ऑन द स्पॉट दो मरीजों में मलेरिया की जांच की गयी। दोनो पॉजिटिव पाये गये। अन्य 11 मरीजों के स्लाइड भी लिये गये. इसी प्रकार टिकारी प्रखंड के दरियापुर गांव में आठ लोगों के स्लाइड लिये गये। एक मरीज में लक्षण पॉजिटिव (पीवी) पाये गये। टीम ने परैया प्रखंड के सोलरा में 15 व परसावां में 31 स्लाइड लिये। दोनों गांव में किट से एक-एक की जांच की गयी। दोनों पॉजिटिव पाये गये। केंद्रीय टीम में लैब टेक्नीशियन राधे प्रसाद, प्रमोद कुमार, नंदकिशोर पंडित, राजेश पासवान, सुरेश कुमार व प्रमोद प्रसाद शामिल थे। गया के बुनियादी स्वास्थ्य निरीक्षक (बीएचआइ) अजय कुमार, अरविंद कुमार वर्मा, देवेंद्र नारायण व विनय कुमार सिन्हा भी साथ में मौजूद थे।

# भारत-नेपाल के रशिते की मिठास के लिए होगा आंदोलन

- अबतक आंदोलन में कम से कम 50 लोगों की हत्याएं हो चुकी
- भारत सरकार को बिना देर किये हस्तक्षेप करना चाहिए

**मुजफ्फरपुर :** नेपाल का तराई पिछले 55 दिनों से धधक रहा है। मेची से महाकाली के बीच देश की आधी आबादी (मधेशी मूल के 1.40 करोड़) निवास करती है। तराई में हर रोज धरना-प्रदर्शन, जुलूस व 15 दिनों से आर्थिक नाकेबंदी से पूरा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पर भारत सरकार का ध्यान नहीं जा रहा है। चुनाव बाद विकास व भारत-नेपाल के रिश्ते की मिठास के लिए भारत-नेपाल सीमा पर शांतिपूर्ण आंदोलन होगा। ये बातें पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ रघुवंश प्रसाद सिंह ने प्रेस वार्ता के दौरान कहीं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की कूटनीति विफल हुई है। इसकी वजह से मधेशियों को उनका हक नेपाल में बने नये संविधान में नहीं मिला है। इसके लिए अबतक चले आंदोलन में कम से कम 50 लोगों की हत्याएं हो चुकी हैं। सैकड़ों आंदोलनकारी हिरासत में रखे गये हैं। उन्होंने कहा कि 30 सितंबर को मेची से महाकाली तक 1155 किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला बनाकर आंदोलनकारियों ने रिकार्ड कायम किया है। मधेश विद्रोह के दौरान नेपाल सरकार व मधेशी दलों के बीच 2006-07 में 22 सूत्री मांग-पत्र पर समझौता हुआ था। अंतरिम संविधान में समझौता के प्रावधानों को शामिल किया गया था, लेकिन नये संविधान में उन प्रावधानों को हटा दिया। इन मुद्दों में केवल एक प्रदेश का सवाल नहीं है। जनसंख्या के आधार पर संसद में सीट का निर्धारण, समानुपातिक समावेशी प्रतिनिधित्व, निर्वाचन क्षेत्र का पुनरावलोकन दस वर्षों में करने, हिंदी को मान्यता, समान नागरिकता जैसी मांगें प्रमुख हैं। नेपाल सरकार ने जो संविधान पारित किया है, उसमें प्रमुख पदों के वे ही हकदार होंगे, जिनको वंशज के आधार पर नागरिकता मिली हुई है। भारत की ब्याही बेटियां व उनकी संतान दूसरे दर्जे के नागरिक होंगे। ऐसी परिस्थिति में भारत सरकार को पूरे मामले में बिना देर किये हस्तक्षेप करना चाहिए, जिससे मधेशियों को उनका पूरा अधिकार मिल सके। इस दौरान सीतामढ़ी के जदयू नेता नागेंद्र प्रसाद सिंह उपस्थित थे।

# 10,000 नियोजित शिक्षकों के वेतन पर ग्रहण

**दरभंगा :** जिले के दस हजार नियोजित शिक्षकों के वेतन पर ग्रहण लगा हुआ है। आगामी दुर्गा पूजा के पूर्व इन्हें तीन माह का बकाया वेतन मिल जाये यह कहना मुश्किल है। विभागीय आदेश से इन शिक्षकों को 1 जुलाई 15 से वेतनमान मिलना है. इसके पूर्व इनके नियुक्ति तिथि के आधार पर वेतन निर्धारण होगा। वेतन निर्धारण के लिए विभागीय दिशा निर्देश प्रखंड शिक्षा अधिकारियों तक पहुंची है, किंतु इस निर्देश को जब तक विद्यालय के प्रधानाध्यापक समझेंगे नहीं तब तक इसपर आगे की कार्रवाई संभव नहीं है। इस मामले में सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि विभाग जिस सीडी की बात कर रही है वह सीडी जबतक विद्यालय प्रधन के पास पहुंचेगी तब ही पता चल पायेगा कि किस शिक्षक को कितना वेतन मिलेगा। वर्तमान में स्थिति यही है कि सभी बीइओ को 15 पृष्ठों का प्रपत्र उपलब्ध कराया गया है। जिसमें उदाहरण के साथ प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित कोटि के शिक्षकों का वेतन दर्शाया गया है, किंतु जब विद्यालय में योगदान के आधार पर वेतन निर्धारण होगा, तब सभी शिक्षकों के वेतन की स्थिति भिन्न-भिन्न होगी। ऐसे में इस संबंध में स्थिति उधेड़बुन वाली देखी जा रही है। हालांकि विभाग ने वेतन मद का आवंटन की व्यवस्था करते हुए दुर्गा पूजा से पूर्व हर हाल में नियोजित शिक्षकों का वेतन निर्धारण करते हुए वेतन भुगतान सुनिश्चित करने को कहा है, किंतु चुनाव प्रशिक्षण आदि कार्य के व्यस्तता के कारण जिस प्रकार प्रखंड एवं जिला कार्यालय की स्थिति बनी हुई है, ऐसे में इसपर ध्यान किसी का नहीं है। वहीं विद्यालयों को अबतक इस संबंध में कोई दिशा निर्देश प्राप्त नहीं है। जबकि दूसरी ओर शिक्षकों में नये वेतन को लेकर काफी व्यग्रता देखी जा रही है। उनका कहना है कि अभी से ही इसपर आगे की कार्रवाई नहीं हुई तो दुर्गा पूजा की बात तो दूर, दीपावली व छठ पर्व के पूर्व वेतन मिल जाये तो बड़ी बात होगी।

# गैस की अवैध रिफिलिंग से उपभोक्ता परेशान

**सासाराम (ग्रामीण) :** शहर में रसोई गैस की कालाबाजारी धड़ल्ले से जारी है। जहां मन, वहीं गाड़ी खड़ी कर उपभोक्ताओं के बीच गैस सिलिंडर का वितरण शुरू कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं को कम बिचौलियों को ज्यादा गैस सिलिंडर मिलता है। यहीं नहीं, इन दिनों शहर के दर्जनों स्थानों पर अवैध तरीके से गैस की रिफलिंग भी की जा रही हैं।

इसके लिए दुकानदार ग्राहकों से मनमानी कीमत भी वसूलते हैं। हालांकि, अवैध तरीके से की जा रही रिफलिंग से किसी दिन बड़ी दुर्घटना हो सकती है। लेकिन, इस पर ना तो अधिकारियों की नजर है और न ही स्थानीय लोगों का।

ऐसी स्थिति में उपभोक्ता ठगे जा रहे हैं। सरकार के नियमों को एजेंसी चलाने वाले अनदेखी कर रहे हैं।

### कालाबाजारियों का है जोर

शहर में गैस को होम डिलेवरी करने का सिलसिला जारी है. लेकिन समय पर होम डिलेवरी नही हो पाता हैं। यहीं नहीं एजेंसी संचालक अपने सुविधा अनुसार दुकान के अलावें सार्वजनिक स्थानों पर गैस सिलिंडर लदी गाड़ियां खड़ी कर देते हैं वहीं से वितरण शुरू कर देते हैं। यह इसलिए होता है कि संचालकों द्वारा मन माने तरीके से गैस सिलिंडर बांटे जाते हैं। वहां से वितरण के नाम पर कालाबाजारी करने में भी सहूलियत होती है।

### जांच कर होगी कार्रवाई

कालाबाजारी की सूचना किसी उपभोक्ताओं ने नहीं दी है। रिफलिंग की भी सूचना नहीं है। मामले की जांच करायी जायेगी व नियम विरुद्ध काम करने वाले एजेंसियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी।

**अमरेंद्र कुमार, एसडीओ, सासाराम**

# स्वास्थ्य सेवा पर 56 करोड़ रुपये होंगे खर्च

**बिहारशरीफ :** जिले में चिकित्सा व्यवस्था पूरी तरह से सुदृढ़ होगी। वित्तीय वष 2015-16 में स्वास्थ्य व्यवस्था पर 56 करोड़49 लाख रुपये से अधिक खर्च किये जायेंगे। व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए राज्य स्वास्थ्य समिति के जिला स्वास्थ्य समिति को बजट प्राप्त हो गया है। बजट के मुताबिक स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन करने में जिला स्वास्थ्य समिति को सहूलियत होगी। जिले में नियमित टीकाकरण से लेकर पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम, मलेरिया, डेंगू पर रोकथाम करने पर राशि खर्च किये जायेंगे। बजट के मुताबिक पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम पर एक करोड़ 45 लाख 45 हजार 12 रुपये खर्च किये जायेंगे। जिले में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रम को सफल भी बनाया जायेगा। इसके लिए भी जिला स्वास्थ्य समिति को बजट प्राप्त हो गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा व्यवस्था और भी सुदृढ़ होगी। सीएस डा. सुबोध प्रसाद सिंह ने बताया कि जिले में योजनाओं का क्रियान्वयन करने में सहूलियत होगी।

# हत्या के मामले में तीन को उम्रकैद की सजा

**गोपालगंज :** हत्या के एक मामले में दोषी पाते हुए तीन लोगों को कोर्ट ने 18 वर्ष के बाद उम्रकैद की सजा सुनायी है। तीन और दोषियों को तीन-तीन माह की सजा सुनायी गयी है। बता दें कि एक सितंबर, 1998 को बरौली थाना क्षेत्र के सरफरा गांव निवासी परमात्मा महतो अपनी मां शिवकली देवी, चाची रामापती देवी एवं गंगाजली देवी के साथ घर के बाहर शाम के वक्त बैठे थे कि अचानक उसी गांव के देवेंद्र महतो, रामेश्वर महतो, परमेश्वर महतो, हकीम मियां, अली हुसैन एवं झूलन मियां ने जानलेवा हमला कर दिया। मारपीट की घटना में परमात्मा महतो की मां शिवकली देवी की मौत मौके पर ही हो गयी थी। बरौली थाने में प्राथमिकी की गयी थी। गोपालगंज व्यवहार न्यायालय के एडीजे-8 शोभाकांत मिश्रा की अदालत में यह मामला चल रहा था। अभियोजन पक्ष की ओर से एपीपी अशोक कुमार गुप्ता एवं बचाव पक्ष की ओर से रामनाथ साहू तथा प्रभुनाथ सिंह की दलीलों को सुनने के बाद कोर्ट ने देवेंद्र महतो, रामेश्वर महतो एवं परमेश्वर महतो को आजीवन सश्रम कारावास की सजा सुनायी, साथ ही दस हजार रुपये जुर्माना लगाया। जुर्माना नहीं देने पर छह माह की अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। धारा 323 के आरोपित हकीम मियां, अली हुसैन एवं झूलन मियां को तीन माह की सजा सुनायी गयी।

### बूढ़ी गंडक पर बना बांध ध्वस्त होने के कगार पर

**समस्तीपुर,पूसा :** मतदाताओं में जागरूकता लाने के लिए कल्यानपुर विधानसभा क्षेत्र के पूसा प्रखंड में मतदाताओं ने अपनी बात रखी। महमदा पंचायत में ग्रामीण जलापूर्ति योजना के तहत आम नागरिकों को शुद्ध पानी पीने के लिए लगभग पौने दो करोड़ की लागत से छह महीने पूर्व में बने नलकूप महज चंद दिनों का मेहमान ही साबित हुआ। नलकूप का पानी टैंक उद्घाटन के साथ ही रिसना शुरू हो गया है। पानी आपूर्ति के लिए कुछ एक परिवारों में नल देकर सिर्फ खानापूर्ति कर लिया गया है। लोगों ने कहा कि दलित महादलित व पिछड़ी जाति के आम जनता को इस व्यवस्था से वंचित कर दिया गया है। बूढ़ी गंडक में बने तटबंध मुजफ्फरपुर सीमा से पूसा-सैदपुर पुल तक ध्वस्त होने की कगार पर है। जिसे देखने वाला कोई भी जनप्रतिनिधि नहीं है। ऐसे में इस बार के चुनाव में जलापूर्ति व बांध मरम्मत की अहम समस्या से प्रत्याशियों को रू-ब-रू होना तय माना जा रहा है। हाल ही में करोड़ों की लागत से बने पंचायत सरकार भवन एवं विद्यालय के भूमि पर अवैध मिट्टी खनन किया जा रहा है।

# 83 लाख की लागत से बना परबलपुर का पंचायत भवन उपेक्षित

### शंकरडीह पंचायत मुख्यालय में 82 लाख 90 हजार रुपये खर्च कर बनाया गया

27 अगस्त 2013 को रखा गया था आधार शिला और दिसंबर 2014 तक निर्माण का था लक्ष्य

**शेखपुरा,परबलपुर :** प्रखंड के कुल छह पंचातयों में एक महज पंचायत सरकार भवन बना है। यह शंकरडीह पंचायत मुख्यालय में 82 लाख 90 हजार रुपये खर्च कर बनाया गया है, जो जन प्रतिनिधियों एवं सरकारी अधिकारियों की उपेक्षा का शिकार बना हुआ है। सरकार द्वारा ग्रामीणों के सहयोग करने के लिए इसे मिनी सचिवालय का रूप में बनाये गये हैं। इसका आधार शिला 27 अगस्त 2013 को रखा गया था और दिसंबर 2014 तक इसका निर्माण करने का लक्ष्य था। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कुंडलपुर (नालंदा) के यात्रा के दौरान दो अप्रैल 2015 को ऑन लाइन इसका उद्घाटन कर शिलापट्ट लगा दिया। परंतु अब तक इस पंचायत सरकार भवन में कार्यालय का काम तो दूर, एक भी जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी देखने तक नहीं आये हैं। इस साल 15 अगस्त को भी इस पंचायत सरकार भवन में किसी जनप्रतिनिधियों या अधिकारियों ने झंडात्तोलन नहीं किया गया। उक्त गांव के ग्रामीण प्रमोद सिंह, रंजीत कुमार मिश्र, साधु शरण सिंह, कमलनयन सिंह, गोवर्धन शर्मा आदि ने बताया कि आखिर यह भवन इतनी बड़ी राशि खर्च कर बनाया गया है, जो सिर्फ शोभा की वस्तु बन कर रह गयी है. गांव के आवारा कुत्तों का यह पड़ाव स्थल बना हुआ है. खिड़की, दरवाजा टूट रही है। भवन के अंदर झाड़ू तक नहीं लगता। जिससे वह भवन गंदगी से भरा पड़ा है। इस संबंध में बीडीओ सुरेन्द्र प्रसाद एवं मुखिया मांझी ठाकुर ने बताया कि कार्यालय को अब तक संवेदक द्वारा हैंड ओवर नहीं किया गया है और नहीं जिला प्रशासन की ओर से कोई लिखित आदेश आया है।

# भारत नेपाल संबंध : संदर्भ मधेश आंदोलन

अभी हाल ही में नेपाल प्राकृतिक आपदा से जूझते हुए तमाम तरह की परेशानियाँ झेल चुका है। फिलहाल अपनी राजनीतिक विफलता से उत्पन्न एक अन्य त्रासदी से दो-चार है। दरअसल नेपाल में संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना को लेकर वर्षों पुरानी कोशिशें रंग लाई तो 20 सितंबर को संविधान लागू तो हुआ लेकिन मुसीबतों का पिटारा भी खुल गया। मधेश, थारू, मुसलिम तथा कई अन्य जनजतियाँ अपने प्रतिनिधित्व तथा अपने अस्तित्व को लेकर आशंकित हो उठी। एक बड़ी राजनीतिक उपलब्धि नेपाली नागरिकों की आपसी तनातनी का कारण बनने लगी तो साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों पर भी दुष्प्रभाव डालने लगी।

**नेपाल** के कई प्रमुख राजनीतिक दलों का आरोप है कि भारत का बड़ा भाईपन हस्तक्षेपकारी है, नेपाल के आंतरिक मामलों में लेकिन सांविधनिक प्रावधानों को लेकर नाराज चल रहे मधेशी संगठन भारतीय समर्थन की भी आस लगाए बैठे हैं। यह कोई नई बात नहीं है कि नेपाली मधेस भारत के आपसी रिश्ते थोड़ा नरम थोड़ा गरम होते रहे हैं। हकीकत यह भी है कि भारत नेपाल के बीच रोटी-बेटी का संबंध भी है। जब मधेशियों का आन्दोलन चला तो वीरगंज, सुनौती, जोगवनी, महेंद्रनगर, गौर, नेपालगंज तक की लगभग 1700 किमी भारत-नेपाल सीमा उपद्रव से त्रस्त रही। पाँच हजार से अधिक ट्रक-टैंकर खड़े हो गए थे। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित हुई। अंतिम आदमी इसकी चपेट में आया। नेपाल ने इसे आर्थिक नाकेबंदी बताकर संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के खिलाफ गुहार तक लगा दी। भारत को भी उसने चेतावनी दी कि हम चीन से भी मदद की गुहार लगा सकते हैं। भारत ने जो सक्रियता मूकंप के बाद राहत कार्यों में दिखाई थी उसे अतिसक्रियता की तरह लिया नेपाल सरकार ने और विरोध के स्वर वहाँ भी उठे थे। हालांकि यह भी समझना होगा कि नेपाल में गृहयुद्ध की स्थिति को समाप्त करने, माओवदियों को मुख्यधारा में ले आने, संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना कराने में भारत की महती भूमिका रही है। लेकिन पिद्दले कुछ दिनों से जो कुछ खटास आई भारत नेपाल रिश्ते में इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही कह सकते हैं। ये दोनों देश सिर्फ पड़ोसी ही नहीं सांस्कृतिक रूप से भी काफी करीब रहे हैं। और सिर्फ इस आधार पर कि भारत ने नेपाल को नये संविधान से उपजे असंतोष को लेकर कुछ सुझाव-सलाह दिए, इसे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप माना जाए, यह उचित नहीं लगता। बेहतर हो कि सांविधानिक प्रवधानों के तहत जिस तरह से चालीस फीसद आबादी को दोयम दर्जे की नागरिकता बख्श दी गई है, उस विसंगति को दुरूस्त किया जाय। आन्दोलन से निपटने के नाम पर जैसी खूरेजी हुई, उससे बचा जा सकता था। लेकिन भारत की ओर से %बड़े भाईपन% से भी बचा जा सकता था। परस्पर विश्वास का माहौल कायम होता। भारत की यह कूटनीतिक दूरदर्शिता में अभाव की ओर इशारा करता है कि एक स्वाभाविक मित्र आशंका और संदेह के साथ देखने लगा। भारत सरकार को भी चाहिए कि वह शिकायतों को सुने, गम्भीरता से ले। उन्हें दूर करने की कोशिश करें तथा आपसी विवादों के अन्तर्राष्ट्रीयकरण से बचते हुए बातचीत करे और पारंपरिक-पारस्परिक संबंधों को बहाल करे।

## क्या है मधेशी आंदोलन, क्यों सुलग उठा इससे नेपाल ?

**कौन हैं मधेशी :** मधेशी मुख्य रूप से नेपाली निवासी हैं, जो नेपाल के दक्षिणी भाग के मैदानी क्षेत्र में रहते हैं। इस क्षेत्र को तराई क्षेत्र भी कहते हैं। इसी क्षेत्र को 'मधेश' भी कहते हैं। मधेश शब्द मध्यदेश का अपभ्रंश है। यहां की जमीन उपजाऊ है और आबादी भी घनी है। मधेशियों में इस बात का आक्रोश है कि उनकी उपेक्षा की जाती है।

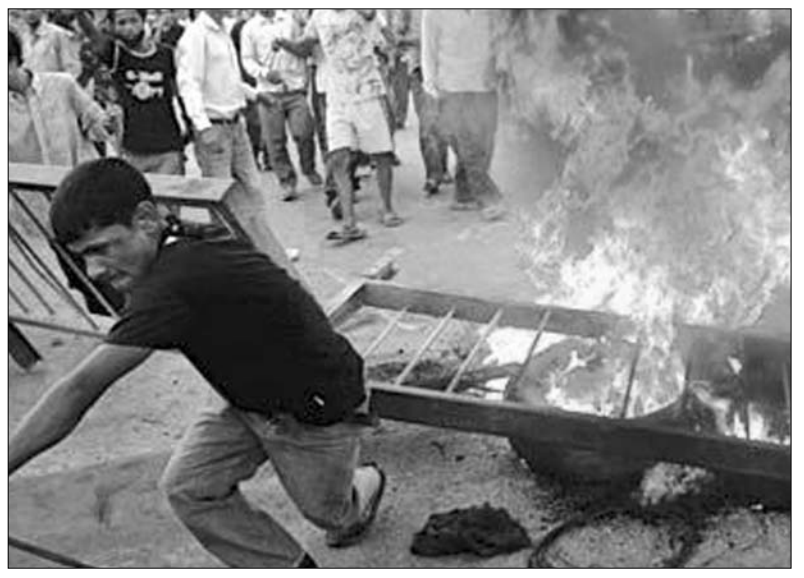

**क्यों आक्रोशित हैं मधेशी :** नेपाल में मधेशियों की संख्या सवा करोड़ से अधिक है। इनकी बोली मैथिली है। ये हिंदी और नेपाली भी बोलते हैं। भारत के साथ इनका हजारों साल पुराना रोटी-बेटी का संबंध है। लेकिन इनमें से 56 लाख लोगों को अब तक नेपाल की नागरिकता नहीं मिल पाई है। जिन्हें नागरिकता मिली भी है, वह किसी काम की नहीं क्योंकि उन्हें ना ही सरकारी नौकरी में स्थान मिलता है और ना ही संपत्ति में। यानी सिर्फ कहने को नेपाली नागरिक। इसी भेदभाव के खिलाफ मधेशी आंदोलन कर रहे हैं। नेपाल में पहाड़ की महज सात-आठ हजार की आबादी पर एक सांसद है लेकिन तराई में सत्तर से एक लाख की आबादी पर एक सांसद है! मधेशी नेपाल में एक अलग मधेशी राज्य की मांग कर रहे हैं।

**सात प्रांत के मॉडल का विरोध :** नेपाल के संविधान मसौदा समिति (सीडीसी) के अध्यक्ष कृष्णा प्रसाद सितौला ने रविवार को मधेशी की पार्टियों और राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी-नेपाल के हंगामे के बीच संविधान विधेयक पेश किया था। नए संविधान के अंतिम मसौदे में सात-प्रांत मॉडल के प्रस्ताव से नाखुश 11 गौण राजनीतिक दलों ने सीए बैठक का बहिष्कार किया था। बिजय कुमार गच्छदार के नेतृत्व वाली मधेशी जनाधिकार फोरम-लोकतांत्रिक ने संविधान सभा की बैठक का बहिष्कार किया। अब मधेशी की सभी क्षेत्रीय पार्टियां संविधान के मसौदे के खिलाफ खड़ी हैं।

# मधेश आन्दोलन में भारत की भूमिका

तुला नारायण साह

**नेपाली** राजनीति में भारतीय दूतावास की भूमिका एक बार फिर से विवादों में घिर गई है। इस बार मधेश आन्दोलन से यह विवाद फंस गया है। वीरगंज स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास के एक अधिकारी पर मधेशी नेताओं को आन्दोलन करने के लिए उकसाने का आरोप लगा है। इस पर विभिन्न दल और पक्षों की अपनी-अपनी राय है।

माओवादी के विस्तार से हताश हुए एमाले के युवा संगठन द्वारा लैनचौर पहुंच कर ही ज्ञापन पत्र सौंपा गया था। अपने जन्म के साथ ही कभी कोशी तो कभी गण्डक नदी में राष्ट्रीयता ढूंढने वाली एमाले टनकपुर तक आते-आते विभाजित भी हो गई थी। अभी इसी पार्टी के नेताओं को वीरगंज से राष्ट्रीयता पर खतरा महसूस होने लगा है। उधर माओवादी पार्टी इस घटना की गम्भीर जांच में जुटने का दावा कर रही है। जनयुद्ध काल के समय भारत में ही रहने वाले माओवादी नेताओं को क्या उस समय की बातें याद नहीं आ रही हैं? जिस तरीके से इस पूरे प्रकरण में माओवादी नेताओं की जल्दबाजी वाली भूमिका रही है, वह आने वाले दिनों में उन्हीं के लिए परेशानी का सबब बन सकती है। इस पूरे मामले में सुशील कोइराला की भी भूमिका ठीक नहीं रही। उनकी मौनता और तीन दल की बैठक में उनकी सहमति उनकी ही पार्टी नेताओं को नागवार गुजरी। कोइराला ने 2007 साल से लेकर हुए प्रजातांत्रिक आन्दोलन में भारत की भूमिका के बारे में कुछ भी कहने से कभी ब्रेक नहीं लगाया था। आजकल करीब करीब दैनिक रूप से होने वाली तीन दल की बैठक में किसी भी नेता ने इस बारे में चर्चा करने का दुस्साहस किया तो दिल्ली में हुए 12 सूत्रीय सहमति से लेकर अनमिन और संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार उच्चायोग तक की नेपाल से वापसी तक की घटना से उन्हें लज्जास्पद होना पड सकता है। तीन दल के नेताओं को तथा मधेशी मोर्चा को सत्ता में पहुँचाने के लिए भारत द्वारा सहयोग या असहयोग के विषय पर बहस करने से अच्छा है कि 'मधेश आन्दोलन के दौरान भारत का कितना सहयोग रहा है', इस पर बहस की जानी चाहिए या इसको बहस का विषय बनाया जाना चाहिए।

आज कल चर्चा में रहा वीरगंज के समाचार का कई पक्ष काफी रोचक है। नेपाली राजनीति और पत्रकारिता को समझने वालों के लिए यह कोई नया विषय नहीं है। पत्रकारिता और राजनीति सीख रही युवा पीढी की भावना पवित्र हो सकती है जिसका सम्मान हम सभी को करना ही होगा और हौसला आफजाई भी करनी होगी। लेकिन क्रान्तिकारिता की खोज में रहे लोगों के लिए माधव कुमार नेपाल और बाबूराम भट्टर्राई के प्रधानमंत्री बनने के पीछे का कारण और कारक भी तो पता लगाना होगा। सिर्फ मधेश के संदर्भ में इसकी चीर फाड़ होगी तो यह मधेश आन्दोलन के प्रति अन्याय होगा। विगत 60 वर्षों से मधेश ने काठमाण्डू से सिर्फ तीन मांगे की हैं। संविधान में मधेशी समुदाय की पहचान, राजनीति में समानुपातिक प्रतिनिधित्व और राज्य के सभी महत्वपर्ण निकाय सुरक्षा, प्रशासन, न्यायालय और बजट बंटवारे में अर्थपूर्ण सहभागिता। ये तीनों ही मांग मधेशी राजनीति की विवादरहित मांग है जो कि वास्तविक संघीयता के आने पर ही पूरी हो सकती है। इसके लिए मधेश में कई बार आन्दोलन हुआ है लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि इन आन्दोलनों में भारत ने कितना सहयोग किया है। इसका लेखाजोखा होना

जरूरी है। पंचायत काल में राजा महेन्द्र और वीरेन्द्र ने कभी भारत तो कभी चीन और कभी दोनों ही देशों के सहयोग में 30 वर्षों तक राज्य किया। फिर क्यूं मधेशी नागरिकों की नागरिकता की समस्या ज्यों की त्यों बनी रही? क्यों भारतीय विश्व विद्यालयों से पढ कर आए मधेशी छात्रों के स्तर निर्धारण अंक में कटौती की जाती थी? क्यों लोकसेवा में नेपाली भाषा की भार वृद्धि कर मधेशी जनता को प्रशासन में प्रवेश से अघोषित रूप से प्रतिबन्ध लगाया गया था? क्यों नेपाल के प्रहरी और सेना में मधेशी युवाओं की उपस्थिति अत्यन्त न्यून बनी रही? क्यों तत्कालीन पंचायत में मधेशी मूल के लोगों की उपस्थिति एकदम न्यून होती थी? इतने साल के आन्दोलन के बाद भी क्यों कांग्रेस और एमाले द्वारा शासित प्रजातांत्रिक काल में भी ये सभी समस्यां वैसी की वैसी ही बनी रही?

भारत की भूमि से जनयुद्ध लडने वाले माओवादी के साथ भारत के ही निर्देशन एवं मध्यस्थता में कांग्रेस एमाले सहित के 7 दलों ने दिल्ली में जाकर 12 सूत्रीय समझदारी की थी। बावजूद इसके क्यों मधेशी जनता को व्रिद्रोह करना पडा? यदि भारतीय नेताओं या भारतीय दूतावास द्वारा मधेशी के पक्ष में वकालत की जाती है तो क्यों 6 दशकों से अधिक की उनकी संघीयता की मांग का अन्तरिम संविधान में उल्लेख नहीं किया जाता है? यह कड़वी सच्चाई है कि 12 सूत्रीय दिल्ली समझदारी के बाद भी आज तक दलों के बीच जो भी सहमति समझौता हुआ है उसमें भारत की भूमिका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रही है लेकिन फिर भी मधेश के किसी भी मांग को पूरा नहीं होने दिया जा रहा है।

इतना ही नहीं 22 सूत्रीय और 8 सूत्रीय समझौते में भी भारत की भूमिका मधेश केन्द्रित न होकर काठमांडू सत्ता केन्द्रित ही रही है। भारतीय दूतावास में ही तैयार की गई 8 सूत्रीय समझौते में उल्लेखित सेना और संघीयता संबंधी सवाल आज कहां पहुंच गया है? माओवादी लडाकू भूमिका में अहम भूमिका निर्वाह करने वाला भारत नेपाली सेना में मधेशी जनता के प्रवेश पर हमेशा क्यों खामोश रहती है? संविधान सभा में निर्णायक शक्ति के रूप में उभरे मधेशी दलों को राष्ट्रपति निर्वाचन में अपने ही पूर्व घोषणा के विपरीत किसने मतदान करने का दबाब डाला था? प्रधानमंत्री के पद पर माओवादी की जीत सुनिश्चित हो जाने के बाद किसने राष्ट्रपति को विपरीत ध्रुव का होना चाहिए यह कहकर फोरम नेपाल के अध्यक्ष उपेन्द्र यादव पर दबाब बनाकर रामराजा सिंह के विरूद्ध मतदान करवाया था? क्या यह सब किसी से छुपा हुआ है? नहीं।

रही बात आज की तारीख में नेपाली राजनीति में मधेश आन्दोलन के बहस की। आज मधेशी जनता को क्या चाहिए? लगभग तैयार हो चुकी सहमति समझौता के संविधान में क्या क्या समावेश किया गया है? देश के शीर्ष नेताओं को अच्छी तरह से मालूम है। लेकिन संघर्षरत मधेश के द्वारा खोजे जा रहे अधिकार से विचलित पक्षों के द्वारा इसको आरोपित करने का प्रयास किया जा रहा है।

नए संविधान में अर्थपूर्ण संघीयता की मांग को समावेश कराने की मधेश की एकमात्र इच्छा है। मधेश ऐसी संघीयता चाहता है जिसमें उसको प्रदेश में स्वशासन की प्रत्याभूति हो सके और केन्द्र के शासन में साझेदारी की अनुभूति हो सके। लेकिन जिस तरीके की संघीयता तीन दल मिल कर लाना चाह रहे हैं उससे मधेशी जनता को कोई भी फायदा नहीं हो सकता है। कांग्रेस एमाले और माओवादी द्वारा लाई जाने वाली 11 प्रदेश की राय संरचना हो या फिर शासकीय स्वरूप और निर्वाचन प्रणाली इन में से किसी से भी मधेशी जनता को बहुत कुछ नहीं मिल सकता है। इससे मधेशी समुदाय को स्वशासन और साझेदारी शासन की प्रत्याभूति नहीं हो सकती है। लेकिन फिर भी विजय कुमार गच्छदार के नेतृत्व में रही मधेशी मोर्चा का सत्ता से चिपके रहना क्या इस में भारत का दबाब नहीं है?

यथार्थ यही है कि 12 सूत्रीय सहमति से शुरू हुई कांग्रेस एमाले और माओवादी की सह यात्रा की कार्यसूची में शान्ति प्रक्रिया की पूर्णता, सहमतीय सरकार का गठन और संविधान निर्माण कार्य ही था। भारत की भी प्राथमिकता सूची में यही है। भले ही लैनचौर का नेतृत्व परिवर्तन हुआ है लेकिन भारत की कार्यसूची में कोई भी बदलाव नहीं आया है। भारत की कभी भी इच्छा यही होगी कि काठमाण्डू की सत्ता पर कब्जा करने वाले दलों पर कैसे अपना प्रभाव जमाया जा सके और उन्हें अच्छी तरह से मालूम है कि काठमाण्डू की सत्ता पर मधेशी दल नहीं बल्कि तीन बडी पार्टियां ही बारी बारी से काबिज होती रहेगी।

नए बने सहमतीय संविधान के दस्तावेज में भी शासकीय स्वरूप पर माओवादी अध्यक्ष प्रचण्ड की तथा संघीयता के सवाल में कांग्रेस और एमाले की सुविधा का खास ख्याल रखा गया है। इसका प्रत्यक्ष उदहरण है 11 प्रदेश के गठन पर विजय कुमार गच्छदार और महन्थ ठाकुर की मौन स्वीकृति। राजेन्द्र महतो द्वारा इस्तीफा को जेब में ही लेकर चलना, अनिल कुमार झा द्वारा सहमति का पुतला दहन करने के बाद भी सरकार में जाने के लिए लालायित होते हुए मंत्री पद की शपथ लेना और महेन्द्र यादव तथा राजकिशोर यादव द्वारा इस्तीफे का नाम भी नहीं लेना इन सभी बातों से स्पष्ट होता है कि भारत मधेश में आन्दोलन नहीं बल्कि नेपाल में समय पर संविधान बने यह चाहता है। और इसी वजह से मधेशी दल के नेताओं को भी संविधान में ही मौन र्समर्थन देने की बात पर जोर दे रहा है। इन्हीं सब कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय महावाणिज्य दूतावास के अधिकारी द्वारा मधेश के आन्दोलन के लिए उकसाने की खबर में ना तो कोई सच्चाई है और ना ही भारत की इस प्रकार की कोई रणनीति है।

**( साभार- हिमालिनी डॉट कॉम )**

दुनिया के सारे धर्म और धार्मिक केंद्र आस्थाओं पर ही बहाल हैं। आस्थाएं उनकी जमीन भी है और पोषक स्रोत भी। इससे असुविधा भी नहीं होगी किसी को, लेकिन आस्था के हवाले से जब भारी जनसमूह किसी खास दिन को किसी खास जगह जुटने लगे तो असुविधाएं दरपेश आती हैं। नागरिक और प्रशासनिक व्यवस्थाएं दरकने लगती हैं। तमाम हादसे हुए दुनिया भर में। किसी भी धर्म, किसी भी देश, किसी भी समूह के साथ ऐसा हो सकता है। हज यात्रियों के साथ मक्का में ऐसा ही हादसा हुआ है अभी। हजारों की संख्या में हताहत हुए। कई भारतीय भी शिकार हुए इसमें। भारत भी ऐसी कई दुर्घटनाओं का गवाह रहा है। इस साल सावन में देवघर में हुआ हादसा, बिहार में छठ हादसा या दशहरा की भगदड़ हम अभी भूले नहीं। ऐसे अवसरों पर लोगों की आस्था, विश्वास और त्यौहारी मिजाज की वस्तुनिष्ठ मनोवैज्ञानिक पड़ताल और बहस में प्रस्तुत है इस बार...

# आस्था का जन सैलाब और हादसों की हकीकत

## आइए जानते हैं कि यह प्रशासनिक चूक है या भीड़ के रूप में हमारे विवेक की अनुपस्थिति भी

## नागरिकों की भी बनती है जिम्मेवारी

**आस्था** केन्द्रों पर उभड़ रही भीड़ के पीछे हमारी सुदीर्घ सनातनी परम्परा तो है ही इससे उपजा मनोविज्ञान भी है। भारत दरअसल तीर्थों का देश है और आस्था यहाँ बहुत भीतर तक यानी अन्तर्तम तक प्रतिस्थापित है। कहा जाता है कि समुद्रमंथन के बाद जिन चार जगहों पर अमृत की बूँदे गिरीं वे हमारे तीर्थो के रूप में ख्यात हैं। वहाँ कुंभ मेले लगते है। तीर्थ हमारे यहाँ दरअसल पाप धुल जाने के जरिए के रूप में भी ख्यात है। श्रद्धा का पारावार यह कि बिना किसी निमंत्रण के, बिना किसी विज्ञापन के लाखों लोग पहुँच जाते हैं। भारत की इस सनातनी परम्परा में अपनी धरती, अपनी जन्मभूमि के प्रति असीम श्रद्धा है। क्योंकि माता के जन्म दे देने के बाद धरती माता ही है जो आजीवन पोषण देती है, हमें जीवित रखती है। पूरे भारत और अपनी मानुभूमि के प्रति अपनी एकता अखंडता प्रदर्शित करने के लिए भी लोग मारी संख्या में देश के कोने-कोने से पहुँचते हैं।

यह बात है कि इस रेले में दो तरह के लोग होते हैं, एक तो ऐसे जो स्वयं की आस्था के वशीभूत है। और दूसरे जो विभिन्न उत्प्रेरणों के चलते वहाँ जाते हैं। जैसे उनको लगता है, कि हम नहीं जाएँगे तो धार्मिक क्रियाकलापों में हमारी भागीदारी नहीं होगी और हमारा धर्म सिकुड़ता चला जाएगा। यानी धर्म खतरे में है। ऐसी भावना भी काम करती है।

टब रही बात हादसों की तो उसके कुछ कारणों की पड़ताल करने हैं। एक तो यह कि दिमानु दिन बढ़ती जनसंख्या तथा होटलों इत्यारि के निर्माण से संकीण होते मंदिर परिसर और श्रद्धालुओं की भी संख्या का अनुमान प्रशासन ठीक-ठीक नहीं लगा पाता वहाँ के स्थानीय प्रंबधकों और स्वंसेवकों से भी चूक होती है, वे शायद ठीक से प्रबंध नहीं कर पाते होंगे। और जो प्रबंध किए भी जाते हैं। उन्हें अनुपालित भी ठीक से भी नहीं किया जाता। हादसे होते हैं। तो इसमें शिकार भी सीधेसादे और कम पढ़े-लिखे लोग ही अधिक होते हैं। अफवाहें भी फैलाई जाती हैं। भीड़ में अराजकता पैदा कर लूट-पाट करने वाले भी पहुँचते है। और जितनी ही अधिक भीड़ होगी ऐसे असामाजिक तत्वों की बन आती है।

आस्था के केन्द्रों पर इस उमड़ती भीड़ का एक नया फिनोमेना भी सामने आया है। एक नये वर्ग का उदय हुआ है जो आस्था प्रेम और विश्वास के रिश्ते से नहीं पिकनिक मौजमस्ती के भूत में जाता है। ये लोग भी अधिकाश शराब गांजे को भौजमरती का उपक्रम मानते है तो जो बाबाधाम, या अन्य धर्म स्थलों पर तथा कथित शिवभक्तों की अराजक टोलियाँ जाती हैं, वे भी बाबा की बूटी को अनिवार्य मानती है। तो नशे की हालत में दुर्घटनाएँ तो होंगी।

जब आस्थावान है तो यह जरूर मानेगें कि 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना' तो अपने बगल में शंकर-दुर्गा, महावीर के मंदिरों में पूजा-अर्चना करें तो भी उसी फल की प्राप्ति होगी। पैसा हम किसी एक बैंक में डालते है तो वह हजारों किमी दूर किसी दूसरे के एकाउंट में पहुँच जाता है तो श्रद्धा क्यों नहीं पहुँचेगी। इसलिए कहीं न कहीं मुझे लगता है कि इस तरह भीड़ के जुटने और अराजक हो जाने के पीछे अंधविश्वास भी एक कारण हो सकता है। मैने देखा है बहुत से लोग तीर्थ याता करते हैं खास तौर पर युवा तो वे भगवा धारण करके टेंजा में, बस में अपने साथी यात्रियों काफी असुविधाएँ पहुँचाते है। इससे कौन से देवता प्रसन्न होंगे?

इस बावत मेरा मानना है कि तीर्थ स्थलों पर यदि किसी एक खास दिन की अपेक्षा किसी भी दिन जाया जाए तो दर्शन भी विधिवत होगा। और भीड़ कम होगी, ऐसे हादसों की आशंका भी कम होगी। यह मात प्रशासन की नही हम नागरिकों की भी जिम्मेकारी है कि इसे सकुशल निर्विहन संपन्न कराने में अपनी भमिका अदा करें।

**डॉ. रामनाथ ओझा,**
**सामाजिक कार्यकर्ता**
**रामकथा प्रवक्ता**

## विश्वास और अंधविश्वास के बीच एक महीन पर्दा

**विश्वास** मनुष्य की केन्द्रीय भावानाओं में से एक है। एक खास स्तर का विश्वास हर मनुष्य को अपने जीवन को आगे बढ़ाने के लिए कहीं न कहीं समर्पित करना पड़ता है। जिसे मनोवैज्ञानिक बेसिक ट्रस्ट कहते हैं, उसके बगैर जीना संभव नहीं है। मगर जब धार्मिक संदर्भों में विश्वास की बात होती है तो ये ईश्वर, आत्मा या पवित्र पुस्तक जैसी पदार्थेतर के प्रति निष्ठा के रूप में अभिव्यंजित होती है। सभी धर्म विश्वास के चारों ओर एक महीन तारों से बुना लीला भूमि का निर्माण करते हैं, जहाँ रहकर कोई व्यक्ति धर्म के साथ अपने रिस्ते को जीवन देता है।

पश्चिमी अस्तित्ववादी दार्शनिक जैसे सार्त्र ने कहा कि चरम स्वतंत्रता मनुष्य को तनाव में डाल देती है। इसलिए वह किसी ईश्वर या किसी समूह के प्रति अपनी निष्ठा का निवेश कर देता है। पुराने समय में जब धर्मों के बीच या एक ही धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के बीच तर्क वितर्क होते थे तो उस धर्म या उस सम्प्रदाय द्वारा स्वीकृत ज्ञानमीमांसा के माध्यम से तर्कों के खण्डन-मण्डन किये जाते थे। इस हिसाब से अंधविश्वास एक नया शब्द है।

अंधविश्वास शब्द तेजी से चलन में तब आता है जब आधुनिक विज्ञान सोचने के एक विकल्प के रूप में मनुष्य को नई तर्क प्रणाली प्रदत्त करता है। यह अपने कुछ तयशुदा तरीकों के माध्यम से यह निर्धारित करती है कि अमुक अवधारणा वैज्ञानिक रूप से संगत है या नहीं। धर्म भी तब विज्ञान के साथ अपने रिश्ते को नयी तरह से परिभाषित करने की चेष्टा करता हैं। ईसाईयत का इतिहास देखें तो वहां चर्च प्रारम्भ में विज्ञान को अपनी संस्थागत ताकत के द्वारा कदम पीछे खींचने को लाचार करने की कोशिश करता है। मगर जब वह एतिहासिक कारणों से इसमें सफल नहीं हो पाता तो धर्म के साथ एक तनावपूर्ण मैत्री का रिश्ता बना लेता है और अपनी अवधारणाओं को विज्ञान सम्मत मानने, मनवाने की प्रतिस्पर्धा में संलग्न हो जाता है।

मगर विज्ञान के भी अपने अंधविश्वास हैं। कार्ल पॉपर ;ज्ञंतस च्वचचमतद्ध, फेराबें ;थ्मलतदंइदकद्ध, कुह्न ;ज्ञनीदद्ध जैसे विज्ञान के दार्शनिकों ने अपने अतिविवादित अध्ययन में लिखा है कि विज्ञान भी एक तरह का गल्प है। यहाँ इसके इस आशय को पकड़ना होगा कि अन्तत: अंधविश्वास जैसी किसी चीज से संदमससपदह करने के भी अपने खतरे हैं।

विश्वास और अंधविश्वास के बीच एक अंधी सी महीन रेखा नृत्य करती है और वह अपने कदमों को लेकर आश्वस्त नहीं होती कि वह कब इस रेखा के उस पार जायेगी और कब इस पार। अंधविश्वास के नाम पर हत्यायें हो सकती है तो अंधविश्वास के विरोध के नाम पर भी हत्यायें हो सकती हैं। आखिर हिरोशीमा और नागाशाकी के बम किसी अंधविश्वास ने नहीं बनाये थे बल्कि आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों के द्वारा निर्मित किया गया था।

इसलिए मैं कहना चाहूँगा कि विश्वास और अंधविश्वास या विश्वास एवं अंधविश्वास के बीच निर्णायक लकीर खींचना समकालीन मानवीय मत्तिस्क के द्वारा सम्भव नहीं है और इस सम्भवन न होने की अपनी जटिलतायें हैं।

**मनोज कुमार झा**
**युवा कवि एवं विमर्शकार**

## पूजा स्थलों के परिसर को विस्तृत करने की जरूरत

**विगत** कुछ वर्षो से यह देखने को प्राय: मिल रहा है कि धार्मिम स्थलों पर बहुत भीड़ इक्ट्ठा होने के कारण, लोग हादसों के शिकार हो रहे हैं। बहुत सारे लोग अपनी जान की गंवा बैठते हैं। अब तो ऐसा अक्सर प्रत्येक वर्ष ही कहीं न कहीं घटित हो रहा है। 2014 में छठ पूजा के अवसर पर, उससे पूर्व कुम्भ स्थान के अवसर पर, एवं इस वर्ष मक्का में जिस तरह के दुखद हादसे हुए, वे बहुत ही चिन्तनीय हैं। आज इस बात पर जरूर विचार किया जाना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा हैं? इसके कारण क्या हैं? क्यों पूजा स्थलों पर, विशेष अवसरों पर इतनी भीड़ इक्ट्ठा हो रही हैं? क्या आज का मनुष्य अधिक धार्मिक एवं नैतिक हो गया हैं? अथवा उसके भीतर की, आंतरिक असुरक्षा का भाव हैं जो उसे ईश्वर की ओर खींच रहा है। अगर आंतरिक असुरक्षा बढ़ी है, तो ऐसी हताशा की स्थिति में अंधश्रद्धा का बढ़ना और कर्म से विभुख होना स्वाभाविक है। इसी बात को लेकर विवेकानंद अमेरिका से वापस आने के बाद, भारत वासियों के लिए चिन्तित थे।

उन्हें यह भय या कि कभी भारतवासी इस तरह भाग्यवादी न बन जाएं कि कर्म के प्रति विभुखता पैदा हो जाय इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंनें यह कहा था कि अब और अधिक मन्दिरों-मस्जिदों की आवश्यकता नहीं है, भारत वासियों के लिए रोटो आवश्यक है। आज तो प्रत्येक घर में इलेक्ट्रानिक मीडिया भाग्यवाद, पाखण्ड और झूठे तंत्र-मंत्रों का प्रचार-प्रसार कर रहा है। बड़े-बड़े अभिनेता पाखण्डी साधु-महंतों, यंत्र-तंत्र-ताबीजों एवं सुरक्षा कबचों का विज्ञापन कर रहे हैं, प्रचार-प्रसार में लगे है। ऐसी स्थिति में कैसी दुनिया बनेगी? निश्चिय ही वास्तविक धर्म विलुप्त हो जायेगा और पूजा स्थलों पर अंधे, अंधविश्वासियों का मेडियाधसान ही होगा। शायद ऐसी ही स्थिति में खराब से खराब, बदतर व्यवस्थाओं एवं सरकारों का हित सुरक्षित रह सकता है। ऐसी ही प्रगति विरोधी व्यवस्थाओं के इंशारे पर डॉ नरेन्द्र दोभलकार गोविन्द पांसरे और प्रो0 कुलवर्गी की हत्याएँ हो रही हैं। जो लोगों अंधविश्वास के खिलाफ लड़ रहे हैं, वे भारे जा रहे हैं।

आजकी बढ़ती जन संस्था की स्थिति में सरकारों को पूजा स्थलों के परिसर को विस्तृत करने की भी जरूरत है जिसमें लोगों की भीड़ अंट सके। इसके साथ-साथ अंध श्रद्धा, अंध विश्वासों के विरूद्ध खड़ा होना, अधार्मिक होना नहीं है। राजा राम मोहन राय, विवेकानंद कबीर अंध विश्वासों के विरोधी थे, धर्मों के नहीं। तुलसी ने तो धर्म को परिभाषित करते, हुए साथ-साथ कहा कि "परहित सरिस धर्म नहीं भाई।" लेकिन इस आवाज को शायद ही अंधभक्त सुन सके?

**डॉ0 रवीन्द्र नाथ राय**
**वरिष्ठ समीक्षक एवं प्रोफेसर**
**हिन्दी विभाग वी.के.एस.यू.आरा**

# धार्मिक स्थलों पर दुर्घटनाएं, क्या ईश्वरीय आस्था पर भारी है अव्यवस्था का शैतान

धार्मिक स्थलों पर हादसे हमारी व्यवस्था पर सवाल खड़ा करते हैं। धार्मिक आयोजनों में बेगुनाहों की मौत अपने आप में एक बड़ा सवाल है। मक्का के शहर मीना में हुआ हादसा कोई नया नहीं है। धार्मिक स्थलों पर उमड़ी भीड़ के साथ इस तरह के हादसे दुनिया भर में होते हैं, लेकिन कोई मुकम्मल व्यवस्था नहीं हो सकी है, जिससे बेगुनाहों की मौत होती है। पवित्र शहर मक्का में यह हादसा उस दौरान हुआ जब दुनिया भर से हजयात्रा पर गए लोग शैतान को पत्थर मारने की रस्म अदा कर रह रहे थे। यात्रा का अंतिम दिन होने के कारण लोगों में पत्थर मारने की होड़ लगी थी, जिसके चलते यह हादसा हुआ। धार्मिक आस्था और विश्वास कभी-कभी हमारी व्यवस्था पर हावी पड़ता है।

### धार्मिक आस्था पर भारी पड़ रही है अव्यवस्था

व्यवस्था पर जहां धार्मिक आस्था भारी पड़ती है, वहीं इस तरह के हादसे होते हैं। हम धार्मिक मान्यताओं और रीतियों पर विवेक से सोचने की क्षमता खो देते हैं। उस वक्त हमारे लिए सबसे विषम परिस्थिति होती है। अगर पवित्र मीना शहर में शैतान को पत्थर मारने वाले हाजी अपनी बारी का इंतजार करते या थोड़ी-थोड़ी संख्या में हाजियों को शैतान को पत्थर मारने के लिए भेजा जाता तो संभवत: यह हादसा नहीं होता।

निश्चित तौर पर दुनिया के सारे मुल्कों की सरकारें धर्म के सवाल पर उदार बन जाती हैं। व्यवस्था का पालन कड़ाई से नहीं हो पाता है, जिससे इस तरह के हादसे दुनिया भर में होते हैं। हजयात्रा का आखिरी दिन होने से वहां 20 लाख से अधिक हाजी पहुंचे थे। पवित्र यात्रा का अंतिम दिन होने से भीड़ अधिक हो गई और शैतान को पत्थर मारने की लोगों में होड़ मच गई, जिससे ऐसा हुआ।

यह मक्का में दूसरा बड़ा हादसा था। 18 सितंबर को अल-हरम मस्जिद में क्रेन गिरने से 100 बेगुनाह हजयात्रियों की मौत हुई थी। भारत के भी कई हाजियों की मौत हुई है और लोग घायल हुए हैं। इस तरह के हादसे वहां कई बार हो चुके हैं। लेकिन सउदी सरकार ने इसे कभी गंभीरता से नहीं लिया।

### एक बड़ी चुनौती है धार्मिक उत्सवों में बेगुनाहों की मौत

अगर मीना में पत्थर रस्म अदायगी के दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए व्यवस्था की गई होती तो इस तरह का हादसा नहीं होता। एक के बाद एक हादसों के बाद भी सबक नहीं लिया गया। मक्का में 1990 में भगदड़ मचने के दौरान 1426 लोगों की मौत हुई थी, जबकि 1994 में पत्थर मारने की रस्म अदायगी में 270 लोगों की मौत हुई हो चुकी है। 1987 में ईरानी हाजियों और सउदी सरकार के बीच झड़प में 400 से अधिक लोगों को जान गंवानी पड़ी, जबकि 650 से अधिक लोग घायल हुए।

इसके अलावा 1997 में आग लगने से 340 से अधिक लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा और 1500 लोग घायल हुए। इससे यह साबित होता है कि मक्का और मीना शहर में 25 से 30 सालों कई बार हादसों के बाद भी इससे बचाव के कोई मुकम्मल इंतजाम नहीं किए गए जिससे हादसे-दर-हादसे होते रहे। धार्मिक उत्सवों में बेगुनाहों की मौत पूरी दुनिया के लिए चुनौती है। 1980 से 2007 तक दुनिया में भगदड़ की 215 घटनाएं हुईं। 7,000 से अधिक लोगों की मौत हुई उससे दुगुने लोग जख्मी हुए।

वर्ष 2005 में बगदाद एक धार्मिक जुलूस के के दौरान तकरीबन 700 लोग मारे गए। जबकि 2006 में मीना घाटी में हज के दौरान लगभग 400 लोगों की मौत हुई। लेकिन विदेशों में चिकित्सा और व दूसरी सुविधाएं त्वरितगति से उपलब्ध कराए जाने से अधिक से अधिक लोगों की जान बचाई जाती है, जबकि विकासशील देशों बेहतर मैनेजमेंट उपलब्ध न होने से मरने वालों की तादाद अधिक होती हैं।

भीड़ को नियंत्रित करने का दुनिया के पास पास कोई सुव्यवस्थित तंत्र नहीं है। देश दुनिया में जाए दिन इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, जिससे दर्जनों बेगुनाहों की जान चली जाती है। सरकार की ओर से लोगों को मुआवजा देकर अपने दायित्वों की इतिश्री कर ली जाती है। लेकिन सरकार या व्यवस्था से जुड़े लोगों का ध्यान फिर इस ओर से हट जाता है। यहीं लापरवाही हमें दोबारा दूसरे हादसों के लिए जिम्मेदार बनाती है।

### धार्मिक उत्सवों और आयोजनों में ही क्यों मचती है भगदड़

अखिरकार सवाल उठता है कि धार्मिक उत्सवों और आयोजनों में ही क्यों भगदड़ मचती है। क्यों निर्दोष लोग मारे जाते हैं। इस तहर के हादसे कई परिवारों को ऐसे मोड़ पर ला खड़ा करते हैं, जहां से वे पुन: अपनी दुनिया में नहीं लौट पाते हैं।

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिजास्टर रिस्क रिडक्शन में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, देश में 79 फीसदी हादसे धार्मिक अयोजनों में मची भगदड़ और अफवाहों से होते हैं। 15 राज्यों में पांच दशकों में 34 घटनाएं हुई हैं, जिनमें हजारों लोगों को जान गंवानी पड़ी है। दूसरे नंबर पर जहां अधिक भीड़ जुटती हैं वहां 18 फीसदी घटनाएं भगदड़ से हुई हैं। तीसरे पायदान पर राजनैतिक आयोजन हैं, जहां भगदड़ और अव्यवस्था से तीन फीसदी लोगों की जान जाती है।

**(साभार- एनडीटीवी)**

### हादसों के बाद शुरू होता है सियासत का खेल

इस तरह के हादसों के बाद लाशों पर सियासत शुरू हो जाती है। सत्ता और प्रतिपक्ष में आरोप-प्रत्यारोप का दौर प्रारंभ हो जाता है। विपक्ष सत्ता पक्ष को घेरता है। हादसे में अपने प्राण गंवा चुके लोगों के यहां पहुंच कर उनकी संवेदना से खेला जाता है। मीडिया को भी ऐसे हादसों से ब्रेकिंग न्यूज मिल जाती है। दो-चार दिन के चिल्ह-पों के बाद सब कुछ शांत हो जाता है। फिर इंतजार होता है एक और हादसे का, लेकिन घटना के पहले न तो हमारी संवेदनशील मीडिया और न ही स्वयंसेवी संगठन, और राजनैतिक दल आयोजन से पहले व्यवस्था का जायजा लेकर संबंधित खामियां सामने लाते हैं। बस केवल सरकार को घेर कर अपने दायित्वों की इतिश्री कर ली जाती है।

### धार्मिक भीरुता भी बनती है हादसों का कारण

भारत और दुनिया के गैर मुल्कों में धर्म और आस्था को लेकर लोगों का अटूट विश्वास है। धार्मिक भीरुता भी हादसों का कारण बनती हैं। हमारे पर अधिक हावी होने से हम एक भूखे, नंगे और मजबूर का सहायता के बजाय हम यहां दोनों हाथों से धार्मिक उत्सवों में दान करते हैं और अनीति, अधर्म और अमैतिकता का कार्य करते हुए भी हम भगवान और देवताओं से यह अपेक्षा रखते हैं कि हमारे सारे पापों धो डालेंगे, जिसका नतीजा होता है कि हादसे बढ़ते हैं और लोग बेमौत मारे जाते हैं। निश्चित तौर पर धर्म हमारी आस्था से जुड़ा है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम धर्म की अंध-श्रद्धा में अपनी और परिवार की जिंदगी ही दांव लगा बैठें। इसका हमें पूरा खयाल करना होगा। तभी हम इस तरह के हादसों पर रोक लगा सकते हैं। अगर दुनिया के लोग धार्मिक आयोजनों पर बेहतर प्रबंधन नीति नहीं बनाते हैं तो हादसों में बेगुनाह लोगों मरते रहेंगे और हम हाथ पर हाथ रख मौत का तांडव देखते रहेंगे। दुनिया भर के देशों को हादसों से सबक लेते हुए इस पर ठोस नीति बनाने की जरूरत है। तभी धार्मिक हादसों की भेंट चढ़ती जिंदगी पर विराम लगाया जा सकता है।

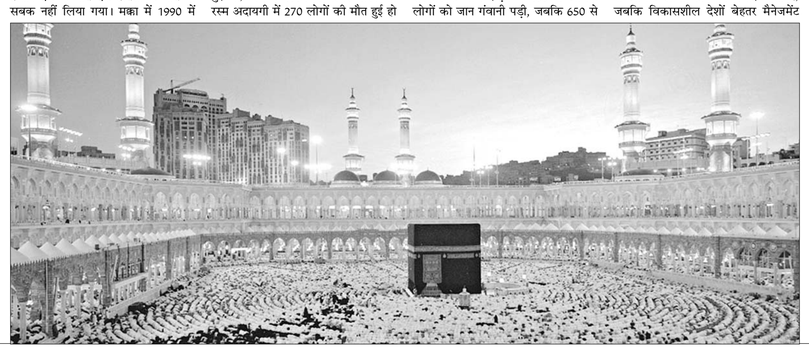

### भारत में 2000 से 2012 तक भगदड़ में मारे गए हैं 1823 लोग

नेशनल क्राइम ब्यूरो के अनुसार, देश 2000 से 2012 तक भगदड़ में 1823 लोगों को जान गंवानी पड़ी है। वर्ष 2013 में तीर्थराज प्रयाग में आयोजित महाकुंभ के दौरान इलाहाबाद स्टेशन पर मची भगदड़ के दौरान 36 लोगों अपनी जान गंवानी पड़ी। जबकि 1954 में इसी आयोजन में 800 लोगों की मौत हुई थी। उस दौरान कुंभ में 50 लाख लोगों की भीड़ आई थी। वर्ष 2005 से लेकर 2011 तक धार्मिक स्थल पर अफवाहों से मची भगदड़ में 300 लोग मारे जा चुके हैं। राजस्थान के चामुंडा देवी, हिमांचल के नैना देवी, केरल के सबरीमाला और महाराष्ट्र के मंडहर देवी मंदिर में इस तरह की घटनाएं हुई हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है जब अस्पताल प्रबंध भी हाथ खड़े कर देता है। उसके पास इमरजेंसी चिकित्सा का अकाल हो जाता है, जिससे चाहते हुए भी लोगों की जान नहीं बचाई जा सकती।

### बिहार-झारखंड के धार्मिक मेलों में हुए कुछ प्रमुख हादसे

**2 सितम्बर, 2012 :** नालंदा के राजगीर कुंड में स्नान के लिए श्रद्धालुओं के बीच मची होड़ के कारण भगदड़ हो गई, जिसमें दो श्रद्धालु की मौत हो गई, जबकि छह घायल हो गए।

**24 सितंबर 2012 :** देवघर जिले में ठाकुर अनुकूल चंद की 125वीं जयंती पर एक आश्रम परिसर में हजारों की भीड़ एकत्र हो जाने और सभागार में भारी भीड़ के कारण दम घुटने से नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि 120 अन्य बेहोश हो गए।

**19 नवंबर, 2012 :** पटना में छठ पूजा के दौरान एक घाट पर मची भगदड़ में 20 लोगों की मौत हो गई।

**3 अक्टूबर, 2014 :** पटना के गांधी मैदान में रावण दहन के दौरान मची भगदड़ में 32 लोगों की मौत हो गई थी।

**10 अगस्त 2015 :** देवघर के बेला बागान में सावन के मेले के दौरान भगदड़ मचने से 11 कांवड़ियों की मौत हुई और 40 लोग घायल हो गए। सावन के दूसरे सोमवार के दिन बैद्यनाथ मंदिर में दर्शन के दौरान सुबह 5:45 बजे भगदड़ मची थी।

### धार्मिक स्थलों पर हुए चर्चित हादसे

**15 जुलाई 1996 :** मध्यप्रदेश के उज्जैन में स्थित प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर के दर्शन के लिए उमड़ी भीड़ में 35 लोग उस समय मर गये थे, जब कुछ वीआइपी की पूजा के लिए सारे दरवाजे बंद कर दिये गये थे। कुछ श्रद्धालु फिसल गये, जिस कारण भगदड़ मच गयी और बड़ा हादसा हो गया।

**15 अगस्त 1996 :** हरिद्वार में सोमवती अमावस्या के मौके पर दुर्घटना में 30 श्रद्धालुओं की मौत हो गयी। हर की पौड़ी पर हुई यह दुर्घटना उस समय हुई जब अहले सुबह 20 हजार श्रद्धालु वहां जुट गये थे।

**25 जनवरी 2005 :** महाराष्ट्र के सतारा जिले के मंधार देवी मंदिर में हुए हादसे 291 लोग मरे गये। यह हादसा वहां सीढ़ियों पर नारियल फोड़ने से हुई। फिसलन के कारण मची भगदड़ के कारण हुआ था।

**3 अगस्त, 2006 :** हिमाचल प्रदेश के नैना देवी मंदिर में मची भगदड़ में लगभग 150 श्रद्धालुओं की मौत हो गई और 400 से अधिक लोग घायल हो गए।

**30 सितंबर, 2008 :** राजस्थान के जोधपुर में चामुंडा देवी मंदिर में नवरात्र के दौरान मची भगदड़ में 120 से अधिक लोगों की मौत हो गई, जबकि 200 लोग घायल हो गए।

**4 मार्च, 2010 :** उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में राम जानकी मंदिर में मची भगदड़ में 63 लोगों की मौत हो गई।

**14 जनवरी, 2011 :** केरल के सबरीमाला मंदिर में मची भगदड़ से 106 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई, जबकि 100 से अधिक लोग घायल हो गए।

**8 नवंबर, 2011:** हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे हर-की-पौड़ी घाट पर मची भगदड़ में 22 लोगों की मौत हो गई।

**10 फरवरी 20013 :** इलाहाबाद कुंभ मेले के दौरान इलाहाबाद स्टेशन पर हुए हादसे में 36 लोगों की मौत हो गयी थी, जबकि 39 लोग बुरी तरह घायल हो गये थे। यह दुर्घटना भी रेलवे पुल की रेलिंग क्षतिग्रस्त होने के बाद उत्पन्न भय से मची भगदड़ के कारण हुई।

**13 अक्टूबर, 2013 :** मध्य प्रदेश के दतिया जिले में रतनगढ़ हिंदू मंदिर के निकट भगदड़ में 89 लोगों की मौत हो गई, जबकि 100 से अधिक लोग घायल हो गए।

**18 जनवरी, 2014 :** मुंबई के मालाबार हिल में दाउदी बोहरा समुदाय के दिवंगत आध्यात्मिक नेता सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन के आवास के बाहर मची भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई थी।

**26 अगस्त 2014 :** मथुरा के बरसाना और देवघर के श्री ठाकुर आश्रम में मची भगदड़ से लगभग एक दर्जन श्रद्धालु मारे गए थे।

**24 जुलाई 2015:** आंध्र प्रदेश में राजमुंद्री पुष्कर घाट पर 12 दिन तक चलने वाले गोदावरी महा पुष्करम मेले में मची भगदड़ 29 लोगों की मौत हुई थी और 70 से ज्यादा घायल हो गए थे।

### मक्का में हज हादसा

24 सितंबर 2015 हज के दौरान मक्का से सटे मीना में हुए भगदड़ में 700 से ज्यादा हजयात्री मारे गए। इस हादसे में कम से कम 101 भारतीयों की भी मौत हो गई। हलांकि एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक सऊदी अरब के उप स्वास्थ्य मंत्री हमज बिन मोहम्मद अज्जुवैला ने हादसे में मरने वाले 4173 हाजियों की तस्वीर मिलने की बात कही है। मक्का में दो हादसा शैतान को पत्थर मारने की रस्म के दौरान भगदड़ मचने से हुई।

इससे पहले भी हो चुके हैं मक्का में कई हादसे जुलाई, 1990 में मक्का से मीना और अराफात की ओर जाने वाले पैदल यात्री के लिए बनी सुरंग अल मएशिम में हादसा हुआ जिसमें 1426 लोग मारे गए थे। मरने वालों में ज्यादातर लोग मलेशिया, इंडोनेशिया और पाकिस्तान के थे। मई, 1994 में शैतान को कंकड़ मारने के दौरान हादसा हुआ जिसमें 270 लोग मारे गए। अप्रैल, 1998 में हादसा भी जमेरात की पुल पर हुआ, जिस रास्ते से हाजी शैतान को पत्थर मारने के लिए जाते हैं। इस हादसे में 118 लोग मार गए और 180 लोग जख्मी हो गए। मार्च, 2001 में दो हादसा भी शैतान को पत्थर मारने के दौरान हुआ। इस हादसे में 35 लोग मारे गए। फरवरी 2003 में इस बार शैतान को पत्थर मारने के दौरान हुए हादसे ने 14 लोगों की जान ले ली थी। फरवरी 2004 में शैतान को पत्थर मारने के दौरान 251 हाजी मारे गए, जबकि 244 जख्मी हो गए।

इससे पहले इस साल 11 सितंबर को जुमे की शाम मस्जिद-ए-हरम में हुए क्रेन हादसे में 107 लोग मारे गए थे। दरअसल दो हादसा इसलिए हुआ क्योंकि मस्जिद के विस्तार का काम चल रस है और भारी बारिश के बाद लाल रंग की बड़ी सी क्रेन मस्जिद की दीवारें तोड़ती हुई जमीन पर आ गिरी जिससे 100 से ज्यादा लोग मारे गए। मस्जिद के जिस हिस्से में दो हादसा हुआ था वहां करीब एक हज़ार लोग मौजूद थे।

# हे राम...ये कैसा राष्ट्रवाद!!

**यह** भी एक विडंबना है कि उधर वे फेसबुक के अमेरिका स्थित ऑफिस में लिखते हैं - 'अहिंसा परमो धर्मः' और इधर उनके भक्त एक बूढ़े को बेवकूफाना अफवाह के चलते पीट-पीट कर मार देते हैं! वाह क्या गजब का तालमेल है भगवान और भक्तों के बीच!! उधर गांधी जयंती की पूर्वसंध्या पर एक सम्राट दिल्ली में सवा साल के मोदी को सवा सदी के गांधी के बराबर साबित करने के लिए बैनरों से शहर पाट देते हैं लेकिन यह प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है कि इनका यह राष्ट्रवाद है क्या और उसका अजीबोगरीब तरीके से ढाल बनाकर उपयोग क्यों हो रहा है। राष्ट्रपिता बापू आपके बनाए इस राष्ट्र में इस अजीब राष्ट्रवाद से हम शर्मिंदा हैं।

1991 में अपने लेख 'आवारा भीड़ के खतरे' में परसाई जी ने लिखा था कि 'दिशाहीन और हताश युवकों की भीड़ दिग्भ्रमित होती है, जिसका प्रयोग खतरनाक विचारधारावाले महत्वाकांक्षी लोग कर सकते हैं।' आज यही भीड़ लगातार बढ़ रही है। राष्ट्रवाद ने नाम पर इन्हें दिग्भ्रमित किया जा रहा है। परसाई ने सही कहा था कि भारत सिर्फ ढाई विचारधाराओं वाला देश है, कांग्रेस की गांधीवादी विचारधारा, कम्युनिस्ट विचारधारा और आधी सोशलिस्ट विचारधारा। आज इसी ढाई विचारों की सोच पर 'औना-पौना' छद्म राष्ट्रवाद हावी हो गया है। यह कांग्रेस की बहुत बड़ी हार है कि जिसने इतने साल शासन में होने के बावजूद गांधी और नेहरू के विचारों को पोषित नहीं किया। यह तो भला हो अन्य पश्चिमी विचारकों का जिन्होंने गांधीवाद को जिंदा रखा।

> वर्तमान राष्ट्रवाद का उभार एक छलावा है। घोर दक्षिणपंथ की पहली सीढ़ी है जो भयावह राह की ओर ले जाती है। सारा का सारा ढोंग से रचा छद्म व 'निर्देशित' राष्ट्रवाद है। हमें मुल्क की परवाह हो न हो, लोगों की परवाह हो न हो, लेकिन सरहद और देश के नक्शे की बहुत परवाह है। हमें जनता की बुनियादी जरूरतों की, उनकी तकलीफों की, उनके रिसते हुए जख्मों की, उन पर रोजाना ढाए जा रहे जुल्म की चिंता नहीं, जमीन और आसमान, पहाड़ और समंदर की चिंता नहीं, देश के अंदर-बाहर बहते खून की चिंता हो या न हो, तिरंगे की, वंदेमातरम की और जनगणमन की बहुत परवाह है।

वर्तमान राष्ट्रवाद का उभार एक छलावा है। घोर दक्षिणपंथ की पहली सीढ़ी है जो भयावह राह की ओर ले जाती है। सारा का सारा ढोंग से रचा छद्म व 'निर्देशित' राष्ट्रवाद है। हमें मुल्क की परवाह हो न हो, लोगों की परवाह हो न हो, लेकिन सरहद और देश के नक्शे की बहुत परवाह है। हमें जनता की बुनियादी जरूरतों की, उनकी तकलीफों की, उनके रिसते हुए जख्मों की, उन पर रोजाना ढाए जा रहे जुल्म की चिंता नहीं, जमीन और आसमान, पहाड़ और समंदर की चिंता नहीं, देश के अंदर-बाहर बहते खून की चिंता हो या न हो, तिरंगे की, वंदेमातरम की और जनगणमन की बहुत परवाह है। जनगणमन या वंदेमातरम को बुलंद आवाज में गाते हुए अपने तमाम धंधों को जारी रखने के लिए राष्ट्रवाद नामक पेट्रोल डाला जा रहा है।

हम फिक्रमंद हैं कि तिरंगे पर दस्तखत किए गए, लेकिन किसी का राष्ट्रवाद दादरी में गलत शकोशुबहा के चलते एक निरीह वयोवृद्ध की हत्या और बेटे की पिटाई पर हिलोरे नहीं लेता? सरहद की हिफाजत के नारे लगाना अगर राष्ट्रवाद है तो समर्थकों की अक्लो कूवत पर अफसोस हो रहा है। काश यही नारे सुलगते कश्मीर, लहूलुहान हिमालय, पूर्वोत्तर या मध्यभारत में कॉर्पोरेट के शिकंजे में कसमसाती इंसानियत के खिलाफ लगते। वाह फिर भी हम देशभक्त हैं। राष्ट्रवाद को आंच नहीं आती जब दुनिया के शीर्ष को छू रहे भारत जैसे सार्वभौम देश का मुखिया सरकारी दौरे पर प्राइवेट कंपनियों के निजी दफ्तर-दर-दफ्तर जा-जाकर देश का मजाक उड़ाए।

हम भले ही लिखने-पढ़ने के काबिल न हों लेकिन प्रवचन जारी रखना ही योग्यता का पैमाना बन गया है। किसी को फर्क नहीं पड़ता कि कौन बोल रहा है और कितना बोल रहा है। अब तो सत्ता भोग रहा मंत्री या पार्टी पदाधिकारी कोई विवादित बयान देता है तो पट से सफाई आती है कि यह तो उसकी निजी राय है लेकिन विपक्ष का अदना सा ब्लॉक स्तरीय रंगरूट भी कुछ बोला तो तपाक से उसे पार्टी की अधिकृत नीति घोषित करार दे दी जाती है। वे चाहें अपशब्द, मानुष-अमानुष जो चाहें कह सकते हैं, फतवा जारी कर सकते हैं लेकिन जवाब या खुलासा देने का किसी को कोई अधिकार नहीं! अब तो किसी को दूसरे की बोली में बात करने का भी अधिकार न रहा! अस्मिताओं से लैस हर भारतीय भाषा और बोली एक दूसरे के खिलाफ लामबंद हो चुकी हैं।

**साभार**
**सतीश मिश्र**

# पहले बुरी संगति और बुरे विचारों को त्यागें

**मनुष्य** जैसी संगति में रहता है, जैसे वातावरण में रहता है, जैसे विचार करता है, जैसा संकल्प करने लगता है, वैसा ही आचरण करता है और जैसा आचरण करता है, फिर वैसा ही बन जाता है। जिन बातों का बार-बार विचार करता है, धीरे-धीरे वैसी ही इच्छा हो जाती है, फिर उसी के अनुसार वार्ता, आचरण, कर्म और कर्मानुसारिणी गति होती है। स्पष्ट है कि अच्छे आचरण एवं चरित्र के लिए अच्छे विचारों को लाना चाहिए और इसके लिए अच्छी संगति और आसपास का वातावरण अच्छा होना चाहिए।

बुरे कर्मों को त्यागने से पहले बुरी संगति, बुरे विचारों को त्यागना चाहिए। जो बुरी संगति, बुरे विचारों का त्याग नहीं करता, वह बुरे कर्मों से छुटकारा नहीं पा सकता। कर्म का आधार विचार हैं। कितने ही व्यक्ति दुराचार, दुर्विचारजन्य दुर्व्यवहार आदि को छोड़ना चाहते हैं। मद्यपायी, वेश्यागामी व्यसनों के कारण दुःखी होता है। वह व्यसन को छोडना चाहता है। उपाय भी ढूंढता है, सत्पुरुषों के पास रोता भी है, छोडने की प्रतिज्ञा भी कर लेता है, परंतु जो सावधानी पूर्वक दुराचारों के बराबर चिंतन और मनन का परित्याग करता है, उसका स्मरण ही नहीं आने देता, विचार आते ही उसे काट देता है तो छुटकारा पा जाता है, परंतु जो बुरे विचारों को न छोडकर, उन विचारों में रस लेता रहता है, वह कभी बुरे कर्मों से छुटकारा नहीं पा सकता, वह बार-बार प्रतिज्ञा तोडता और पछताता है।

जो बुरी संगति, बुरे विचारों के समय असावधान रहता है। साथ बैठने से क्या होता है? विचार से क्या बुरा होता है? बुरा कर्म नहीं करूंगा, उसी के त्याग की मैंने प्रतिज्ञा की है, इस तरह अपने आपको धोखा देकर बुरे विचारों का रसपान करता रहता है, वह कभी व्यसन से मुक्त नहीं हो पाता है। इसीलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह किसी तरह बुरे विचारों को हटाए, उन्हें अपने आसपास कभी फटकने ही न दे। जिस समय बुरे विचार आने लगें, उस समय वह मन को दूसरी तरफ ले जाने का प्रयत्न करे। भगवान के ध्यान से, मंत्र जाप से, सत्संग से बुरे विचारों की धारा को तोड दे। इसी तरह अच्छे कर्मों के लिए पहले अच्छे विचारों को लाना चाहिए। अच्छे शास्त्रों का अभ्यास, अच्छे पुरुषों का संग करना और पवित्र वातावरण में रहने से अच्छे विचार बनते हैं। बुरे विचार और कर्म छूट जाते हैं। वैसे मन का सहसा संकल्प-विकल्प से रहित होना कठिन है, पर प्रयास मनोनिग्रह का चलता रहना चाहिए। बुरे विचारों को रोककर, सात्विक विचारों की धाराओं को बढ़ाकर, सात्विक वृत्तियों से तामसिकता काटकर धीरे-धीरे सात्विक वृत्तियाँ विकसित की जा सकती है। इसके लिए सुदेव, सुगुरु और सुधर्म का सान्निध्य, आश्रय और नियमित स्वाध्याय कारगर उपाय हैं।

**साभार**
**मदन मोदी**

# संगीन मोड़ पर आरक्षण का मुद्दा

**सरकारी** नौकरियों में आरक्षण का मुद्दा लगातार पेचीदा होता जा रहा है। सवर्ण युवको और छात्रों को पता नहीं कौन यह पट्टी पढ़ा रहा है कि भारत को छोड़कर किसी भी देश में आरक्षण की व्यवस्था नहीं है जबकि उन्हें यह पता होना चाहिए कि अमेरिका में तो आरक्षण सकारात्मक करवाई के नाम से कालो के लिए भारत की तुलना में बहुत व्यापक और बहुआयामी है लेकिन अब आरक्षण के औचित्य के लिए जो आधार प्रतिपादित किया जा रहा है वह दूरगामी तौर पर राष्ट्र के रूप में भारत राज्य में अलगाव की कई दरारे पैदा कर उसकी अखंडता को चटकाने की हद तक प्रभाव पैदा कर सकता है। गुजरात में हार्दिक पटेल ने अपनी बिरादरी को आरक्षण के दायरे में सामिल करने के लिए जो आन्दोलन छेड़ रखा है उसका विस्तार देश व्यापी हो चला है और हार्दिक पटेल के समर्थक अपनी बिरादरी के लिए जनसंख्या में उसके प्रतिशत के अनुपात में आरक्षण की मांग कर रहे है।

आरक्षण हो या अन्य व्यवस्थाएं नागरिक के रूप में पूरे देश को एक सूत्र में बांधने के लक्ष्य के विलोमानुपाती नहीं हो सकती जिस तरह से अमेरिका में किसी भी देश से आकर बसे लोगों में सबसे पहले अमेरिकन गौरव का बोध है वैसा ही भारत में लोगो में होना चाहिए। इंडियन प्राइड यानी यहां के लोगों को गर्व के साथ वी आर इंडियन का दम भरते देखने का अरमान संविधान निर्माताओं के दिलो दिमाग में था जिसे साकार करना देश की वर्तमान पीढ़ी का अनिवार्य फर्ज है लेकिन नौकरियों और विधाई संस्थाओं में जाति के अनुपात को तय करने से इस लक्ष्य का सत्यानाश तय है।

मूल रूप से इस देश के mindset में सिर्फ वायवीय दार्शनिक ऊचाईयां रही है लेकिन जमीनी व्यवस्था से उसने कोई सरोकार नहीं रखा एक अराजक व्यवस्था में यह देश जिया है जिसके कारण संविधान और क़ानून के राज की कोई चेतना उसके दिमाग में नहीं है। वी पी सिंह ने बहुत तार्किक बल के साथ मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू किया था लेकिन उन्होने ही गरीब सवर्णों के लिए भी आरक्षण का लालीपॉप लोगों को सबसे पहले दिया जबकि संविधान की व्यवस्थाओं के कारण ऐसा किया जाना कदापि संभव नहीं था। उन्होंने ही आरक्षण के क्षेत्र में लोगों की अराजक ग्रंथि को उकसाने का काम किया जिसकी लीक पर बढ़ने वाली प्रव्रतियां देश के लिए भस्मासुर बनकर सामने आई है।

भारत नाम का जो बेतुका गठजोड़ इतने लम्बे कालखंड तक नहीं दरका तो उसकी सबसे बड़ी वजह सहिष्णुता को मनोवैज्ञानिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की पराक्रमियों की सोच को माना जा सकता है यह दक्षता अभी भी कायम है तमाम राज्यों के अलगाववादी रवैये को केंद्र की सरकार अनसुना करती रहती है और एक दिन जोशीले अलगाववादी थककर शांत हो जाते है पर अब मंजर बदल रहा है सदियों के हिसाब किताब को आज ही निपटा देने की भावना पाले एक तबका जो जोश दिखा रहा है उससे या तो उन्ही के मन की पूरीं हो जाएगी और अन्यथा यह भी हो सकता है की गठबंधन के सारे जोड़ खुलकर बिखर जाए। बात चूकि आरक्षण की जा रही है तो इस सन्दर्भ को लेते हुए देखे तो सरकारी नौकरियों को जातियों के आधार पर बाटने की वकालत को कदापि मान्य नहीं किया जा सकता आरक्षण एक अंतरिम व्यवस्था है इसके लाभार्थी केवल बे लोग हो सकते है जो कि सामाजिक व्यवस्था की गलतियों के कारण भौतिक तौर पर राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे धकेले जा चुके है जहां तक केबल 10 वर्ष के लिए आरक्षण की व्यवस्था सविंधान में की जाने का प्रश्न है तो स्पष्ट देखा जा सकता है कि साजिशन इस आरक्षण के साथ मजाक किया गया।

कमला पति त्रिपाठी जब रेलमंत्री थे तो मोटे वेतन की वजह से उन्होने स्वीपर के पदों पर भी यह कहकर आरक्षित कोटे को ख़त्म कर सवर्ण भर्ती करा दिए थे कि अनुसूचित वर्ग में स्वीपर के काम के लिए भी उन्हें योग्य लोग नहीं मिले कई दशक तक यह सरकार की मर्जी थी कि उक्त बहाने करके आरक्षण को विफल कर सके यह तो बहुत बाद में हुआ कि रिजर्व सीटें खाली छोड़ दी जाएंगी अगर उनके लिये आरक्षित वर्ग से पर्याप्त उम्मीदवार नहीं मिल पाते लेकिन उन सीटों को जनरल किसी कीमत पर नहीं किया जायेगा। उक्त बेईमानी की देन है कि आरक्षण व्यवस्था अभी तक जारी है लेकिन जिस दिन आरक्षित वर्ग अपनी संख्या के अनुपात में नोकारियों में जगह बना लेता है उसदिन यह आरक्षण ख़त्म करना ही होगा एक सार्वभौम राष्ट्र के लिए यह अनिवार्य तकाजा है।

**साभार**
**केपी सिंह**

# साहित्यिक राजनीति और सामाजिक जवाबदेही

**पिछले** दिनों तब बड़ा हंगामा मचा था, जब एक नामी साहित्यकार ने अपने से काफी कम उम्र के एक मुख्यमंत्री का पैर पकड़ लिया था। बड़ा हो हल्ला मचा, खूब सारी बातें कही गयीं कि साहित्य तो राजनीति की दशा दिशा तय करता था, और अब वह राजनीति के चरणों में पड़ा हुआ है। यूं भी साहित्यकारों की बदहाल आर्थिक स्थिति के बारे में किस्से बड़े पुराने हैं और उनके बारे में कहा यही जाता है कि जैसे चिराग खुद को जला कर रौशनी देता है, वैसे ही साहित्यकार खुद को जलाकर समाज की पीड़ा महसूस करते हैं और उससे दूसरों को रूबरू कराते हैं। ठीक ही तो है, सत्ता की दलाली करके तमाम ऐश-ओ-आराम का भोग करने वाले भला समाज का दर्पण कैसे बने रह सकते हैं! उनके चेहरे में तो अपने मालिक की तस्वीर ही दिखती है, स्वाभाविक रूप से! खैर, इसके बाद थोड़ा आगे बढ़ें तो विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल से जुड़ा साहित्यिक विवाद सामने आया। पूर्व सेनाध्यक्ष और वर्तमान विदेश राज्यमंत्री वीके सिंह ने यह कहकर हंगामा बरपा दिया कि सम्मेलनों में साहित्यकार शराब पीने, खाना खाने और एक दुसरे की आलोचना करने आते हैं। इसी सम्मलेन में जब कई साहित्यकारों को आमंत्रित नहीं करने पर विवाद खड़ा हुआ तो सुषमा स्वराज ने साफ़ कहा कि यह भाषा का सम्मलेन है, साहित्यकारों का नहीं! बिचारे साहित्यकार खुद को अपमानित होते देखते रहे... अपनी कलम से समाज के दर्पण के रूप में कार्य करने का दम भरने वाले साहित्यकार खुद ही दर्पण में अपनी शकल देखने को मजबूर हुए! साहित्यकारों के मोदी सरकार से जलने भुनने का हाल ही में यह एक बड़ा कारण था, लेकिन तब उन्हें मौका मिला नहीं कि वह कुछ इफ या बट कर पाते... !!

खैर, एक सीमित नजरिये से देखा जाय तो केंद्र सरकार के खिलाफ साहित्यकारों को यह मौका जल्द ही मिल गया और उनमें से कुछ ने तो बाकायदा अपने पुरस्कार लौटाकर जता दिया कि उन्हें यूं ही नहीं लिया जाय... मशहूर लेखिका और जवाहरलाल नेहरू की भतीजी नयनतारा सहगल के बाद ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष अशोक वाजपेयी ने भी साहित्य अकादमी पुरस्कार लौटा दिया! जानकारी के अनुसार उन्होंने भारतीयों के जीवन और अभिव्यक्ति, दोनों की स्वतंत्रता के अधिकार पर हो रहे हमलों को देखते हुए पुरस्कार लौटाने का फैसला किया है।

हालांकि, यह सिलसिला आगे बढ़ता उससे पहले ही अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की भांजी नयनतारा सहगल और हिन्दी कवि अशोक वाजपेयी के कदम पर सवाल उठाते हुए कहा कि लेखकों को विरोध प्रदर्शन के लिए अलग रास्ता अपनाना चाहिए तथा स्वायत्त साहित्यिक संस्था का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए।

साहित्य का आज क्या स्तर रह गया है, यह किसी से छिपा हुआ तथ्य नहीं है। चेतन भगत जैसे लोग, जो हिंदी को रोमन में लिखने का बेतुका तर्क प्रस्तुत करते हैं और अपने उपन्यासों में मस्तराम का सुधरा संस्करण पेश करके वाहवाही लूट ले जाते हैं तो इसमें मठाधीश साहित्यकारों की असफलता ही छिपी हुई है। आज का युवा वर्ग अगर किताबों से दूर गया है तो इसका सीधा मतलब यही है कि उसे उसके हिसाब से कंटेंट नहीं मिल रहा है और साहित्यकार अपनी बनाई एक आभाषी दुनिया में रचना करने को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिसे कुछ पुरस्कार यह शासकीय वाहवाही मिल जाए। ऐसे में, बेवजह की राजनीति से साहित्य का और भी बेड़ागर्क होना तय है। नयनतारा और अशोक बाजपेयी को यह समझना चाहिए कि भारत की ऐसी मानसिकता एक दिन में नहीं हो गयी है, बल्कि पिछले 60 सालों की तुष्टिकरण और भ्रष्टाचारी राजनीति का भी इसमें काफी कुछ योगदान है। यूं भी भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, वित्तमंत्री अरुण जेटली, गृहमंत्री राजनाथ सिंह, अल्पसंख्यक मामलों से जुड़े मुख़्तार अब्बास नकवी इस घटना की कड़ी भर्त्सना कर चुके हैं। साथ ही साथ केंद्रीय गृह मंत्रालय राज्यों को यह निर्देश दे चुका है कि चाहे जो कोई हो, साम्प्रदायिक विद्वेष कि राजनीति पर ज़ीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाय तो दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाय! ऐसे में अगर वामपंथी विचारक कसम खा कर बैठे हैं कि मोदी को बदनाम करना ही है, तो फिर यही कहा जायेगा कि यह सरकार साहित्यकारों को खुश करने का जुगाड़ नहीं कर सकी, इसलिए... या फिर पिछली सरकार की वफादारी की कसम खाकर ये लोग... !! वैसे भी, उत्तर प्रदेश में मोदी की सरकार तो है नहीं, और अगर प्रदेश सरकार से हालात नहीं सम्हल रहे हैं तो वह केंद्र की मदद ले, राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करे, सुप्रीम कोर्ट जाये, आंदोलन करे... लेकिन, अगर उसका ही एक ताकतवर मंत्री संविधान की धज्जियां उड़ाता हुआ संयुक्त राष्ट्र संघ चला जाये तो उसकी मंशा पर प्रश्नचिन्ह स्वाभाविक ही है। ऐसी ही एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना, कन्नड़ चिंतक एमएम कलबुर्गी के हत्यारों की गिरफ्तारी में देरी होने से दुखी छह कन्नड़ लेखकों ने भी अपने पुरस्कार कन्नड़ साहित्य परिषद को लौटा दिए थे। कलबुर्गी की 30 अगस्त को उनके आवास पर अज्ञात लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

इस राज्य में भी कांग्रेस शासन में है तो उसे भी संवैधानिक विकल्पों का इस्तेमाल करना चाहिए था, अन्यथा साफ़ है कि भाजपा के साथ यह पार्टियां भी राजनीति करने में लिप्त हैं। इन सभी तथ्यों और राजनीति को देखते हुए, बेहतर होगा अगर तमाम साहित्यकार राजनीति करने के बजाय, अपने खोल से बाहर आकर समाज को दर्पण दिखाने वाले साहित्य की रचना करें... तब शायद मुजफ्फरनगर, दादरी जैसे अध्याय भारत को देखने ही न पड़ें। आखिर, ऐसी घटनाओं से समाज की मानसिकता का भी पता चलता है या नहीं..! अगर हां! तो फिर साहित्यकारों को भी निश्चित रूप से इसके लिए जिम्मेदारी लेनी चाहिए और तब उन्हें अपने सम्मान लौटाते समय यह कथन जोड़ देना चाहिए कि समाज में अपनी जिम्मेदारी न निभा पाने के कारण मैं / हम इस सम्मान के योग्य नहीं थे, इसलिए इसे वापस कर रहे हैं! यह होगी असल बात... आईने वाली, दर्पण वाली... वरना कहने को तो कुछ भी कह दो, लिखने को तो कुछ भी लिख दो ... मुंह है, कलम है! और करने को तो कुछ भी कर दो ... राजनीति है, सब जायज़ है... लेकिन, फिर इसे साहित्य न कहो, तुम्हें समाज की कसम!

**साभार**
**मिथिलेश कुमार सिंह**

# पाठकनामा

गणादेश का यह अंक पहले सेभी अच्छा है, सप्ताह भर की खबरों तथा अन्य चीजों के साथ चुनाव सामग्री स्तटीय है। वहस-तलव तथा एगोनामिकस विशेष सराहनीय है। साहित्य के पन्ने का स्वागत है। विशेष अवसरों के लिए सामग्री प्रकाशित करते की योजना बनाएँ।

**शशि प्रकाश, बक्सर**

अभिव्यक्ति की आजादी पर केन्द्रित 'चली है रस्म कि' अच्छा लगा। पहले से अच्छा अंक लगा । संपादकीय देकर आपने अच्छा किया।

**मंजीत त्रिवेणीगंज**

शिक्षा पर केन्द्रित 'विशेष' विशेष सराहनीय रहा केदारनाथ पाण्डेय तो जैसे भी शिक्षा के क्षेत्र में एक आदरणीय नाम हैं। उनको पढ़ना रोचक रहा।

**शंशाक शेखर, कैमूर**

गणादेश का अंक मिला। सामग्री स्तरीय है। महिलाओं और बच्चों पर भी सामग्री दे तो अच्छा लगेगा। स्थानीय खवरों के लिए जगह थोड़ा और बनाएँ।

**रमेश, दरभंगा**

गणादेश से उम्मीदे बंधी है। टीम को बधाई । इतिहास और संस्कृति से जुड़ी कुछ खवरे कुछ तथ्य प्रकाशित करें तो अच्छा।

**संध्या अग्रवाल, पटना**

**पाठक अपनी राय एवं आलेख निम्न पत्ते पर भेज सकते है।**
**कार्यालय-गणादेश डी० एम० आवास के सामने चरित्रवन, बक्सर, फोन नं०-06183-224005**
**Email:-ganadesh.patna@gmail.com**

# साप्ताहिक राशिफल | 11 अक्टूबर से 17 अक्टूबर, 2015

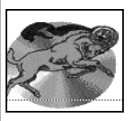

**मेष :** इस सप्ताह आप प्रेम संबंधों में सरलता से आगे बढ़ सकते हैं। आपके पांचवें स्थान में प्रेम का कारक ग्रह शुक्र आपको अनेक प्रकार के शुभ फल प्रदान करेगा। हालांकि, इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि आप संबंधों में अधिक उत्तेजित एवं उग्र न हों, क्योंकि इस स्थान में मंगल है।

**वृष :** सप्ताह की शुरुआत में संबंधों में थोड़ा सी सतर्कता बरतने की जरूरत रहेगी, विशेषकर विपरीत लिंगी जातकों के साथ संबंधों में। जो जातक प्रेम संबंधों में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनको सप्ताह के शुरुआती दो दिनों के दौरान बेहद सावधान रहने की जरूरत है।

**मिथुन :** इस सप्ताह मिथुन जातक अपने परिजनों से अधिक निकटता महसूस करेंगे। जातक अपने परिजनों की मांगों की पूर्ति करने के लिए प्रयास करेंगे। धन खर्च करने से भी पीछे नहीं हटेंगे। व्यावसायिक मोर्चे पर जातकों को भ्रमित करने वाली स्थिति से बचना होगा।

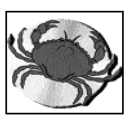

**कर्क :** आप कुछ नया करने के बारे में सोचेंगे इस सप्ताह। नौकरी परिवर्तन एवं व्यवसाय विस्तार के लिए शुरुआती दो दिन काफी अच्छे हैं। जो जातक बुद्धि संबंधित मामलों से जुड़े हुए हैं एवं किसी सामाजिक वाद संवाद समारोह में जाने की सोच रहे हैं, उनके लिए यह सप्ताह काफी अनुकूल है।

**सिंह :** थोड़ी सी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। आपके लग्न स्थान में शुक्र एवं मंगल की युति बन रही है, जो जमीन, ग्लैमर, रियल एस्टेट, कृषि इत्यादि में लाभ की संभावना को प्रकट कर रही है। हालांकि, दूसरी तरफ धन भाव में सूर्य, बुध एवं चंद्रमा के साथ राहु की युति आपके किए हुए कार्यों पर पानी फेर देगी।

**कन्या :** इस सप्ताह आपका ध्यान भोग विलास पर अधिक केंद्रित रहेगा। आप अपनी जीवनशैली को अच्छा बनाने के लिए धन खर्च करेंगे। मनोरंजन के पीछे धन खर्च करना बुरी बात नहीं है। लेकिन आंख मूंदकर धन खर्च करने से आपको निकट भविष्य में दिक्कत आ सकती है।

**तुला :** आपको थोड़ा सचेत रहने की जरुरत है। व्यय स्थान में सूर्य एवं बुध के साथ राहु की युति बन रही है और शुरुआत के पहले दो दिन चंद्रमा भी इस स्थान में रहेगा, किसी व्यक्ति के साथ आपका झगड़ा होने का संकेत दे रहा है। इस दौरान आपकी बातों से किसी को मानसिक चोट पहुंच सकती है।

**वृश्चिक :** इस सप्ताह आपको व्यावसायिक मोर्चे पर अच्छा लाभ होने की संभावना है। करियर में आप उल्लेखनीय प्रगति हासिल करेंगे। आपके कर्म स्थान में मंगल, गुरू एवं शुक्र की युति बन रही है, जो संकेत दे रही है कि आप हर कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे।

**धनु :** धनु जातकों के लिए सप्ताह की शुरुआत अधिक अच्छी नहीं है क्योंकि व्यवसायी जातकों को सप्ताह के पहले दो दिन कड़ी मेहनत के बाद अपेक्षा से कम नतीजे मिलेंगे। आप कार्यों में अधिक व्यस्त रहने के कारण परिवार पर कम ध्यान देंगे। सरकारी एवं कानून से जुड़े कार्यों में आपको अवरोधों का सामाना करना पड़ सकता है।

**मकर :** यह सप्ताह आपके लिए थोड़ा सा कठिनाई भरा रह सकता है। व्यवसायिक मोर्चे पर सावधान रहने की जरूरत रहेगी, क्योंकि बड़े खर्च की संभावना प्रकट हो रही है। पिता के भाग्य से हाल में लाभ होने की उम्मीद नहीं करें।

**कुंभ :** इस सप्ताह आप अपने भीतर एक नई शक्ति का संचार होता महसूस करेंगे। आप वैवाहिक जीवन में अधिक से अधिक रुचि लेंगे। यौन संबंधों का आनंद लेने के लिए भी उत्सुक रहेंगे। सप्ताह के शुरूआती दो दिनों के दौरान धार्मिक मामलों के प्रति रुचि बढ़ेगी।

**मीन :** यह सप्ताह व्यवसायिक मोर्चे एवं नौकरीपेशा जातकों के लिए काफी अच्छा नजर आ रहा है। हालांकि, पारिवारिक जीवन एवं जीवन साथी के साथ किसी न किसी बात को लेकर तनाव रह सकता है। जीवन साथी को आप से काफी उम्मीदें हो सकती हैं।

# समय से सवाल करते गीत : संदर्भ-शैलेन्द्र

प्रो. अरूण कुमार

**शैलेन्द्र** प्रगतिवादी आन्दोलन के दौर के तन्हा कवि थे जो नारों और प्रचार में भी गंभीरता और व्यंग्य का चोखापन पैदा करते रहे। प्रगतिवाद को नारों का पर्याय या उसका विकल्प भी समझा जाता रहा है। उस दौर में यह चर्चा थी कि सस्ती कविता प्रगतिवाद में टिक जाती है लेकिन गैर सस्ती या गंभीर के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है। प्रगतिवाद पर हल्के तरीके से यथार्थ वादी होने का आरोप लगा था। उस दौर में यथार्थवादी होने को कलाविहीन समझने का भी फैशन था। यथार्थ-चित्रण का सीधा मतलब लगाया गया था कि जो देखा-सुना, वही यथावत यथार्थ चित्रण है। या सीधे-सरल तरीके में कहें, तो जिसमें कल्पना की बारीक उड़ान न हो। शैलेन्द्र इन दोनों दायरों से किनारा करते हैं। अपने समय के यथार्थ को देखे-सुने से परे जा कर रखते है। आजादी हासिल होने वाली थी, यह खुशी तो थी लेकिन इसके साथ-साथ दु:ख की मिलावट भी थी। वह सुख-दु:ख वाली प्रकृति नहीं बल्कि नकली-असली की मिलावट थी वह।

> हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्शहमारा नारा है, ये बोल आये दिन आन्दोलनों की पूँजी बन चुके हैं। प्रगतिवादी भी इसे नारे की कविता मानते हैं।

शैलेन्द्र इस को अमिशाप समझते हैं आजादी का, महँगी ने हमें निगलने को दानव जैसा मुहँ खोला है (हर जोर जुल्म की टक्कर में)। यह एक कविता आज की तारीख में इतनी लोकप्रिय हुई कि नारे लगाने वाले शैलेन्द्र का नाम भूल चुके हैं। **हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्शहमारा नारा है,** ये बोल आये दिन आन्दोलनों की पूँजी बन चुके हैं। प्रगतिवादी भी इसे नारे की कविता मानते हैं। इस कविता में सादृश बिम्ब विधान मिलते हैं। ''महँगाई'' और ''दानव'' सादृश हैं जब काले-गोरे बनियों में चलती थीं सौदे की बातें, बनिया काले-गोरे से परे है। वह पहले बनिया हैं। बराक हुसैन ओबामा के अश्वेत होने के बावजूद अमेरिक के अश्वेतों को न्याय नहीं मिल रहा है। दूसरी कविता है तू जिन्दा है तो.... इस कविता में बिम्ब विधान इसकी गीतात्मकता को और बढ़ा देता है, तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूम कर।

युवा गज़लकार कुमार नयन (खयाल-दर-खयाल/2012) की एक गज़ल है **इश्तहारों का नगर लगता हैं ये/सिर्फ नारों का नगर लगता है ये/गंध आती है पसीने की यहाँ/कामगारों का नगर लगता है** ये। कुमार नयन के यहाँ उर्दू गज़ल का एक अनुशासन है। शब्दों का प्रवाह बहुत कम जगहों पर रूकता है आजादी के दौर में नारों में यथार्थ दिखता भी था और अब इनके भीतर ऊपर का यथार्थ झाँकता है। नारों के पहले सिर्फ बिशेषण बहुत कुछ कह गया है। ''सिर्फ'' में जोर दबाव है। आम फहम में कहा जाता हैं, सिर्फ ऐसा हैं, सिर्फ वैसा है। कुमार नयन के यहाँ ''सिर्फ'' छोटे हरफों में पूरे नगर को समेटे हुए है। उन की पीढ़ी को जमीन-आसमान बेरूखे-से मालूम पड़ते हैं। शैलेन्द्र के समय में यही स्थिति नहीं थीं। उम्मीदें मरी नहीं थीं। हवा में नमी थी। आसमान छूने की ख़्वाहिश थी। इसलिए ''जोर और जुल्म'' विरोधी होने पर भी सगे लगते थे। जुल्म बढ़ेगा तो जोर भी काम नही होने वाला है। नारों में भी उम्मीद थी। अभी के दौर में अविश्वास बढ़ा हैं। अंधेरा घना हुआ है। कुमार नयन को एक नकली शहर दिख रहा हैं, इश्तहार का शहर। सच पूछिए तो इश्तहारों के कारण भी शहर में थोखाघड़ी बढ़ी है। शहर अब ज्यादा चालाक है। प्रगतिवादी दौर के नारों की अपेक्षा अब शोर ज्यादा हैं जोर कम ।तब भी शैलेन्द्र की कविताओं को केवल इसी बुनियाद पर कविता विहीन समझा गया। कोई चालाकी थी इसमें या समझ की कभी?

शैलेन्द्र के गीतों में देश भक्ति का भाव तरल पानी के माफिक छहलता नहीं है। देश भक्ति के गीतों की एक शर्त-सी बन गयी है दुश्मन के आगे कुर्बानी। अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते लाखों युवक कुर्वान हो गये। इस देश-भक्ति को महत्त्व है। तीस के दशक में युवा पीढ़ी को आन्दोलित करने काले कई कवि हुए, गीतकार हुए। उनकी देश-भक्ति के गीतों का अपना महत्व है। परन्तु शैलेन्द्र की देश भक्ति अपने समय से सवाल करती हैं, वे सब बच्चे पहन चीथड़े, मिट्टी साने/वे बूढ़े-बुढ़िया, जिनके लद चुके ज़माने/और युवकगण जिनकी रंग में गरम खून हैं/रह-रह उफन उबल पड़ता हैं, नया खून है। नया खून देश भक्त कवि की माँग हैं, पूरे गीत में एक नये नेतृत्व की अनुगूंज है। पुराने नेता आजादी के लिए कटे-मरे। अपनी जगह उनका महत्व है। नयी पीढ़ी के सामने मुख्य सवाल आर्थिक विषमता का हैं। शैलेन्द्र की देश-भक्ति इस सवाल से टकराती है। पचास के मध्य ही कवि और गीतकार प्रदीप लिख गये पासे पलट गये, दुष्मन की चाल से / अक्षर सभी बदल गये, भारत के भाल से / मंजिल थे आया है मुल्क, हर बला को टाल के / सदियों के बाद फिर उड़े बादल गुलाल के/हम लाए है तूफान से कष्ती निकाल के/इस देष को रखना मेरे बच्चे सैंभल के (जागृति/सलिल चैधरी)। वे बच्चे शैलेन्द्र के गीतों में भी है। ये भावी युवा पीढ़ी है। ये बच्चे प्रदीप के गीत में भी हैं। एक में बच्चों को आगाह किया जा रहा हैं, आजादी के असली और नकली होने का फर्क बताया जा रहा है। यह भावी पीढ़ी अपने देश के बसंत की ही कल्पना न करे। वह पीढ़ी पीले पड़ पत्तो भी देखे। गीत में भी गीत के तरह की तार्किकता होती है। वह अपने समय से टकराती है। प्रदीप का गीत जिस समय (1954) आया, उसी समय शैलेन्द्र ने लिखा ठहर जरा ओ जाने वाले बाबू मिस्टर गोरे-काले/कब से बैठे आस लगाये हम मतवाले पालिषवाले (बूट पालिस/दत्रा राम)।

पुस्तक

# संस्मरणों के माध्यम से इतिहास रचने का प्रयास

**दुनिया** में शिक्षा और शिक्षकों के बारे में हजारों-लाखों किताबें छपी हैं। जब से दुनिया में राज्य व्यवस्थाएं स्थापित हुई हैं-उसको संचालित करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई है। प्लेटो, अरस्तू से लेकर आजतक जितने भी राजनीतिक चिन्तक हुए सबने अपने विचारों को अमलीजामा पहनाने के लिए शिक्षा के बारे में लिखा है। साथ ही शिक्षक कैसा हो - उसकी भी चिन्ता की है। हमारे देश और संस्कृति ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को ही गुरू माना है। शिक्षकों की ऐसी मर्यादा शायद ही कहीं दिखलायी देती है। अर्लवर्ट आइंस्टिन से लेकर प्रो. यशपाल तक और दुनियाभर की सरकारों ने समय-समय पर शिक्षा संबंधी आयोग बनाकर शिक्षा और शिक्षकों के बारे में बहुत तरह के विचार और प्रावधान किये हैं।

आधुनिक दुनिया की शुरूआत औद्योगिक क्रान्ति से मानी गयी है। इस क्रान्ति ने दो वर्गों को जन्म दिया - वे वर्ग हैं पूंजीपति और सर्वहारा वर्ग। पूंजीवाद में न केवल मजदूरों का ही शोषण-उत्पीड़न हुआ बल्कि जीवन के हर क्षेत्रों में काम करनेवालों चाहे वे हाथ से काम करते हों या बुद्धि से सबका शोषण होना शुरू हुआ। शोषित समाज अपने उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करना शुरू किया, यूनियनें बनाई, संघर्ष के नियम-कानून बनाये और लड़ते रहे जबतक उनके हक-हकूक की मांगें पूरी नहीं हुईं। इसी संदर्भ में दुनियाभर में शिक्षकों ने भी अपनी यूनियनें बनाई और संघर्ष करना शुरू किया।

पुस्तकालयों और पुस्तकों की दुकानों में शिक्षा और महान शिक्षाविदों पर किताबें तो दिखायी देती है। लेकिन शिक्षा और शिक्षकों की मान मर्यादा और उनकी समस्याओं के लिए अपनी जिन्दगी अर्पित करने वालों के बारे में शायद ही कोई किताब दिखायी पड़ती है। हाल ही में एक किताब श्री केदार नाथ पांडेय द्वारा लिखित 'गांव से शहर जाती सड़क' पढ़ने को मिली। पुस्तक के शीर्षक से नहीं लगता कि यह पुस्तक बिहार के उन शिक्षकों के संस्मरण हैं जिन्होंने एक ईमानदार शिक्षक के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए शिक्षकों की मान मर्यादा और उनके हक-हकूक की लड़ाई में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया हो। यह पुस्तक उन्हीं शिक्षकों के संस्मरण हैं जिन्होंने अपने त्याग, संघर्ष, करतब और समर्पण से शिक्षकों को शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने में अहम भूमिका निभायी थी।

1925 में स्थापित बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ जिसने अपने 90 वर्षों के इतिहास में शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक-कर्मियों के जीवन में काफी बदलाव लाया है। इनके संघर्षों ने स्कूलों की निजी व्यवस्था को बदल कर राजकीय व्यवस्था कायम करने में अहम् भूमिका अदा की है। यह इनके अनवरत संघर्ष की देन है। पांडेय जी की इस किताब में 19 उन महान शिक्षक नेताओं के संस्मरण हैं जिनमें अधिकांश माध्यमिक शिक्षक संघ से जुड़े रहे हैं और जिन्होंने शिक्षा और शिक्षकों के उत्थान के लिए अपना खून पसीना एक किया है। पांडेय जी स्वयं लिखते हैं - ''मैंने संकलन में कुछ खास व्यक्तियों को ही समाहित किया है। ऐसा नहीं है कि यह मजबूत इमारत बनाने वाले इतने ही लोग थे। इनके साथ हजारों होंगे। हजारों जनता भी है और होगी जिसने कुर्बानियां दीं। लेकिन संस्मरण प्राय: उन्हीं के हो पाते हैं जिनसे कभी भेंट हो, प्रभावित होने का मौका मिला हो। बेशक इसमें ज्यादा वैसे ही हैं। कुछ को इतिहास के पन्नों में बताया है।''

इस किताब की भूमिका डॉ. खगेन्द्र ठाकुर ने लिखी है जो स्वयं कॉलेज शिक्षकों के नेता रहे हैं। डॉ. ठाकुर लिखते हैं ''श्री केदार नाथ पांडेय की यह पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसके ऐतिहासिक महत्व हैं या स्पष्ट तौर पर यह कहें कि इतिहास पुस्तक की तरह इसका महत्व है। यह पुस्तक इतिहास नहीं है लेकिन कोई बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ और उसके नेतृत्व में हुए आन्दोलनों का इतिहास लिखेगा तो उसे इस पुस्तक की मदद लेनी पड़ेगी। इसलिए पांडेय जी ने संस्मरण लिख कर अत्यन्त उपयोगी काम किया है।'' डॉ. ठाकुर ने अपनी भूमिका के अन्त में लिखा है कि ''संस्मरणों में इतिहास छिपा होता है, इस पुस्तक के संस्मरणों में भी इतिहास है। यह भी कहना चाहता हूं कि इतिहास केवल अतीत नहीं होता है, वर्तमान और भविष्य भी होता है। पांडेय जी केवल इतिहास के दावा नहीं, केवल इतिहास की जानकारी देने वाले नहीं, बल्कि इतिहास का निर्माण करने वाले भी हैं, वे शिक्षक ही नहीं शिक्षकों के नायक भी हैं।'' डॉ. ठाकुर ने इन संस्मरणों के मर्म को समझकर यह भूमिका लिखी है - जो इन तमाम 19 संस्मरणों का अश्क है।

**पुस्तक का नाम :** गांव से शहर जाती सड़क
**लेखक :** केदार नाथ पांडेय
**समीक्षक :** डॉ. व्रजकुमार पांडेय
**प्रकाशन :** प्रतिश्रुति, बक्सर
**मूल्य :** 200/-
**प्रथम संस्करण :** 2015

इन संस्मरणों में विश्वविद्यालय शिक्षक आन्दोलन से जुड़े बिहार की राजनीतिक, सामाजिक और बौद्धिक आन्दोलनों के चर्चित हस्ताक्षरों - डॉ. गणेश प्रसाद सिंह, डॉ. शारदा प्रसाद सिंह और प्रो. परमानन्द सिंह 'मदन' के संस्मरण भी शामिल हैं जिन्होंने विश्वविद्यालय शिक्षक आन्दोलन को माध्यमिक शिक्षक आन्दोलन से जोड़ा था। 1968 में प्राइमरी स्कूल के शिक्षक संगठनों से लेकर विश्वविद्यालय तक के शिक्षक संगठनों ने महागठबन्धन बनाकर हड़ताल का आह्वान किया था। इन संस्मरणों की कड़ी में प्राइमरी शिक्षक संगठनों के नेताओं में से कुछ का संस्मरण होना चाहिए था। यदि ऐसा होता तो निस्संदेह यह संस्मरणों की पुस्तक सम्पूर्ण बिहार के नीचे से ऊपर तक के शैक्षिक संस्थाओं के नेतृत्वकारी व्यक्तियों का मुकम्मल इतिहास होता। इसे भूल कहें अथवा दिमाग से ओझल होने की बात - यह थोड़ा अटपटा जरूर लगता है। फिर भी इससे इस पुस्तक की गरिमा में कोई कमी नहीं आती है।

इस पुस्तक में जिन महापुरुषों के संस्मरण लिखे गये हैं - उनके नामों के साथ या यों कहें उनके शीर्षक के साथ एक उपशीर्षक जोड़ा गया है जो उनके व्यक्तित्व को संबोधित करता है। मतलब यह कि यह उपशीर्षक ही ध्वनित करता है कि उनकी प्रकृति और संस्कृति कैसी थी। ये सारे संस्मरण लेखक के व्यक्तिगत लगाव और उनकी शिक्षकों के संघर्ष में भूमिका को रेखांकित करता है। दर्जी की तरह किसी प्रकार की नाप जोख कर ये संस्मरण कतई नहीं लिखे गये हैं। लेखक की नजरों में जो स्मरणीय हैं उन्हीं का यह संस्मरण है।

भाषा की दृष्टि से 'गांव से शहर जाती सड़क' एक समर्थ, सम्पन्न, जीवंत और सम्प्रेषण रचना है। संस्मरण के पात्र, परिवेश, मन:स्थिति विषय आदि के परिवर्तन के साथ ही उनके शब्दों, कहने के ढंग आदि में बदलाव आता जाता है। संस्कृत के श्लोकों, हिन्दी की कविताओं, लोक के शब्दों का जिस तरह उपयोग हुआ है उससे रचना की शक्ति खूबसरती और प्रभावात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वास्तव में लेखक जीवन की खोज और समीक्षा करता है। इसके लिए किसी विशिष्ट शैली या रूप का चुनाव सहज ही हो जाता है। केदान नाथ पांडेय ने भी वही किया है। शिक्षकों के संस्मरण की यह किताब समकालीन बिहार के शिक्षक नेताओं के जीवन और संघर्ष की गाथा है। यह गाथा शिक्षक नेताओं के संघर्ष के माध्यम से बिहार की शिक्षा के इतिहास का एक अध्याय है।

**डॉ. व्रजकुमार पांडेय**

# नहीं रहे वरिष्ठ आलोचक गोपाल राय

## कथा आलोचना के बड़े हस्ताक्षर के रूप में रहे चर्चित

**वरिष्ठ कथा आलोचक** गोपाल राय का बीते शुक्रवार की देर रात नयी दिल्ली के एक निजी अस्पताल में हो गया। उनका जन्म 13 जुलाई, 1932 को बक्सर जिले के चुन्नी गांव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त होने के बाद वे दिल्ली में रहते थे। उन्होंने कहानियों का इतिहास लिखा और समीक्षा जैसी पत्रिका का लंबे अरसे तक संपादन किया। पिछले पचास वर्ष की अपनी लंबी साहित्यिक यात्रा में गोपाल राय ने हिंदी कहानी और उपन्यास के व्यापक फलक को अपनी तत्वदर्शी समीक्षादृष्टि से समृद्ध किया। हिंदी कहानी का इतिहास, हिंदी उपन्यास का इतिहास, उपन्यास का शिल्प, उपन्यास की संरचना जैसे अनेक विषयों पर केंद्रित गंभीर आलोचनात्मक कार्य के साथ-साथ दो खंडों में प्रकाशित हिंदी उपन्यास कोश और चौदह खंडों के विशाल हिंदी साहित्याब्द कोश उनकी मशहूर कृतियां हैं। उन्होंने साहित्यिक समालोचना की अग्रणी पत्रिका समीक्षा का संपादक भी किया था। समीक्षा ने हिंदी में न केवल साहित्यिक पत्रकारिता की कई उत्कृष्ट परंपराओं को स्थापित किया, बल्कि अपने समय की साहित्यिक सूझ और समझ को भी गहराई से जाँचा और परखा। हिंदी में शोध कर्म की स्तरीयता और प्रामाणिकता के लिए निरंतर कटिबद्ध प्रोफ़ेसर गोपाल राय का अवदान अकादमिक और साहित्यिक जगत में समान रूप से स्वीकृत है। गोपाल राय हिंदी के विकास से जुड़ी अनेक उच्च स्तरीय सरकारी और ग़ैर सरकारी संस्थाओं की समितियों से संबद्ध रहे थे। उन्हें केंद्रीय हिंदी संस्थान के महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार समेत कई पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया था।

- हिन्दी उपन्यास कोश
- उपन्यास की संरचना
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास
- हिन्दी कहानी का इतिहास
- गोदान: नया परिप्रेक्ष्य
- शेखर एक जीवनी

# कवि वीरेन डंगवाल को श्रद्धाजंलि

हरेराम भगत

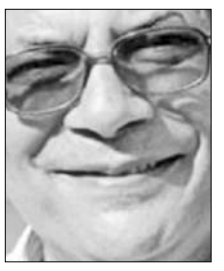

**साहित्य** अकादमी द्वारा पुस्नकृत वरिष्ठ कवि प्रो0 वीरेन डंगवाल के निधन पर प्रगतिशील लेखक संघ, मधेपुरा इकाई द्वारा स्थानीय अभेठा मार्ग स्थित कला कुटीर में कल दिनाँक-30/09/15 के शाम में उन्हें भावमीनी श्रद्धाजंली दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व कुल सचिव प्रो0 शचीन्द्र ने कहा कि वीरेन्द्र डंग वाल हिन्दी कविता की नई पीढ़ी के सबसे चहेते और आदर्श कवि थे। बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के सचिव व मीडिया प्रमारी अरविन्द्र श्रीचास्तव ने कहां कि डंगवाल की कविताओं में मुक्ति बोध की बैचेनी और बौद्धिकता एक साथ दिखती है। उनके संग्रह इसी दुनियाँ में को रघुवीर सहाय स्मृति सम्मान से नवाजा गया था। मधेपुरा प्रलेस के जिला सचिव हरेराम भगत ने कहा कि वीरेन डंगवाल की चर्चित रचनाओं में ''स्याही ताल'' ''दुष्यचक्र में सृष्टा'' आदि है। इन्हें कई सम्मान और पुरूस्कारों से नवाजा गया। उन्हेंने विश्व के युनिंदा कवियों मसलन पाब्लों नेरूदा, ब्रेख्त नाजिम हिकमत आदि की कविताओं का अनुवादभी किया। वे जन प्रतिबद्ध कवि और पत्रकार थे। अवसर पर डॉ0 विनय कुमार चैहारी, डॉ0 विन्देश्वर काश्यय, डॉ0 आलोक कुमार, प्रमोद रंजन, उल्लास मुखर्जी, कुमारी रश्मि, आभाष कुमार, आनन्द कुमार आदि में कवि वीरेन डंगवाल के आकस्मिक निधंन पर विनम्र श्रद्धाजंलि दी।

# निलय उपाध्याय की कविताएं

## मैं गाँव से जा रहा हूँ

कुछ चीज़ें लेकर जा रहा हूँ
कुछ चीज़ें छोड़कर जा रहा हूँ

मैं गाँव से जा रहा हूँ

किसी सूतक का वस्त्र पहने
पाँच पोर की लग्गी काँख में दबाए

मैं गाँव से जा रहा हूँ

अपना युद्ध हार चुका हूँ मैं
विजेता से पनाह माँगने जा रहा हूँ

मैं गाँव से जा रहा हूँ

खेत चुप हैं
हवा ख़ामोश, धरती से आसमान तक
तना है मौन, मौन के भीतर हाँक लगा रहे हैं
मेरे पुरखे... मेरे पित्तर, उन्हें मिल गई है
मेरी पराजय, मेरे जाने की ख़बर

मुझे याद रखना
मैं गाँव से जा रहा हूँ ।

## बेदखल

मै एक किसान हूँ
अपनी रोजी नहीं कमा सकता इस गाँव में
मुझे देख बिसूरने लगते हैं मेरे खेत
मेरा हँसुआ
मेरी खुरपी
मेरी कुदाल और मेरी,
जरूरत नहीं रही
अंगरेज़ी जाने बगैर सम्भव नहीं होगा अब
खेत में उतरना
संसद भवन और विधान सभा में बैठकर
हँसते हैं
मुझ पर व्यंग्य कसते हैं
मेरे ही चुने हुए प्रतिनिधि
मैं जानता हूँ
बेदख़ल किए जाने के बाद
चौड़े डील और ऊँची सींग वाले हमारे बैल
सबसे पहले कसाइयों द्वारा ख़रीदे गये
कोई कसाई...
कर रहा है मेरी बेदख़ली का इंतजार
घर के छप्पर पर
मैंने तो चढ़ाई थी लौकी की लतर -
यह क्या फल रहा है?
मैने तो डाला था अदहन में चावल
यह क्या पक रहा है?
मैंने तो उड़ाये थे आसमान में कबूतर
ये कौन छा रहा है?
मुझे कहाँ जाना है-
किस दिशा में?
बरगद की छाँव के मेरे दिन कहाँ गये
नदी की धार के मेरे दिन कहाँ गये
माँ के आँचल-सी छाँव और दुलार के मेरे दिन कहाँ गये
सरसों के फूलों और तारों से भरा आसमान
मेरा नहीं रहा
धूप से
मेरी मुलाकात होगी धमन-भट्ठियों में
हवा से कोलतार की सड़कों पर
और मेरा गाँव?
मेरा गाँव बसेगा
दिल्ली मुम्बई जैसे महानगरों की कीचड़-पट्टी में

पटना, 11 अक्टूबर-17 अक्टूबर 2015
www.ganadesh.com
गणादेश

# खेती की लागत कम करना आवश्यक

**देश** की वर्तमान जनसंख्या (लगभग 102 करोड़) आगामी 20 वर्षों में लगभग 140 करोड़ और शताब्दी के मध्य तक बढ़कर लगभग 170 करोड़ हो जाने का अनुमान है। इस प्रकार निरन्तर बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न की आवश्यकता पूर्ति हेतु हमें देश में खाद्यान्न की उत्पादन सन 2025 तक 380 मि. टन और सन 2050 तक 480 मि. टन तक बढ़ाना होगा। साथ ही बढ़ती आवश्यकता के अनुरूप ही तिलहन, चीनी, सब्जी-फल, चारा, रेशा, दूध, मांस-मछली आदि का उत्पादन भी बढ़ाना होगा, परन्तु समस्या यह है कि दिन-प्रतिदिन भूमि की उपलब्धता कम होती जा रही है। वर्ष 1999-2000 में प्रति व्यक्ति 0.15 हैक्टर भूमि उपलब्ध थी जो 2020 तक घटकर मात्र 0.05 हैक्टर प्रति व्यक्ति रह जायेगी। ऐसी स्थिति में इन फसलों के अंतर्गत अधिक क्षेत्र तो बढ़ाना असंभव है। साथ ही अधिक उत्पादन लेने के लिए संसाधनों का क्षमता से अधिक दोहन हो रहा है। खेती में उर्वरक और पीड़ंकनाशी रसायनों के बढ़ते प्रयोग से पर्यावरण-मृदा, जल और वायु के प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इन सभी समस्याओं पर काबू पाने और उत्पादन बढ़ाने का एक ही उपाय है कि प्रति इकाई संसाधन फसल उत्पादकता बढ़ाई जाये और जनसंख्या के अनुरूप उत्पादन बढ़ाने तथा पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए कृषि उत्पादन के टिकाऊपन पर ध्यान दिया जाये।

**खर्चीली लागत :** इनको जुटाने में किसान को नगद भुगतान करना पड़ता है। यदि इन लागतों का किफायत से उपयोग नहीं किया जाये तो लागत व्यर्थ जायेगी।

**बिना खर्चीली लागतें :** इन लागतों पर किसान को कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। मात्र सूझबूझ और समय के उपयोग करने पर ही खर्चीली लागतों की उपयोग क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

**खेती** को लाभदायक बनाने के लिए दो ही उपाय हैं- उत्पादन को बढ़ाएं व लागत खर्च को कम करें। कृषि में लगने वाले मुख्य आदान हैं बीज, पौध पोषण के लिए उर्वरक व पौध संरक्षण, रसायन और सिंचाई। खेत की तैयारी, फसल काल में निंदाई-गुड़ाई, सिंचाई व फसल की कटाई-गहाई-उड़ावनी आदि कृषि कार्यों में लगने वाली ऊर्जा की इकाइयों का भी कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है।

इनका उपयोग किया जाना आवश्यक है, परंतु सही समय पर सही तरीके से किए जाने पर इन पर लगने वाली प्रति इकाई ऊर्जा की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इनका अपव्यय रोककर व पूर्ण या आंशिक रूप से इनके विकल्प ढूंढकर भी लागत को कम करना संभव है। इस दिशा में किए गए कार्यों व प्रयासों के उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। इनसे कृषकों को अधिक लाभ मिलने के साथ ही पर्यावरण को प्रदूषित होने से भी बचाया जा सकता है।

➢**पौध पोषण :** पौध पोषण के लिए बाजार से खरीदे गए नत्रजन, स्फुर और पोटाशयुक्त उर्वरक उपयोग में लाए जाते हैं। प्रयोगों में पाया गया है कि रासायनिक उर्वरक के रूप में दी गई नत्रजन (जो यूरिया, अमोनियम सल्फेट आदि के द्वारा दी जाती है) का सिर्फ 33-38 प्रतिशत भाग ही उस फसल को प्राप्त हो पाता है।

शेष सिंचाई जल के साथ नाइट्रेट्स के रूप में रिसकर या कम नमी की अवस्था में गैसीय रूप में वातावरण में चला जाता है। इसी तरह स्फुर यानी फास्फोरस का 20 प्रतिशत एवं पोटाश का 40 से 50 प्रतिशत अंश ही उस फसल को मिल पाता है। स्फुर का 80 प्रतिशत अंश तक काली चिकनी मिट्टी के कणों के साथ बँधकर पौधों को उपलब्ध नहीं हो पाता है। इन उर्वरकों की मात्रा को कम करने एवं उपयोग क्षमता को बढ़ाने में जीवांश खाद जैसे गोबर की खाद या कम्पोस्ट या केंचुआ खाद आदि का प्रयोग लाभदायक पाया गया है। ये जैविक खाद किसान अपने स्तर पर भी तैयार कर सकते हैं। इनके अलावा अखाद्य तेलों जैसे नीम, करंज आदि की खली का उपयोग किया जा सकता है। इन खलियों के चूरे की परत यूरिया के दाने पर चढ़ाकर यूरिया के नत्रजन को व्यर्थ नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

नत्रजन वाले उर्वरकों की निर्भरता को कम करने के लिए जीवाणु कल्चर राइजोबियम या एजेक्टोबेक्टर का उपयोग, गेहूं, जुवार, मक्का, कपास आदि फसलों के साथ अंतरवर्तीय फसल के रूप में चना, गेहूं, उड़द, अरहर, चौला आदि का उपयोग लाभदायक पाया गया है। ये दलहनवर्गीय फसलें वातावरण की नत्रजन को लेकर न सिर्फ अपने उपयोग में लाती है, बल्कि अपनी जड़ों में स्थिर नत्रजन का लाभ साथ लगाई गई अंतरवर्ती को भी पहुंचाती हैं। स्फुर (फास्फोरस) की उपयोग क्षमता को बढ़ाने के लिए स्फुर घोलक बैक्टीरिया का उपयोग किया जाना चाहिए।

अपने यहां अभी भी गोबर का उपयोग उपले या कंडे बनाकर ईंधन के रूप में किया जाता है। यदि इसे गोबर गैस में परिवर्तित कर सकें तो ईंधन की समस्या हल होने के साथ ही बेहतर गुणवत्ता का खाद भी प्राप्त हो जाता है। गांव में पशुओं की संख्या के आधार पर गोबर गैसों के निर्माण, रखरखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों को सौंपी जा सकती है।

गेहूं की फसल की कटाई के बाद खेतों को आग लगाकर साफ किया जाता है। इससे भारी मात्रा में जीवांश जलकर नष्ट हो जाता है। इसे जलाने के बाद फसल की कटाई के तत्काल बाद मिट्टी पलटने के हल से खेत को जोतकर ढेलेदार अवस्था में छोड़ दिया जाना चाहिए, जिससे कटे हुए पौधों के डंठल, ठूंठ आदि निचली सतह में जाकर मिट्टी से दब जाएं और वर्षा आने पर स्वत: ही विघटित होकर जीवांश खाद बन जाते हैं।

फसलों में सिंचाई जल की उपयोग क्षमता बढ़ाने के लिए एक नाली छोड़कर एकांतर (अल्टरनेट) सिंचाई करना, स्प्रिंकलर (फुहार) सिंचाई, टपक सिंचाई आदि विधियों व साधनों का प्रयोग फसल की कतारों के बीच अवरोध परत (मलच) का उपयोग आदि तरीके काम में लाए जाने चाहिए।

## पौध संरक्षण

रोगों और कीड़ों की बहुतायत आधुनिक और लगातार कृषि की देन है। हमारा लक्ष्य फसलों को इनके द्वारा की जाने वाली हानि से बचाना है न कि नष्ट करना। कीट व रोगनाशक रसायनों का असर सिर्फ नुकसान करने वाले कीड़ों व रोगों पर न होकर लाभ पहुंचाने वाले कीड़ों व रोगों पर भी होता है। इनके नियंत्रण के लिए स्वच्छ कृषि, परजीवी व शिकारी कीड़ों व कीड़ों को हानि पहुंचाने वाले कवकों (फफूंदों) व वायरस का प्रयोग असरकारक पाया गया है। इनके अलावा नीम, करंज, हींग, लहसुन, अल्कोहल आदि के उपयोग, अंतरवर्ती फसल, प्रपंची फसल फेरोमेन, ट्रेप, प्रकाश प्रपंच आदि साधनों के उपयोग से रसायनों के उपयोग पर खर्च होने वाली राशि में कमी की जा सकती है। कीटनाशी रसायन अंतिम विकल्प के रूप में काम में लाएं।

## स्वयं तैयार करें बीज

आजकल संकर बीजों का अधिक प्रचलन है। इन्हें हर साल बाजार से खरीदना पड़ता है। इनकी उत्पादन क्षमता सामान्य किस्मों की अपेक्षा अधिक होती है, परंतु अनेक फसलों और सब्जियों में पौध प्रजनकों द्वारा ऐसी किस्में भी तैयार कर ली गई हैं, जो संकर किस्मों के लगभग समान (करीब 8-10 प्रश कम) उत्पादन देती है।

इनका बीज एक बार खरीदकर पांच-सात साल तक अगली फसल के लिए किसान स्वयं अपने खेत पर बीज तैयार कर सकते हैं। इस तरह इन पर खर्च होने वाली राशि में 40 से 60 प्रतिशत तक कमी की जा सकती है। अपने खेत पर उगाई जाने वाली बीज फसल को पर्याप्त खाद, सिंचाई व पौध संरक्षण देकर न सिर्फ अपनी जरूरत का बीज तैयार हो जाता है, बल्कि बीज फसल की अधिक उपज से कुछ आय बीज बेचने से भी मिल जाती है। इन बीजों को छानबीन कर कचरा, कटे अविकसित बीज अलग करके इन्हें राइजोबियम या एजेटोबेक्टर कल्चर से उपचारित कर सही समय पर सही दूरी व गहराई पर बोकर प्रति इकाई पर्याप्त पौधे प्राप्त किए जा सकते हैं।

# लागतों की उचित मात्रा, उचित ढंग से उपयुक्त समय पर दें

**खाद-उर्वरक,** सिंचाई और पीड़कनाशी रसायनों का प्रयोग उचित मात्रा में उचित ढंग से उपयुक्त समय पर करने से ही कारगर सिद्ध होगा। कभी भी बीज और उर्वरक मिलाकर न डालें। उर्वरक बीज के नीचे नमी में डालें। सूखी मिट्टी में या बिखेर कर डाला गया उर्वरक फसल काम में नहीं ला पायेगी। नाइट्रोजनधारी उर्वरकों को दो-तीन बार में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में दें क्यों इनका ह्रास बहुत तेजी से होता है। फॉस्फोरस और पोटाशधारी उर्वरक बुआई के समय बीज के नीचे परन्तु गंधकधारी पदार्थ बुआई से 15-20 दिन पहले खेत में डालें। इसी प्रकार गोबर की खाद, कम्पोस्ट, फसल अवशेष हरी खाद आदि पर्याप्त समय पहले खेत में मिला दें। सिंचाई में जल महत्वपूर्ण लागत है। इसीलिए हम प्रति बूंद अधिक उत्पादकता की ओर ध्यान देते हैं। क्षेत्रों में वर्षा के जल को व्यर्थ न जाने दें। यथा समय संरक्षण और एकत्र करने के उपाय करें। सिंचित क्षेत्रों में फसल की मांग के अनुसार पानी दें। छोटी-छोटी क्यारी बनाकर या नाली-डौली पद्धति से सिंचाई करना अधिक उपयोगी रहता है।

खरपतवारों का समय से नियंत्रण करें और पीड़कनाशी रसायनों का उचित मात्रा में उपयुक्त समय पर प्रयोग करें। पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पाने के लिए हमें लागतों के समेकित प्रयोग कर ध्यान देना चाहिए।

## बुआई

बुआई के समय पंक्तियों के बीच दूरी, बीज से बीज या पौधे की दूरी, बीज डालने की गहराई और खेती में नमी आदि का ध्यान रखना चाहिए। बीज कम डालेंगे तो खेत में पर्याप्त पौधे नहीं रहेगें और फसल संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं कर पायेगी। इसी प्रकार आवश्यकता से अधिक पौधे होने पर पौधो में संसाधनों-प्रकाश, पोषक तत्व और नमी के लिए स्पर्धा बढ़ेगी फलस्वरूप उपज कम मिलेगी।

## समेकित पोषण प्रबंधन

**फसलों** की पोषण की आवश्यकता पूर्ति हेतु उर्वरकों के साथ जैविक खाद जैव-उर्वरक, फसल अवशेष और पत्तीदार फसलों का प्रयोग करना आधुनिक युग की आवश्यकता हो गयी है। खरपतवारों और अन्य पीड़क जीवों के नियंत्रण हेतु रसायनों के प्रयोग से पहले पीड़क जीवों के फैलने से रोकने के उपाय करने चाहिए। इसमें ग्रीष्मकालीन जुताई, खेत में पानी भरना, समय से बुआई, फसल चक्र अपनाना आदि क्रियाओं को सम्मिलित किया जाये ताकि पीड़कजीवों के प्रकोप को कम किया जा सकें। रसायनों के प्रयोग के समय उसकी मात्रा, छिड़काव का समय और विधि का ध्यान रखना चाहिए। ध्यान में रखते हुए अब यह आवश्यक हो गया है कि ये अनाज अब गरीब जनता को अधिक मात्रा में उपलब्ध हों।

इसके लिए प्रति हैक्टर उत्पादन बढ़ाना होगा जिसके फलस्वरूप इन अनाजों का प्रतिवर्ष उत्पादन बढ़ाया जा सकें। इनकी गुणवत्ता को और सुधारना होगा, विशेषकर इनके रंग में परिवर्तन लाना होगा, जिससे जनता इन्हें सहर्ष स्वीकार कर सकें। जबसे बाजरा की सफेद रंग की किस्में विकसित हुई हैं तब से आम जनता बाजरा को चाहने लगी है। सर्दी के दिनों में कम लागत पर अधित शारीरिक ऊर्जा केवल इन्हीं मोटे अनाजों से प्राप्त हो सकती है।

# रामलीला
# लोक जागरण का संदेश देनेवाला लोक पर्व

**तुलसीदास ने रामचरित मानस के माध्यम से न सिर्फ अपने आराध्य राम की कथा कही थी, बल्कि तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की ओर इशारा करते हुए जनजागरण का भी काम किया था। रामचरित मानस को मूल आधार मानते हुए ही रामलीला का आयोजन शुरू हुआ था। लगभग 400 वर्षों पहले शुरू हुई रामलीला की परंपरा आज भी चल रही है।**

कृष्ण मुरारी राय

**रामलीला** रामचरित मानस से इतर नहीं है। इसका नाट्य रूपांतरण भर है । भले ही समय के साथ रोचकता बढ़ाने के लिए कई जगह की रामलीलाओं में कुछ जोड़ा घटाया भी जाता रहा है, लेकिन मूल भावना खंडित नहीं हुई। रामलीला केवल अपने उपदेशात्मकता की वजह से नहीं बल्कि आस्था और उससे भी बढ़कर एक लोकपर्व के रूप में होने की वजह से आज भी जिंदा है।

हमारे देश में शहर हो या गांव कई जगह रामलीला का आयोजन होता है। शहरों में अधिकांशत- रामलीला व्यवसायिक मंडलियों द्वारा की जाती है जबकि गांवों में गांव के लोगों द्वारा इसका मंचन किया जाता है। हालांकि तकनीक और बाजार की मार से रामलीला भी अछूती नहीं रही है। जब गांवों तक बाजारवाद अपना पैर जमा ले तो इसका प्रभाव गांवों और वहां होने वाली रामलीलाओं पर भी पड़ेगा ही। मनोरंजन के विभिन्न मशीनी स्रोतों में सिर खपाते लोग रामलीला देखने को लेकर उदासीन होते जा रहे हैं। इसके अलावा खुद को उच्च और अभिजात्य मानने वाला एक तबका ऐसा भी है, जो रामलीला देखने जाने में अपनी बेइज्जती महसूस करने लगे हैं। ऐसे आयोजन इनकी नजर में भौंडेपन की श्रेणी में आते हैं।

रामलीला देखने वाले दर्शकों की संख्या दिनो दिन घट रही है। घर-घर में मनोरंजन के लिए टीवी के सैकड़ों चैनलों और मोबाइल, इंटरनेट के बढ़ते चलन ने इस लोकोत्सव के आकर्षण को छीन लिया है। जबकि ऐसे आयोजन जहां एक तरफ धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं वहीं सामाजिक समरसता की एक सशक्त कड़ी का भी निर्माण करते हैं। बहुत से से लोग जो बातें करना तो दूर कभी मिल नहीं पाते ऐसे आयोजनों में कभी अनायास तो कभी सायास आमने सामने पड़ जाते हैं तो दिखावे के लिए ही सही दुआ सलाम तो हो ही जाती है।

गांवों में रामलीला पर छाते संकट के पीछे एक बड़ा कारण बेरोजगारी और गांवों में आमदनी के स्रोतों का घटना भी है। दिनों दिन बढ़ती बेरोजगारी और पेट भरने की समस्याओं से जूझ रहे गांव रामलीला और इस जैसी अन्य लोक परंपराओं के बोझ को कितने दिनों तक अपने कमजोर कंधों पर ढो पाएंगे, कहना मुश्किल है।

# नवरात्रि : शक्ति की उपासना का महापर्व

नवरात्रि आदिशक्ति देवी दुर्गा की उपासना का त्यौहार है। आध्यात्मिक उत्सव है। नवरात्रि साल में चार बार पड़ती है, किंतु जनमानस में प्रचलित और उत्सवी स्वरूप शारदीय नवरात्रि का ही है। आश्विन प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जानेवाला शारदीय नवरात्रि भारत में महोत्सव की तरह होता है। आमतौर पर इसे दुर्गा पूजनोत्सव कहते भी हैं। अनेक जगहों पर दुर्गा की मिट्टी की प्रतिमा का निर्माण कर पूजा-उपासना की जाती है। नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा-उपासना की जाती है। इन्हें नवदुर्गा कहा जाता है। आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुरूप नवरात्रि में नवदुर्गा की उपासना से कई तरह के लौकिक-पारलौकिक फल की प्राप्ति होती है। तंत्र साधक नवरात्रि के नौ दिनों में नवदुर्गा की उपासना कुंडलिनी जाग्रत कर आध्यात्मिक और रहस्यमयी शक्तियों को प्राप्त करने के लिए करते हैं।

## नवरात्रि के जुड़ी कथाएं

नवरात्रि की उपासना से जुड़ी कई कथाएं हैं, जो नवरात्रि में दुर्गा पूजा के बारे में बताती हैं। यही नहीं देवी के हर रूप से जुड़ी अलग कथा है। नवरात्रि में दुर्गा पूजा से जुड़ी कुछ प्रचलित कथाएं ये हैं-

✷ इस कथा के मुताबिक शारदीय नवरात्रि में दुर्गा पूजा की उपासना राम के समय शुरू हुई थी। राम ने समुद्र तट पर नौ दिनों तक शक्ति की आराधना की थी और उसके बाद दसवें दिन लंका के लिए प्रस्थान किया था और रावण पर विजय प्राप्त की थी। तभी से नवरात्रि का त्यौहार नवदुर्गा की पूजा के साथ मनाया जाता है।

✷ लंका युद्ध में विजय की कामना से राम ने ब्रह्मा जी की सलाह से चंडी पूजन का आयोजन किया और हवन के लिए 108 नीलकमल मंगवाये। हवन के वक्त रावण की मायावी शक्ति से एक नीलकमल गायब हो गया। तब राम को स्मरण हुआ कि लोग उन्हें कमल नयन नवकंच लोचन भी कहते हैं। राम ने हवन के लिए गायब नीलकमल की जगह अपनी आंख निकालने के लिए तीर हाथ में लिया। तभी दुर्गा ने प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लिया और विजय का उन्हें आशीर्वाद दिया।

✷ तीसरी कथा के अनुसार देवताओं के आशीर्वाद से अजेय बन चुका महिषासुर जब देवताओं पर अत्याचार करने लगा तब कोई युक्ति कारगर न होती देख सभी देवताओं ने मिलकर दुर्गा का निर्माण किया और उन्हें अपने अस्त्र-शस्त्र दिये। मान्यता है कि दुर्गा के निर्माण में सभी देवताओं ने समान बल लगाया था। देवी दुर्गा और महिषासुर के बीच नौ दिनों तक युद्ध चला था, जिसमें देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध किया। इसीलिए दुर्गा को महिषासुर मर्दिनी भी कहते हैं।

# नवदुर्गा का परिचय

**शैलपुत्री**- नवरात्रि के प्रथम दिन मनोवांछित फल के लिए आदिशक्ति दुर्गा के प्रथम रूप शैलपुत्री की पूजा करने की मान्यता है। पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। इनका वाहन बैल है और इन्होंने दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल धारण किया है। इन्हें पार्वती भी कहा जाता है।

**फल**- इनकी पूजा-साधना करने से साधक को कई तरह के लौकिक और अलौकिक फल की प्राप्ति होती है और पूजा करने वाले की कामना पूरी होती है।

**ब्रह्मचारिणी**- दूर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी का है और दूसरे दिन इनके इसी रूप की उपासना होती है। कठोर तपस्या के कारण इस रूप में इनका नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। इनके मस्तक पर स्वर्ण-मुकुट, दाहिने हाथ में जय की माला तथा बाएं हाथ मे कमंडल सुशोभित रहता है।

**फल**- ब्रह्मचारिणी स्वरुप की उपासना सिद्धि तथा विजय प्रदान करने वाली होती है।

**चंद्रघंटा**- नवरात्रि के तीसरे दिन चंद्रघंटा स्वरुप की पूजा होती है। मस्तक पर घंटाकार चन्द्र सुशोभित होने के कारण ये चंद्रघंटा के रूप में जगत प्रसिद्ध हुईं। ये दस भुजाओं वाली हैं। इनका वाहन सिंह है।

**फल**- नवदुर्गा के चंद्रघंटा स्वरुप की उपासना से मन में साहस का संचार होता है और मन भयमुक्त रहता है। साथ ही साधक के हृदय में सौम्यता और नम्रता भी आती है।

**कुष्मांडा**- आदिशक्ति दुर्गा के चौथे स्वरुप के रूप में चौथे दिन देवी कुष्मांडा की पूजा की जाती है। इनके शरीर की कांति सूर्य के सामान है। आठ भुजाएं होने के कारण इन्हें अष्टभुजी भी कहा जाता है। वाहन सिंह है।

**फल**- इनकी पूजा-आराधना से साधक समस्त रोग-शोक से मुक्त हो जाता है और दीर्घायु को प्राप्त होता है।

**स्कंदमाता**- शिव पुत्र कार्तिकेय की मां होने के कारण दुर्गा को स्कंदमाता भी कहा जाता है और नवरात्रि के पांचवे दिन इनके इसी रूप की पूजा की जाती है। इनकी चार भुजाएं हैं और इनका भी वाहन सिंह है।

**फल**- स्कंदमाता की उपासना समस्त कामनाएं पूर्ण करने में सहायक होती हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

**कात्यायनी**- नवरात्रि के छठे दिन दुर्गा की उपासना कात्यायनी के रूप में की जाती है। ऋषि कात्यायन की पुत्री होने के कारण इन्हें कात्यायनी कहा गया। इनकी भी चार भुजाएं हैं और वाहन सिंह है। कात्यायनी वज्रमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रूप मे प्रतिष्ठित हैं।

**फल**- इनकी पूरी निष्ठा और श्रद्धा से पूजा करने वाले को मोक्ष मिलता है।

**कालरात्रि**- आदिशक्ति दुर्गा के सातवें स्वरुप को कालरात्रि के नाम से जाना है और नवरात्रि के सातवें दिन इसी स्वरुप की पूजा-उपासना की जाती है। आदिशक्ति देवी दुर्गा के सभी स्वरुपों में ये भयानक है, किंतु अपने भक्तों के लिए ये ममतामयी हैं। इनका रंग अंधकार की तरह काला है और सर के बाल बिखरे हुए हैं तथा गले में विद्युत की चमचमाती माला है। सांस लेने से इनकी नासिका से अग्नि की लपटें निकलती हैं। इनका वाहन गधा है।

**फल**- इनकी आराधना से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। इसीलिए इनको शुभंकरी भी कहा जाता है।

**महागौरी**- नवरात्रि के आठवें दिन देवी दुर्गा के आठवें स्वरुप महागौरी की पूजा-अर्चना का विधान है। गौरवर्णी होने के कारण ही इन्हें महागौरी कहा जाता है। इनका वस्त्र श्वेत है। इनकी चार भुजाएं हैं। और वाहन वृषभ है। इनकी अवस्था आठ वर्ष मानी जाती है।

**फल**- इनकी पूजा एवं आराधना से उपासक के समस्त पाप समाप्त हो जाते हैं और सारे मनोरथ पूरे होते हैं।

**सिद्धिदात्री**- नवरात्रि के नवें और आखिरी दिन आदिशक्ति के सिद्धिदात्री स्वरुप की आराधना का विधान है। ये आठों सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं। इनकी चार भुजाएं हैं और इनके मस्तक पर स्वर्ण मुकुट और गले में सफ़ेद फूलों की माला सुशोभित है।

**फल**- इनकी उपासना-आराधना से संसार की हर वस्तु सुलभ हो जाती है।

## वायलिन वादक रावण !

रावण वायलिन वादक भी था, यह बात सुनकर किसी को आश्चर्य हो सकता है। इसके पीछे वह सामान्य अवधारणा है जो वायलिन को पश्चिमी वाद्य यंत्र के रूप में मानती है। इस अवधारणा के पीछे तर्क है कि भारत में वायलिन का प्रचलन अंग्रेजों के आगमन से हुआ था, किंतु पौराणिक आख्यानों के मुताबिक वायलिन प्राचीनकाल से ही भारत में प्रचलित रहा है। भले ही तब इसे वायलिन के नाम से नहीं जाना जाता था। पौराणिक आख्यानों में दर्ज है कि रावण वायलिन की तरह ही एक ऐसे वाद्य यंत्र को बजाता था। गौरतलब है कि वायलिन तारों से बजता है और इसमें चार तार होते हैं। रावण के पास भी एक तार वाला वाद्य यंत्र था। इसकी प्रामाणिकता इससे भी पुष्ट होती है कि राजस्थान में रावण हथा के नाम से एक वाद्य यंत्र मशहूर है। मिश्र और चीन जैसी प्राचीन सभ्यताओं के इतिहासकारों के मुताबिक 3500 साल पहले भी ऐसा वाद्य यंत्र प्रचलन में था।

# रामलीला जनमानस के सम्पूर्ण सामाजिक अर्न्तमन को राममय बना देती है

रामेश्वर प्रसाद वर्मा

**रामलीला** विशाल भारतीय जनमानस की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति है। विगत अनेक सदियों से यह लोक रंजन के साथ-साथ हमारे निजी संस्कारों को परिष्कृत, पोषित करती एवं उन्हें पारितोष प्रदान करती है। देश के विशाल भू-भाग में और यहाँ तक कि विदेशों में भी आठ-दस दिनों से लेकर तीस-चालीस दिनों तक के इसके आयोजन प्रतिवर्ष जनमानस के अन्दर एक ऐसी चेतना का संचार करते रहते हैं कि उसके कारण रामलीला मात्र नाटकीय प्रदर्शन न होकर एक सांस्कृतिक पर्व के रूप में जनमानस के सम्पूर्ण जीवन में प्रतिष्ठापित हो चुकी है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम जनमानस के सामाजिक मन-मस्तिष्क में इस प्रकार प्रवेश कर चुके हैं कि उन्हें उनके अर्न्तमन से निकालना असम्भव है। इस राम से सम्बद्ध रामलीला ने जनमानस के सम्पूर्ण सामाजिक अर्न्तमन को अपनी अनेक छवियों से भर कर उन्हें राममय बना दिया है। रामलीला के तहत कहीं राम का जन्म, कहीं पुष्पवाटिका में विहार करती सीता, कहीं धनुष यज्ञ, कहीं सीता-हरण तो कहीं लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगना, कहीं मेघनाद-कुम्भकर्ण वध और राम-रावण का भीषण युद्ध ये सभी दृश्य मानों दर्शकों के समक्ष सजीव होकर उनके अन्तर्मन को आहलादित कर देते हैं। रावण वध तो जैसे रामलीला की जान है। भरत-मिलाप जहां पारिवारिक परंपरा की नींव को सुदृढ़ करता है, वहीं, राम का राज्याभिषेक भारतीय जनता की रामराज्य के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक बनकर उभरता है। रामलीला का प्रवर्तन सम्भवत: वाल्मीकि के समय से ही प्रारम्भ हो गया था। 'वाल्मीकि रामायण' के द्वितीय सर्ग के 36 (छतीसवें) श्लोक में 'कुरू राम कथा पुण्याय श्लोकबद्धां मनोरमाम्' अर्थात् 'राम का पुण्यमयी कथा का ज्ञान करो' कह कर आदि कवि वाल्मीकि ने रामकथा के गायन का स्वरूप निर्धारित किया था। लेकिन रामलीला के उद्भव में नाट्य परम्परा, झांकियों, शोभा-यात्राओं आदि से भी प्रेरणा मिलती है। मध्य युग में धर्म की रक्षा के लिए सभी कलाओं द्वारा धर्म के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया गया और इस प्रकार रामलीला की एक सशक्त परंपरा कायम हो गयी। इसके प्रवर्त्तन का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास को दिया जा सकता है। रामलीला की कई शैलियां हैं। जहां परम्परा से रामलीला होती आ रही है, उसे परम्परागत रामलीला कहा जाता है। कुछ अभिनयपरक रामलीलाएं हैं, जिनमें शोभा-यात्रा और झाकियां निकाली जाती है। नाटकीय पद्धति से की जाने वाली रामलीला के दो रूप हैं- एक में संवाद या तो नहीं होते या संक्षिप्त होते हैं। और दूसरे में संवाद की योजना होती है जिसका सर्वोत्तम उदाहरण राम नगर वाराणसी (उ.प्र.) और पौराणिक तीर्थस्थल बक्सर (बिहार) की रामलीला है। वैसे तो संवाद का मुख्य आधार रामचरितमानस और तुलसी के अन्य ग्रंथ ही होते हैं, लेकिन मथुरा और कुछ अन्य स्थानों की रामलीला में वहां के लोकगीत भी ले लिये जाते हैं।

आधुनिक युग में रामलीला के अनेक रंगमंचीय प्रयोग भी प्रचलन में शामिल होते जा रहे हैं और कहीं-कहीं तो इसमें हास्य या व्यंग्य का पुट भी डाला जा रहा है। रामलीला ने पूरे देश को राम की भक्ति में बांध रखा है। राम का राजकुंवर रूप जहां लोगों को गुदगुदाता है, वहीं साधुओं की तरह अल्पी पहने वनवासी राम जन-जन के सुख और दु:ख के सहयोगी बन जाते हैं। एक असामान्य पुरूष की असामान्य जीवन साधना एकदम सामान्य लोगों के बीच शुरू होती है। राम इस लोक-साधना से राक्षसवाहिनी और रावण जैसे विराट राजरोग का शमन करके महान से महानतम बन जाते हैं। आज की प्रासंगिकता के विचार से रामलीला में अनेकाविध जीवन पक्षों का संस्पर्ष पाया जाता है। ताड़का वध की लीला में युवा शक्ति के साहस, शौर्य और कर्त्तव्यपरायण राम के व्यक्तित्व को हृदयंगम करते हैं, तो नगर-लीला में चक्रवर्ती सम्राट के राजकुमारों को लोक-सामान्य भाव-भूमि के बीच पाते हैं। गुह निशाद-केवट और शबरी मिलन की लीलाएं निम्न समझे जाने वाले सामाजिक वर्गों-शुद्र, दलित तथा बनवासी-गिरिजनों के साथ राम की सहज आत्मीयता को उजागर करतीं तथा समाज को उक्त जीवन दृष्टि अपनाने की प्रेरणा देती हैं। इससे सामाजिक एकता के ऐसे संस्कार जगाये जा सकते हैं जिनकी आज के के युग में बड़ी आवश्यकता है। इसीलिए रामलीला सामाजिक-सांस्कृतिक पर्व के रूप में प्रति वर्ष जन-सामान्य के बीच गहरी छाप छोड़ जाती है। राम अपनी मर्यादा और पुरूषों में सबसे उत्तम गुणों से युक्त होने के कारण न सिर्फ भारत, अपितु भारत से बाहर सुदूरवर्ती देशों में भी आरणीय, अनुकरणीय एवं पूज्य माने जाते हैं। राम का व्यक्तित्व अपने अनुपम गुण-पुंज के कारण विदेशों में भी आदर और सम्मान प्राप्त कर के पूज्य बना हुआ है। मिश्र, तुर्की, ईरान, थाईलैंड, बर्मा, कम्बोडिया, लाओस, इण्डोनेशिया, मलेशिया आदि देशों में राम कथा भिन्न-भिन्न रूपों में उपलब्ध होती है। यहां रामलीला का प्रदर्शन नृत्य-नाटिकाओं द्वारा किया जाता है। थाईलैंड के निवासियों का सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन पूर्णत: राममय हैं बैंकाक के राष्ट्रीय समारोह में रामलीला हर्शोल्लास के साथ मनाई जाती है। 'राम नाट्य' थाईलैंड का राजकीय नाट्य है और इसका प्रदर्शन प्राय: वहां के राजमहलों में भी किया जाता है। न्यूर्याक में न केवल 'रामायण' नामक रेस्तरां है, बल्कि वहां का 'हरे कृष्ण' सम्प्रदाय रामलीला का आयोजन भी करता है। चीन में भी 'दशहरा जातक' नाम की रामायण चीनी भाषा में मिलती है। वहां भी नृत्य नाटिका के जरिए रामलीला होती है।

## जंक फूड्स से हो सकता हैं सेहत को भारी नुकसान

# अपनाएं ये हेल्दी ऑप्शन

जंक फूड खाने की इच्छा मन में बार-बार जागना बॉडी में कुछ मिनरल्स की कमी का संकेत हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर इन मिनरल्स के ऑप्शन्स को डाइट में शामिल किया जाए तो जंक फूड की तरफ अट्रैक्शन को कम किया जा सकता है। आइए जानते हैं क्या हो सकते हैं बर्गर, डोनट्स, फ्रेंच फ्राइज, चॉकलेट व सॉल्टी स्नैक्स के हेल्दी ऑप्शन।

### फ्राइड फूड्स

तले और फैटी फूड्स खाने की इच्छा शरीर में फैटी एसिड की कमी की ओर इशारा करती है। वैसे फ्राइड फूड्स में सोडियम अच्छी खासी मात्रा में होता है। जिन महिलाओं की डाइट में कैल्शियम की मात्रा कम है, वे भी तला हुआ खाने की शौकीन होती हैं।

**हेल्दी ऑप्शन**- बादाम, अखरोट, पटसन (फ्लैक्स) के बीज ऑप्शन हो सकते हैं। वहीं कैल्शियम की भरपाई के लिए दूध, दही और पनीर को डाइट में शामिल कर सकते हैं।

### पास्ता व ब्रेड

लंबे समय तक डाइट में कार्बोहाइड्रेट की कमी ब्रेड, पास्ता या आलू से बनी चीजों के सेवन की लालसा जगाती है। वैसे यह लालसा नाइट्रोजन व प्रोटीन की कमी का इशारा भी है। अगर इस पर ध्यान नहीं दिया तो यह स्थिति कुपोषण का कारण भी बन सकती है।

**हेल्दी ऑप्शन**- पालक, गोभी, मटर व अन्य फलियों के साथ-साथ मांस व अंडा नाइट्रोजन और प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। इनसे पास्ता व ब्रेड की भूख मिट सकती है।

### मीठा

मिठाई खाने की इच्छा क्रोमियम की कमी के कारण हो सकती है, जो शरीर में शुगर के स्तर को कंट्रोल में रखता है।

**हेल्दी ऑप्शन**- ऐसे सिचुएशन ताजे फल, किशमिश, शकरकंद और डेयरी प्रोडक्टस को डाइट में शामिल कर सकते हैं।

### नमकीन

अगर खाने में हर बार एक्स्ट्रा नमक मिलाने का मन करता है तो यह क्लोराइड या सिलिकॉन की कमी की वजह से है।

**हेल्दी ऑप्शन**- अपने आहार में काजू-बादाम, फलियां और मछली को शामिल कर इस कमी को पूरा कर सकते हैं।

### चॉकलेट

चॉकलेट खाने की इच्छा का कारण मैग्नीशियम की कमी हो सकती है। यह तत्व ग्लूकोज, इंसुलिन और ब्रेन से बॉडी के अन्य अंगों तक संदेश पहुंचाने वाले केमिकल डोपामाइन को कंट्रोल करता है। इसलिए मैग्नीशियम को रिलेक्सेशन मिनरल भी कहते हैं।

**हेल्दी ऑप्शन**- हरी पत्तेदार सब्जियां, फलियां व मछली मैग्नीशियम के स्रोत हैं। इन्हें भोजन का हिस्सा बनाकर चॉकलेट की तृष्णा को कम कर सकते हैं।

# वायरल फीवर से राहत पाने के घरेलू उपचार

मौसम के बदलने के समय वायरल फीवर होता है। जब भी मौसम बदलता है तब तापमान के उतार-चढ़ाव के कारण शरीर का इम्यून सिस्टम थोड़ा कमजोर हो जाता है। इस फीवर से बचने और निजात पाने के लिए दवाईयों के अलावा कई घरेलू उपाय हैं, जिससे जल्द राहत मिल जाती है।

### तुलसी

तुलसी का एन्टी बायोटीक और एन्टी बैक्टिरीअल गुण वायरल फीवर के लक्षणों से राहत दिलाने में बहुत मदद करते हैं। बीस ताजा तुलसी के पत्तों को एक लीटर पानी में एक चम्मच लौंग पावडर डालकर तब तक उबालें जब तक कि वह सुख कर आधा न हो जाये। उसके बाद उसको छानकर हल्का ठंडा करके दो घंटा के अंतराल में पीयें।

### मेथी का जल

मेथी में बहुत सारे औषधिय गुण होते हैं जो वायरल फीवर के कष्टों से राहत दिलाने में सहायता करते हैं। एक कप पानी में एक बड़ा चम्मच मेथी के दाने रात भर भिगोकर रखें। अगले दिन सुबह इसको छानकर निश्चित अंतराल में इसका सेवन करें। सुबह मेथी के दाने, नींबू का रस और शहद के मिश्रण का सेवन करने से भी कुछ हद तक बुखार से राहत मिलता है।

### सूखे अदरक का मिश्रण

अदरक के अनगिनत स्वास्थ्य संबंधी गुण होते हैं। इसका एन्टी-इन्फ्लैमटोरी और एन्टी-ऑक्सिडेंट गुण बुखार के लक्षणों से राहत दिलाने में सहायता करते हैं। सूखा अदरक, एक छोटा चम्मच हल्दी और एक छोटा चम्मच काली मिर्च का पावडर और थोड़ा-सा चीनी एक कप पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक कि सुखकर आधा न हो जाये। दिन में चार बार इस काढ़े को पीने से बुखार से राहत मिलता है।

### सोआ का काढ़ा

यह शरीर के प्रतिरक्षी तंत्र को तो उन्नत करता ही है साथ ही बुखार को कम करने में भी सहायता करता है। फल्वेनॉयड और मोनोटर्पीन के गुण होने के कारण यह फीवर से राहत दिलाने में मदद कर पाता है। एक कप पानी में एक बड़ा चम्मच सोआ के दाने, एक छोटा चम्मच काली मिर्च और एक छोटा चम्मच कलौंजी डालकर दस मिनट तक उबालें। उबालने के बाद एक कप में छान लें और उसमें एक चुटकी दालचीनी का पावडर डालकर अच्छी तरह से मिला लें। काढ़ा को पीने से बुखार से राहत मिलेगी।

### धनिया चाय

धनिया में फाइटोनूट्रीअन्ट और विटामिन होता है जो प्रतिरक्षी तंत्र को उन्नत करने में बहुत सहायता करता है। धनिया प्राकृतिक तरीके से वायरल फीवर से लड़ने में मदद करता है। एक गिलास पानी में एक बड़ा चम्मच धनिया के दाने डालें और उसको थोड़ा उबाल लें। उसके बाद कप में छानकर स्वाद के अनुसार थोड़ा-सा दूध और चीनी डालकर पीने से बुखार से राहत मिलता है।

### राइस स्टार्च

उपचार का यह तरीका बहुत पुराना है। यह शरीर से विषाक्त पदार्थ को निकालने में बहुत मदद करता है। जिससे प्रतिरक्षी तंत्र को वायरस से लड़ने में शक्ति मिलती है। राइस स्टार्च पौष्टिकता से भरपूर होता है इसलिए इसके सेवन से रोगी को शक्ति मिलती है।

# मोटापा कम करने का अचूक नुस्खा है लाल मिर्च

**नई दिल्ली :** मोटापा कम करने के लिए यूं तो कई घरेलू नुस्खे कारगर साबित होते है लेकिन नए शोध यह बताते है कि लाल मिर्च वजन कम करने में सहायक होता है। एक अध्ययन के मुताबिक खाने में लाल मिर्च का इस्तेमाल करने से पेट की नर्व्स की क्रिया पर असर पड़ता है, जिससे आप ज्यादा खाने से बचते हैं।

लाल मिर्च कई तरह के उपयोगी तत्व भी पाएं जाते हैं। जैसे अमीनो एसिड, एस्कार्बिक एसिड, फोलिक एसिड, सिट्रीक एसिड, मैलिक एसिड, मैलोनिक एसिड, सक्सीनिक एसिड, शिकिमिक एसिड, आक्जेलिक एसिड, क्युनिक एसिड, कैरोटीन्स, क्रिप्तोकैप्सीन, बाई-फ्लेवोनाईड्स, कैप्सेंथीन, कैप्सोरूबीन डाईएस्टर, आल्फा-एमिरिन, कोलेस्टराल, फायटोफ्लू, कैप्सीडीना, कैप्सी-कोसीन, आदि तत्व पाएं जाते हैं।

लाल मिर्च के सेवन से शरीर का मेटॉबालिज्म तेज होता है । यह एक पाचन उत्तेजक है जो वजन में कम करने में सहायक होता है। लाल मिर्च आपके वजन को संतुलित करने में इसलिए मददगार होता है क्योंकि इससे सेवन से अनावश्यक कैलोरी बर्न होती है और शरीर में ज्यादा फैट नहीं बन पाता है। शोध के मुताबिक खाने में लाल मिर्च का पाउडर मिलाने से आपकी मेटॉबालिज्म की प्रक्रिया तेज होती है और भोजन के बाद शरीर से अवांछित कैलोरी कम होती है और इससे आपका वजन नहीं बढ़ता है। अगर वजन ज्यादा है तो तेजी से कम होता चला जाता है।

शोध के मुताबिक कोई व्यक्ति आहार में हाई फैट डाइट और लाल मिर्च लेता है, तो खाने में मौजूद रिसेपटर (अभिग्राहक) आपको सिगनल देकर भरा हुआ महसूस कराते हैं। जब हमारा पेट भर जाता है, तो उसमें खिंचाव होने लगता है, जो कि नर्व्स को सक्रिय कर हमें भरा होने का अहसास कराता है। लाल मिर्च में कैपसाइसिन नामक पदार्थ होता है, जो व्यक्ति को ज्यादा खाना खाने से रोकता है।

# ग्लैमर से दमकता मॉडलिंग करियर

मॉडलिंग से मतलब महज रैंप पर कैटवॉक करना नहीं, बल्कि मॉडलिंग की फील्ड में काफी चीजें करने को है। आपके पास अच्छा फिगर है, चेहरा भी फोटोजेनिक है और साथ ही आत्मविश्वास भी भरपूर है और ग्लैमर के प्रति आप शुरू से ही आकर्षित रहे हैं तो मॉडलिंग को बतौर करियर चुनकर आप भी शोहरत कमा सकते हैं।

## चार तरह के फैशन मॉडलिंग

**टेलीविजन मॉडलिंग :** इसमें आपको मूवी कैमरों के सामने मॉडलिंग करनी पड़ती है। जिसका इस्तेमाल टीवी विज्ञापनों, सिनेमा, वीडियो, इंटरनेट में किया जाता है।

**प्रिंट मॉडलिंग :** इसमें स्टिल फोटोग्राफर्स मॉडल्स की तस्वीरें उतारते हैं, जिनका इस्तेमाल अखबार, ब्रोशर्स, पत्रिकाओं, कैटलॉग, कैलेंडरों आदि में किया जाता है।

**शोरूम मॉडलिंग :** शोरूम मॉडल्स आमतौर पर निर्यातकों, गारमेंट निर्माताओं और बड़े रिटेलरों के लिए काम करते हुए फैशन को प्रदर्शित करते हैं।

**रैंप मॉडलिंग :** इसमें मॉडल्स को रैंप पर वॉक करते हुए आधुनिक फैशन की झलक दिखानी होती है। यह प्रदर्शनी, फैशन शो या किसी शोरूम की बात भी हो सकती है। रैंप मॉडल की खड़े होने, चलने की शैली और बॉडी लैंग्वेज का बेहतर होना जरूरी है।

## योग्यता

मॉडलिंग के क्षेत्र में आने के लिए यूं तो किसी खास तरह की योग्यता का होना जरूरी नहीं है। हां, लड़कियों के लिए इस फील्ड में लंबाई 5 फुट 7 इंच और लड़कों के लिए 5 फुट 10 इंच होना जरूरी है। इसी के साथ ही अगर आपने किसी मॉडलिंग इंस्टीट्यूट से ट्रेनिंग ले रखी है तो सोने पर सुहागा। 12 वीं के बाद आप सीधे इस क्षेत्र में दाखिला ले सकते हैं।

## प्रमुख संस्थान

- जे.डी.इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, मुंबई
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, चंडीगढ़
- आर.के फिल्म्स एंड मीडिया एकेडमी, नई दिल्ली

## जॉब अलर्ट

### दिल्ली पुलिस ने निकाली कॉन्स्टेबल की वैकेंसी

दिल्ली पुलिस ने वैकेंसी निकाली है. इच्छुक उम्मीदवार 6 नवंबर तक आवेदन कर सकते हैं।

**पद का नाम :** कॉन्स्टेबल
**उम्र सीमा :** 18-21 साल
**आवेदन फीस :** 300 रुपये
**पदों की संख्या :** 50
**चयन प्रक्रिया :** उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा, फिजिकल और मेडिकल टेस्ट के आधार पर होगा।
**पे स्केल :** 5200-20200/- + GP 2000/-
**ज्यादा जानकारी के लिए लिंक :** http://nagapol.gov.in/

### क्लर्क और स्टेनोग्राफर के पदों पर वैकेंसी

झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (JSSC) में वैकेंसी निकली है। इच्छुक उम्मीदवार 7 नवंबर तक आवेदन कर सकते हैं।

**पद का नाम :** लोअर डिविजन क्लर्क स्टेनोग्राफर
**पदों की संख्या :** 268
**योग्यता :** ग्रेजुएट
**पे स्केल :** 5200-20200 रुपये
**उम्र सीमा :** 18-35 साल
**चयन प्रक्रिया :** उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।
**आवेदन फीस :** 460 रुपये
**ज्यादा जानकारी के लिए लिंक :** http://www.jssc.in/

### चंडीगढ़ एजुकेशन डिपार्टमेंट में सैकड़ों वैकेंसी

चंडीगढ़ एजुकेशन डिपार्टमेंट में वैकेंसी निकली है। इच्छुक उम्मीदवार 2 नवंबर तक आवेदन कर सकते हैं।

**पद का नाम :** लोअर डिविजन क्लर्क क्लर्क स्टेनो टाइपिस्ट
**पदों की संख्या :** 329
**योग्यता :** ग्रेजुएट
**पे स्केल :** 10300-34800/ + GP 3200 रुपये
**उम्र सीमा :** 18-25 साल
**चयन प्रक्रिया :** उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।
**आवेदन फीस :** 400 रुपये
**ज्यादा जानकारी के लिए लिंक :** http://www.chdeducation.gov.in/

### NABARD में असिस्टेंट पद पर वैकेंसी

नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) में वैकेंसी निकली है। इच्छुक उम्मीदवार 30 अक्टूबर तक आवेदन कर सकते हैं।

**पद का नाम :** डेवलपमेंट असिस्टेंट
**पदों की संख्या :** 85
**योग्यता :** ग्रेजुएट
**पे स्केल :** 8040-20100 रुपये
**उम्र सीमा :** 18-35 साल
**आवेदन फीस :** 450 रुपये
**चयन प्रक्रिया :** उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।
**ज्यादा जानकारी के लिए लिंक :** www.nabard.org

### वेस्ट सेंट्रल रेलवे में नौकरी पाने का मौका

वेस्ट सेंट्रल रेलवे में वैकेंसी निकली है। इच्छुक उम्मीदवार 3 नवंबर तक आवेदन कर सकते हैं।

**पद का नाम :** जनसाधारण टिकट बुकिंग सेवक
**योग्यता :** 12वीं पास
**पदों की संख्या :** 147
**आवेदन फीस :** 1000 रुपये
**चयन प्रक्रिया :** उम्मीदवारों का चयन लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।
**ज्यादा जानकारी के लिए लिंक :** www.wcr.indianrailways.gov.in

# गेमिंग वर्ल्ड में करियर बनाने के बेस्ट ऑप्शन

**कंप्यूटर** गेम के बाद मोबाइल गेम को लेकर लोगों के बीच क्रेज टाइम के साथ बढ़ गया है। अगर जॉब के लिहाज से देखें तो यह आने वाले समय में हॉट सेक्टर होगा। क्योंकि आज के हाईटेक वर्ल्ड में बच्चों के साथ-साथ युवा भी हाईटेक गेम्स के दीवाने होने लगे हैं तभी तो इन्हें अब आउटडोर गेम कम और इंडोर गेम ज्यादा पसंद आने लगा है। यही वजह है कि इंडोर गेम्स यानी वीडियो, कम्प्यूटर और मोबाइल गेम्स का बाजार कई गुना बढ़ गया है। जिस रफ्तार से यह सेक्टर बढ़ रहा है, उससे गेम डेवलपर्स की मांग में जबरदस्त इजाफा हुआ है...

## गेमिंग मार्केट

मोबाइल गेमिंग का ग्लोबल मार्केट तेजी से बढ़ रहा है। समय के साथ सेल्युलर ऑपरेटर्स की बढ़ती संख्या की वजह से भारत में भी गेम्स डेवॅलपर्स की मांग बढ़ी है। आज मॉइक्रोसॉफ्ट, एक्स-बॉक्स, सोनी का प्लेस्टेशन-2, गेम साइट्स, इन सभी का जबरदस्त क्रेज बना हुआ है।

## कम्प्यूटर गेम प्रोड्यूसर

इसके लिए डिजाइनिंग की जानकारी के अलावा, 3डी मॉड्यूलिंग और टू डी सॉफ्टवेयर का नॉलेज होना जरूरी है वहीं ऑडियो इंजीनियर के लिए C++, साउंड इंजीनियरिंग के अलावा, अन्य लैंग्वेज की जानकारी आवश्यक है वीडियो गेम प्रोड्यूसर का काम पूरे प्रोडक्शन के काम पर नजर रखना होता है इस तरह के इंजीनियर डिजाइन, आर्ट, क्वालिटी कंट्रोल टीम से साथ मिल कर काम करते हैं।

## गेम डिजाइनर

इनका काम गेम डिजाइनिंग के साथ गेम को फनी बनाना होता है साथ ही, ये गेम राइटिंग और डायग्राम भी तैयार करते हैं लीड डिजाइनर पर पूरे डिजाइनिंग विजन, कॉन्सेप्ट, प्रेजेंटेशन, इंप्लिमेंटेशन की जिम्मेदारी लेते हैं। लेकिन इसके लिए टेक्नोलॉजी की जानकारी होने के साथ-साथ आर्टिस्टीक विजन बेहद जरूरी है।

## एनिमेटर

एनिमेटर आमतौर पर प्रोग्रामर और सीनियर आर्टिस्ट के साथ गेम के करेक्टर के हर पहलू पर काम करते हैं। आप एनिमेटर के रूप में काम करना चाहते हैं, तो आपमें 2डी कॉन्सेप्ट आर्ट के माध्यम से 3डी मॉडल्स और 2डी टेक्चर मैप को तैयार करने की योग्यता होनी चाहिए।

## ऑडियो प्रोग्रामर

इस तरह के प्रोग्रामर गेम के लिए ऑडियो तैयार करने के अलावा साउंड इंजीनियर करने का काम भी करते हैं वैसे यह फील्ड कंप्यूटर इंजीनियर के लिए बेहतरीन माना जाता है ऑडियो प्रोग्रामर को गेम में स्पेशलइ इफेक्ट के इस्तेमाल के लिए साउंड के बारे में अच्छी नॉलेज रखना जरूरी है।

## रोजगार की संभावनाएं

इस समय रोजगार के लिहाज से यह सेक्टर बेहतरीन ऑप्शन है। क्योंकि कई गेमिंग कंपनियां भारत में अपना सेटअप तैयार करवा रही हैं लेकिन अच्छे गेम डेवॅलपर्स की काफी कमी महसूस की जा रही है। इस क्षेत्र में जावा, C, C++, 2डी गेम डेवॅलपर्स, 3डी डेवॅलपमेंट के जानकारों के लिए असीम संभावनाएं मौजूद हैं। इस फील्ड में कई तरह से काम किया जा सकता है।

## सैलॅरी पैकेज

देश में गेमिंग की दुनिया में 2डी और 3डी डेवलपमेंट प्रोफेशनल्स की मांग है इस हाइटेक गेम वर्ल्ड में शुरुआती दौर में ही आपकी सैलरी 2 लाख सालाना हो सकती है।

## देश के टॉप गेम डेवॅलपर्स

- डिजिटल चॉकोलेट, बेंगलूर
- इंडिया गेम्स, मुम्बई
- जंप गेम्स, मुम्बई

## ग्राफिक प्रोग्रामर

गेम को डेवलप करने में ग्राफिक प्रोग्रामर टेक्निकल सपोर्ट देता है लेकिन इसके लिए ग्राफिक प्रोग्रामर को C, C++, डायरेक्ट एक्स, ओपन जीएल, विंडो प्रोग्रामिंग, 3डी पैकेज आदि के बारे मालूम होना चाहिए।

# टीम में रोहित, कोहली और रैना, फिर क्यों है संकट ?

टी-20 क्रिकेट में दुनिया के पांच सबसे बेहतरीन बल्लेबाजों की कोई सूची बने तो क्रिस गेल के अलावा कौन-कौन इस सूची में शामिल हो सकते हैं, जरा सोचिए। रोहित शर्मा, विराट कोहली और सुरेश रैना इस सूची में जगह पाने के तगड़े दावेदार होंगे।

## सबसे जोरदार तीन बल्लेबाज

यह कोई संयोग नहीं, लेकिन हकीकत यही है कि दुनिया के सबसे जोरदार तीन बल्लेबाज टीम इंडिया की टी-20 टीम में शामिल हैं। इसके अलावा दुनिया के सबसे शानदार फिनिशरों में शामिल एमएस धोनी भी टीम इंडिया में शामिल हैं। इसके बावजूद टीम इंडिया दक्षिण अफ्रीका से अपने घरेलू मैदान पर टी-20 मैच हार चुकी है। जाहिर है टीम इंडिया के सामने सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले दोनों टी-20 मुकाबले में टीम इंडिया की बल्लेबाजी में ही मुश्किल सामने आई है। दरअसल टीम इंडिया के तीनों जोरदार बल्लेबाज आईपीएल में अलग-अलग टीमों में खेलते हैं और कमोबेश एक जैसी भूमिका निभाते हैं। शुरुआत में पारी को संभालने के अलावा इन तीनों बल्लेबाजों पर टीम को बड़े स्कोर तक ले जाने की जिम्मेदारी होती है।

### अंतिम ओवरों में रफ्तार देने वाले बल्लेबाजों की जरूरत

टीम इंडिया की ओर से खेलने के दौरान इन तीनों की भूमिका बदल जाती है और उससे तालमेल बिठाने में तीनों एक ही वक्त कामयाब हों जरूरी नहीं। इसके अलावा आखिरी पांच ओवरों में टीम इंडिया की पारी को रफ्तार देने वाले बल्लेबाज भी नजर नहीं आ रहे हैं। अजिंक्य रहाणे और अंबाति रायडू इस भूमिका में अब तक फिट नहीं हो पाए हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले दो मैचों में एमएस धोनी की नाकामी ने इस कमजोरी को जगजाहिर कर दिया है। यहां भी टीम इंडिया के सामने आईपीएल फैक्टर संकट बन रहा है क्योंकि आईपीएल की टीमों में अंतिम पांच ओवरों के दौरान धमाल मचाने के लिए विदेशी ऑलराउंडरों को मौका मिल रहा है, लिहाजा टीम इंडिया के बल्लेबाज इस भूमिका में फिट नहीं हो पा रहे हैं। अब देखना होगा कि टीम इंडिया वर्ल्ड टी-20 से पहले इस संकट का हल तलाश पाती है या नहीं।

## दक्षिण अफ्रीका के साथ टी20 श्रृंखला भारत को सीख देने वाली : शास्त्री

**नई दिल्ली :** रवि शास्त्री ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका से 0-2 से हारना अगले साल होने वाले आईसीसी टी20 विश्वकप को लेकर भारत के लिए एक बड़ी सीख है।

भारतीय क्रिकेट टीम के निदेशक रवि शास्त्री ने गुरूवार को कहा कि तीन टी20 मैचों की श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका से 0-2 से हारना अगले साल होने वाले आईसीसी टी20 विश्वकप को लेकर भारत के लिए एक बड़ी सीख है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच गुरूवार तीसरा मैच बिना एक भी गेंद खेले खराब मौसम के चलते रद्द हो गया और श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका ने 2-0 से बढ़त बना ली।

शास्त्री ने कहा कि परिणामों से वह भी क्षुब्ध हैं जैसा कि कोई भी होगा। हम जीतने के लिए खेलते हैं लेकिन यदि हम नहीं जीते तो इसका यह मतलब नहीं कि उनकी रातों की नींद उड़ जाए। यह आने वाले टी20 विश्वकप के लिए उन्हें काफी कुछ सिखाने वाला है।

# क्या अपने कॅरियर की फिनिश लाइन पर पहुंच गए हैं कैप्टन धोनी ?

**मुंबई :** भारतीय टीम के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने कटक टी20 में दक्षिण अफ्रीका से हार के बाद कहाकि वे कुछ ज्यादा ही दिमाग का इस्तेमाल करते हैं। यह फॉर्मेट दिमाग लगाने का नहीं है बल्कि चाहे जैसी परिस्थिति हो लंबे शॉट लगाने का है। यह बयान धोनी की वर्तमान फॉर्म और टीम इंडिया पर उनकी कमांड का पूरा खाका पेश कर देता है। वे शायद खुद महसूस करने लगे हैं कि अब वे पहले की तरह खेल पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे हैं। हालांकि धोनी अब भी सबसे फिट खिलाड़ियों में से एक हैं लेकिन टेस्ट से संन्यास और घरेलू मैच न खेल पाने के कारण वे मैच प्रेक्टिस की कमी के शिकार हैं।

जब से विराट कोहली को टेस्ट टीम का कप्तान बनाया गया था यह तो तय था अब वनडे और टी20 में धोनी गिने-चुने दिनों के मेहमान हैं लेकिन माना जा रहा था कि 2016 में होने वाले वर्ल्ड टी20 उनके अलविदा कहने के लिए शानदार मौका होगा। उनके कॅरियर ने इसी टूर्नामेंट से उड़ान भरी थी लेकिन गिरती फॉर्म दुनिया के बेहतरीन फिनिशर के लिए परेशानी पैदा कर रही है। वर्ल्ड कप में प्रदर्शन को अलग कर दें तो ऑस्ट्रेलिया में ट्राई सीरिज, फिर बांग्लादेश में वनडे और अब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 सीरिज गंवाने के बाद धोनी पर खतरे की तलवार लटक रही है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांच मैचों की वनडे सीरिज धोनी के लिए अग्नि परीक्षा होगी।

धोनी खुद भी जल्द ही क्रिकेट से अलग होने के संकेत दे रहे हैं। कटक टी20 के बाद उन्होंने कहाकि, मैं बल्लेबाजी में ऊपर आना चाहता हूं ताकि कोई और फिनिशर की भूमिका निभाए। मैं ज्यादा दिनों तक नहीं खेलूंगा इसलिए किसी और को यह जिम्मेदारी लेनी होगी। नंबर 6 महत्वपूर्ण बल्लेबाजी क्रम है। जब तक कोई नया बल्लेबाज इस चुनौती का सामना नहीं करेगा किसे पता कौन सही रहेगा। यदि मैं

पांचवें नंबर पर उतरता हूं तो कोई और यह जिम्मेदारी ले लेगा। यह बात सही है धोनी अब पहले की तरह गेंदबाजों में डर पैदा नहीं करते।

## जब धोनी की ताकत उनकी कमजोरी बन गई

### न्यूजीलैंड बनाम भारत 2012

विराट कोहली के 41 गेंद में 70 रन की पारी के बावजूद 167 रन का लक्ष्य कप्तान एमएस धोनी की संकोची पहुंच के चलते मुश्किल हो गया और आखिर में एक रन से हार मिली। भारत को 42 गेंद में जीत के लिए 49 रन चाहिए थे और धोनी व युवी मैदान में थे। धोनी ने अंत तक लंबे शॉट लगाने से परहेज किया जिससे लक्ष्य दूर रह गया। धोनी ने 23 गेंद में 22 रन की पारी खेली।

### भारत बनाम श्रीलंका 2014

वर्ल्ड टी20 का फाइनल मुकाबला और विराट कोहली ने एक बार फिर टीम को शानदार शुरूआत दी। वापसी कर रहे युवराज सिंह को तो समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए, उन्होंने 21 गेंद में 11 रन बनाए। धोनी ने भी रन बनाने के लिए बल्ला घुमाया लेकिन मलिंगा चकमा देने में कामयाब रहे। नतीजा रहा कि भारत के वल 130 रन बना पाया और हार गया।

### भारत बनाम इंग्लैण्ड 2014

एक बार फिर धोनी की संकोची अप्रॉच टीम इंडिया की जीत के आड़े आ गई। कोहली ने 40 गेंद में 66 रन ठोक भारत को जीत की राह पर डाल दिया और टीम इंडिया को जीतने के लिए 35 गेंद में 50 रन चाहिए थे। धोनी ने एक बार फिर सबको हैरान करते हुए अंबाती रायुडू से पहले रवीन्द्र जडेजा को भेजा। जडेजा के आउट होने के बाद धोनी ने अंतिम सात गेंद में तीन बार सिंगल नहीं लिए और आखिरी गेंद पर विजयी रन बनाने का जिम्मा खुद ले लिया। यह दांव नाकामयाब रहा और भारत पांच रन से हार गया।

# सेरेना विश्व रैंकिंग में लगातार 261 वें सप्ताह शीर्ष पर

**लंदन :** दिग्गज अमरीकी टेनिस स्टार सेरेना विलियम्स महिला टेनिस संघ (डब्ल्यूटीए) की विश्व रैंकिंग में शीर्ष पर कायम हैं। सेरेना के 11,285 अंक हैं और वह दूसरी विश्व वरीयता प्राप्त रोमानियाई सिमोना हालेप से पूरे 4615 अंक आगे हैं। सेरेना ने लगातार 261 सप्ताह तक शीर्ष पर रहते हुए दिग्गज अमेरिकी खिलाड़ी क्रिस एवर्ट से आगे निकल गईं।

सेरेना अब सर्वाधिक समय तक शीर्ष पर रहने के मामले में सिर्फ स्टेफी ग्राफ (377 सप्ताह) और मार्टिना नवरातिलोवा (332 सप्ताह) से पीछे रह गई हैं। स्पेन की उदीयमान सितारा गारबाइन मुगुरूजा ने ताजा रैंकिंग में करियर में पहली बार शीर्ष-5 में प्रवेश किया। मुगुरूजा ने तीन स्थानों की छलांग लगाते हुए पांचवां स्थान हासिल किया। सेरेना की बड़ी बहन वीनस को वुहान ओपन जीतने का रैंकिंग में 10 स्थानों का फायदा मिला। वह 24वें से 14वें पायदान पर पहुंच गईं। शीर्ष पांच में मुगुरूजा के रूप में एकमात्र बदलाव हुआ।

### डब्ल्यूटीए विश्व रैंकिंग

| | |
|---|---|
| 1. सेरेना विलियम्स (अमरीका) | 11,285 अंक |
| 2. सिमोना हालेप (रोमानिया) | 6,670 अंक |
| 3. मारिया शारापोवा (रूस) | 4,692 अंक |
| 4. पेत्रा क्वितोवा (चेक गणराज्य) | 3,851 अंक |
| 5. गारबाइन मुगुरूजा (स्पेन) | 3,691 अंक |
| 6. लूसी सफारोवा (चेक गणराज्य) | 3,406 अंक |
| 7. प्लाविया पेनेटा (इटली) | 3,253 अंक |
| 8. एग्निएज्का रादवांस्का (पोलैंड) | 3,225 अंक |
| 9. कैरोलीना प्लिस्कोवा (चेक गणराज्य) | 3,220 अंक |
| 10. एंजेलिक केरबर (जर्मनी) | 3,220 अंक |

# वर्ल्ड रैंकिंग : साइना नंबर 1 पर बरकरार, ज्वाला-अश्विनी को एक पोजिशन का नुकसान

**नई दिल्ली :** भारत की स्टार शटलर साइना नेहवाल वर्ल्ड बैडमिंटन रैंकिंग में टॉप पोजिशन पर बरकरार हैं। वहीं, महिला डबल जोड़ी ज्वाला गुट्टा और अश्विनी पोनप्पा एक स्थान गिरकर 12वें नंबर पर खिसक गई हैं। गुरुवार को जारी वर्ल्ड बैडमिंटन रैंकिंग में साइना के 82792 प्वाइंट हैं और वो नंबर वन पोजिशन पर बरकरार हैं।

### कोरियाई खिलाड़ी पहुंची तीसरे स्थान पर

स्पेन की कैरोलीना मारिन उनके बाद दूसरे स्थान पर हैं, जबकि कोरिया की सून जी हुयेन चार स्थान की छलांग लगाकर तीसरे नंबर पर पहुंच गई हैं। दो बार की ब्रॉन्ज मेडल विजेता भारत की पीवी सिंधू अपने 13वें स्थान पर बरकरार हैं।

### ज्वाला-अश्विनी को नुकसान

महिला युगल में भारत की टॉप जोड़ी ज्वाला और अश्विनी एक स्थान खिसककर 12वें स्थान पर आ गई हैं। खराब प्रदर्शन से जूझ रही भारतीय जोड़ी को अगस्त में हुई वर्ल्ड चैम्पियनशिप में क्वार्टरफाइनल में हार का सामना करना पड़ा था। वहीं, ये जोड़ी जापान ओपन के पहले ही राउंड में बाहर हो गई थीं।

### पुरुष रैंकिंग

पुरूषों की सिंगल रैंकिग में कोरिया ओपन के रनरअप के श्रीकांत 69164 रेटिंग प्वाइंट के साथ पांचवें स्थान पर बने हुए हैं। राष्ट्रमंडल खेलों में गोल्ड मेडल जीत चुके परूपल्ली कश्यप आठवें नंबर पर बरकरार हैं। कश्यप के 57981 रेटिंग अंक हैं। टॉप 25 में एक और इंडियन प्लेयर एचएस प्रणय 16वें स्थान पर हैं। पुरुष डबल्स की टॉप 25 की लिस्ट में मनु अत्री और बी सुमित रेड्डी की जोड़ी को भी एक स्थान का नुकसान उठाना पड़ा है और वे 19वें से 20वें स्थान पर खिसक गए हैं। वहीं, मिक्स्ड डबल्स के टॉप 25 में कोई भी इंडियन प्लेयर नहीं है।

## IPL से बाहर होना चाहती है पेप्सी, कहा बदनामी का खेल

**नई दिल्ली :** आईपीएल 2016 के सीजन में हो सकता है इसके साथ इसके टाइटल स्पॉन्सर पेप्सी का नाम जुड़ा न सुनाई दे, क्योंकि पेप्सी ने बीसीसीआई को नोटिस भेज कहा है कि वह आईपीएल के टाइटल स्पॉन्सरशिप से हटना चाहती है। साथ ही पेप्सी ने इसका कारण भी बताया है, पेप्सी ने कहा है कि स्पॉट फिक्सिंग केस से हुई आईपीएल की बदनामी के बाद वह आईपीएल के टाइटल से हटना चाहती है।

पेप्सिको ने अपने ब्रैंड नेम पेप्सी को आईपीएल के टाइटल से हटाने के फैसले से आईपीएल के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुंदर रमन को अवगत करा दिया है और सुंदर रमन ने इसकी जानकारी बीसीसीआई अध्यक्ष शशांक मनोहर को भी दी है। आईपीएल से जुड़े एक सूत्र ने कहा, स्पॉट फिक्सिंग केस के सामने आने के बाद पिछले सीजन में ही पेप्सी आईपीएल से हटना चाहती थी लेकिन बीसीसीआई ने पेप्सी को एक साल के लिए न जाने के लिए मना लिया था लेकिन इस बार कंपनी ने पूरी तरह फैसला कर लिया है कि वह आईपीएल से आगे नहीं जुड़ी रहेगी। पेप्सी आईपीएल का टाइटल स्पॉन्सर 2013 में बना था, पांच सीजन के लिए यह डील 396.8 करोड़ रुपये में हुई थी।

### मेरे और माराडोना जैसा दूसरा कोई नहीं : पेले

**नई दिल्ली :** ब्राजील के महानतम फुटबॉलर पेले ने कहा कि उनके और अर्जेंटीना के डिएगो माराडोना जैसा कोई और नहीं होगा। फुटबॉल के जादूगर कहे जाने वाले 74 वर्ष के एडसन अरांतेस डो नासिमेंटो उर्फ पेले अगले सप्ताह 56वें सुब्रतो कप 2015 फाइनल के विशेष दूत के तौर पर यहां आएंगे। उन्होंने कहा कि पेले सिर्फ एक ही होगा, क्योंकि मेरे माता पिता दूसरा पेले पैदा नहीं कर सकते। हर खिलाड़ी बेमिसाल और अलग होता है। इसी तरह माराडोना, जिनेदिन जिदान या बेकनबउर जैसा भी कोई नहीं होगा। ब्लैक पर्ल से मशहूर पेले तीन विश्व कप और एक बार फीफा के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार जीत चुके हैं।

राजकोट वन डे मैच पर पाटीदार आंदोलन का साया

# आंदोलनकारी स्टेडियम में जुटने की तैयारी में

**अहमदाबाद :** गुजरात के राजकोट में 18 अक्तूबर को भारत और दक्षिण अफ्रीका का तीसरा वन डे मैच खेला जाएगा, लेकिन इस मैच को लेकर आयोजक बेहद चिंता में हैं। गुजरात में चल रहे पाटीदार आरक्षण आंदोलन का साया इस वन डे मैच पर भी मंडरा रहा है।

### हार्दिक ने पटेलों से स्टेडियम में पहुंचने का आह्वान किया

इस आंदोलन के नेता हार्दिक पटेल ने पटेलों को आह्वान किया है कि वे हजारों की संख्या में इस मैच का टिकट खरीदकर ग्राउंड पर पहुंचें। ग्राउंड पर वे पाटीदार आरक्षण आंदोलन से जुड़े कपड़े और टोपी पहनकर पहुंचें ताकि पूरी दुनिया में पटेल आरक्षण से जुड़ा संदेश पहुंच जाए। इसे लेकर सरकार और क्रिकेट एसोसिएशन परेशान है।

### सीएम नहीं जाएंगी, टिकट आई कार्ड से

सूत्रों के मुताबिक गुजरात की मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल ने तो फैसला ले लिया है कि वे मैच में नहीं जाएंगी। आयोजक भी इसे गंभीरता से ले रहे हैं। सौराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन ने फैसला किया है कि अब टिकट सिर्फ आई कार्ड दिखाकर ही खरीदे जा सकेंगे। एक व्यक्ति को दो से ज्यादा टिकट नहीं बेचे जाएंगे। इसके अलावा यह आश्वासन लिया जाएगा कि मैच के दौरान कोई गड़बड़ी न हो और अगर ग्राउंड पर कोई गड़बड़ी होती है तो तुरन्त ग्राउंड का वह हिस्सा खाली करवा दिया जाएगा। आयोजकों को चिंता यह है कि कटक की घटना के बाद अगर दोबारा मैच के दौरान कोई गड़बड़ी होती है तो भारत की साख पर सवाल उठेंगे।

## बिजनेस न्यूज

### पोर्श ने लॉन्च की केमैन स्पेशल ब्लैक एडिशन

**नई दिल्ली :** पोर्श ने अपनी स्पोर्ट्स कार केमैन का स्पेशल ब्लैक एडिशन लॉनच किया है। कंपनी ने इस कार में कई नए फीचर्स दिए हैं। हालांकि इंजन में कोई बदलाव नहीं किया गया है और ब्लैक एडिशन में भी 2.7 लीटर का फ्लैट सिक्स इंजन भी लगाया गया है। इसमें स्टैंडर्ड एडिशन की तरह ही 6 स्पीड का मैनुअल गियरबॉक्स दिया गया है। पोर्श ने ब्लैक एडिशन के लिए केमैन के स्टैंडर्ड मॉडल का उपयोग किया है। लेकिन इसमें 911 तथा बॉक्स्टर के फीचर्स शामिल किए गए हैं।

कार में 20 इंच के कैरेरा क्लासिक एलॉय व्हील्स, लेदर अपहोल्डस्ट्रे, जेनन हेडलाइट्स, डोर सिल गार्ड तथा ब्लैक एडिशन का नया लोगो लगाया है। साथ ही एलमिनियम की बनी साइड विंडो ट्रिम, पोर्श नेविगेशन सिस्टम, ऑटो डिमिंग रियर व्यू मिरर, रेन सेंसर युक्त वाइपर्स, फ्रंट तथा रियर पार्किंग सेंसर्स एवं क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स को भी शामिल किया गया है।

इंटीरियर की बात करें तो कार में स्पोर्ट्स स्टीयरिंग व्हील, हीटेड सीट्स, 2 जोन क्लाइमेट कंट्रोल और एडवांस्ड साउंड सिस्टम दिया गया है। यह सभी फीचर्स पोर्श की 911 और बॉक्स्टर ब्लैक एडिशन कारों में भी दिए गए हैं। केमैन के लिए कंपनी ने दो रंगों का विकल्प दिया है। ग्राहक, स्टैंडर्ड ब्लैक और जेट ब्लैक मेटलिक में से कोई एक रंग अपने लिए चुन सकते हैं।

### महंगी होगी चाय की चुस्कियां

**अहमदाबाद :** प्रीमियम क्वॉलिटी वाली चाय पर मौसम की मार से आपकी चुस्कियां महंगी हो सकती हैं। आसाम में मानसून की कमजोरी और चाय के प्रमुख उत्पादक केन्या जैसे अफ्रीकी देशों इसके दाम पहले ही बढ़ने से जल्द ही ऐसा होने के आसार हैं। पश्चिम भारत टी डीलर्स एसोसिएशन और भारतीय चाय बोर्ड की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक आसाम में मानसून की मार से उत्तम क्वॉलिटी की चाय का उत्पादन पांच फीसद तक घट गया है। इससे चाय के दाम प्रति किलो 20 से 30 रुपये बढ़ सकते हैं। देश में सालाना 55 करोड़ किलो के चाय उत्पादन में प्रीमियम क्वॉलिटी की 17 फीसद हिस्सेदारी है। टी डीलर्स एसोसिएशन के सचिव पारस देसाई बताते हैं कि चाय की क्वॉलिटी को बरकरार रखना है, तो कीमत बढ़ानी पड़ेगी। केन्या समेत अफ्रीकी देश में पहले ही चाय के दाम 40 से 80 रुपये बढ़ चुके हैं। भारत में चाय का सालाना कारोबार 13 से 14 हजार करोड़ रुपये का है। इसमें 65 फीसद पैकेज्ड चाय की खपत होती है।

### माइक्रोसॉफ्ट ने लॉन्च किया लूमिया 640 4जी स्मार्टफोन

**चेन्नई :** माइक्रोसॉफ्ट ने लूमिया सीरीज के तहत अपने मोबाइल हैंडसेट पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए, लूमिया 640 एलटीई 4जी उपकरण लॉन्च किया है। इसकी कीमत 17,399 रुपये है। माइक्रोसॉफ्ट मोबाइल डिवाइसेस के निदेशक (बिक्री) दक्षिण, टी एस श्रीधर ने कहा कि यह स्मार्टफोन देशभर में उपलब्ध होगा। हम भारतीय उपभोक्ताओं की जरूरतों को समझते हैं और लूमिया सीरीज के जरिये हमने हमेशा ग्राहकों को नया अनुभव और फीचर्स देने का प्रयास किया है। माइक्रोसॉफ्ट दूरसंचार ऑपरेटर भारती एयरटेल के साथ जोड़कर 31 दिसंबर, 2015 तक इस स्मार्टफोन की बिक्री करेगी।

**लूमिया स्मार्टफोन के फीचर**
- 13 एमपी का कैमरा
- 5.7 इंच की एचडी स्क्रीन
- विंडोज 8.1 आपरेटिंग सिस्टम

# आरबीआई के रेट कट से कस्टमर नहीं, बैंकों को फायदा

पिछले दिनों आरबीआई की मॉनिटरी पॉलिसी की रिव्यू मीटिंग में रीपो रेट में उम्मीद से बढ़कर 50 बेसिस पॉइंट की कटौती की। इसके साथ ही आरबीआई ने पिछले एक साल के अंदर 125 बेसिस पॉइंट की कटौती कर दी है। रीपो रेट में कटौती राहत की बात है लेकिन इसका फायदा आम लोगों तक सही से नहीं पहुंचा है। इससे जहां तक बैंकों का ही फायदा हुआ है, उनकी कमाई बढ़ी है। लाखों जमाकर्ताओं ने शिकायत की है कि आरबीआई ने रेट में जितनी कटौती की है, उससे कहीं ज्यादा बैंकों ने डिपॉजिट रेट कम कर दिया है। डिपॉजिट रेट कम करने से कस्टमर का नुकसान हुआ है क्योंकि उनकी बचत पर कम रिटर्न मिलेगा।

**मुंबई :** रेटिंग एजेंसी इंडिया रेटिंग्स की एक स्टडी में कहा गया है कि आरबीआई ने रेट में जितनी कटौती की है, उसका सिर्फ आधा ही बैंकों ने अपने कस्टमर्स को लाभ दिया है। रीपो रेट में कटौती का फायदा बैंक आगे कस्टमर को नहीं दे रहे हैं और सरकार और इंडस्ट्री दोनों के निशाने पर आरबीआई है। स्टडी में तीन रोचक हकीकत सामने आई है जिससे यह खुलासा हुआ है कि हर हाल में बैंक का ही फायदा हुआ है।

आरबीआई ने रीपो रेट में 125 बेसिस पॉइंट की कटौती की है जबकि बैंकों ने फिक्स्ड डिपॉजिट रेट्स में 130 बेसिस पॉइंट्स की कटौती कर दी। इससे कस्टमर्स को बैंकों में उनकी बचत पर कम रिटर्न मिलता है। दूसरी बात बैंकों ने अपने ब्याज दर में महज 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती कर दी। शॉर्ट टर्म पेपर्स में ब्याज दर में 150 बेसिस पॉइंट्स की गिरावट आई है।

रेटिंग एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि बैंकों द्वारा आगे रेट कट का फायदा नहीं दिया जा रहा है। बैंकों द्वारा पॉलिसी साइकल का इस्तेमाल अपने लाभ के लिए किया जा रहा है।

इसका उदाहरण पिछले सप्ताह तब नजर आया जब आरबीआई ने 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की। बैंकिंग सेक्टर में अग्रणी एसबीआई ने अपने ब्याज दर में 40 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की और इस तरह से आरबीआई के फैसले का सिर्फ 80 फीसदी आगे पहुंचाया। इससे भी बुरा तो यह है कि इसके नए होम लोन कस्टमर्स को सिर्फ 20 बेसिस पॉइंट्स का फायदा मिलेगा जो आरबीआई के रेट कट का महज 40 फीसदी है। प्राइवेट सेक्टर के बैंकों में आईसीआईसीआई और एचडीएफसी ने 35-35 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है जो आरबीआई की कटौती का महज 70फीसदी है।

अब इंडिया इंक के टॉप लीडरों ने भी यह आवाज उठानी शुरू कर दी है कि बैंकों को रेट का लाभ आगे पहुंचाने के लिए कुछ ज्यादा करने की जरूरत है। अब तक तो सिर्फ आरबीआई के गवर्नर ही यह कहते रहे हैं। एल ऐंड टी के चेयरमैन ए.एम.नाइक ने रीपो रेट में कटौती के बावजूद अपनी ब्याज दर में कटौती नहीं करने को लेकर डोमेस्टिक बैंकों की आलोचना की है।

### SBI के बाद ICICI बैंक ने होम लोन पर दिखाया पैंतरा

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बाद देश में प्राइवेट सेक्टर के सबसे बड़े बैंक आईसीआईसीआई बैंक ने भी होम लोन रेट्स पर अपना स्प्रेड बढ़ा दिया है। इस तरह नए बॉरोअर्स को बेस रेट में कमी का पूरा फायदा नहीं मिलेगा। महिलाओं और वेतनभोगी कर्जदारों के मामले में इस बैंक ने फ्लोटिंग रेट्स के लिए अपना स्प्रेड 0.10 पर्सेंट बढ़ा दिया है। इस तरह इन कर्जदारों को बेस रेट से 0.10 पर्सेंट ज्यादा पर कर्ज मिलेगा। आईसीआईसीआई बैंक ने अपनी बेस रेट को पिछले सप्ताह 0.35 पर्सेंट घटाकर 9.35 पर्सेंट कर दिया था। आरबीआई के नियमों के अनुसार, बैंक बेस रेट से कम पर कर्ज नहीं दे सकते हैं। स्प्रेड बढ़ने के साथ स्थिति यह बनी है कि 5 करोड़ रुपये से कम कर्ज लेने वाली महिलाओं को 9.60 पर्सेंट की दर से ब्याज चुकाना होगा। इससे पहले उनके लिए ब्याज दर 9.85 पर्सेंट थी। बैंक की वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक, सैलरीड बॉरोअर्स को 9.65 पर्सेंट पर लोन मिलेगा। पहले उनके लिए 9.90 पर्सेंट की ब्याज दर थी। महिलाओं को सबसे सस्ता लोन भारतीय स्टेट बैंक दे रहा है। वह उन्हें 9.50 पर्सेंट ब्याज ले रहा है। वहीं दूसरे बॉरोअर्स को वह 9.55 पर्सेंट के इंटरेस्ट रेट पर कर्ज दे रहा है। नॉन-बैंक लेंडर एचडीएफसी ने सोमवार को रेट कट का ऐलान किया था। महिलाओं के लिए 9.60 पर्सेंट और दूसरे लोगों के लिए 9.65 पर्सेंट के इंटरेस्ट रेट के साथ वह आईसीआईसीआई बैंक के पायदान पर है। आरबीआई जहां पॉलिसी रेट्स में कमी कर कर्ज लेने वालों को राहत देना चाहता है, वहीं बैंक इससे बचने के रास्ते निकाल रहे हैं। आमतौर पर बेस रेट पर स्प्रेड किसी खास सेगमेंट से हो सकने वाले जोखिम के बारे में बैंक के आकलन का संकेत होता है।

# रेलवे का पायलट प्रॉजेक्ट, देख सकेंगे मनपसंद मूवी

**नई दिल्ली :** शताब्दी और राजधानी के यात्रियों की तरह ही अब मेल एक्सप्रेस ट्रेनों के मुसाफिर भी सफर के दौरान अपने मोबाइल, लैपटॉप या टैबलट पर मनपसंद फिल्मों का लुत्फ उठा सकेंगे। रेलवे इसकी शुरुआत ताज एक्सप्रेस से करने जा रहा है। उम्मीद की जा रही है कि अगले एक माह में ताज एक्सप्रेस में यह सुविधा शुरू की जाएगी। शुरुआत में यह नि:शुल्क सर्विस होगी, लेकिन अगर यह पायलट प्रॉजेक्ट कामयाब हुआ तो बाद में बड़े पैमाने पर ट्रेनों में यह सुविधा दी जाएगी, उस वक्त फिल्म देखने के लिए पांच रुपये से लेकर 50 रुपये तक चुकाने होंगे। इंडियन रेलवे के सूत्रों के मुताबिक एक इंडियन कंपनी को ताज एक्सप्रेस में यह सुविधा शुरू करने के लिए रेलवे की ओर से इजाजत दे दी गई है। रेलवे का कहना है कि शताब्दी और राजधानी ट्रेनों के कोच में तो कुर्सियां (चेयरकार) लगी होती हैं इसलिए उन ट्रेनों में तो कोच के एक ओर या दोनों ओर टीवी स्क्रीन लगाकर पैसेंजरों को मनोरंजन की सुविधा उपलब्ध करायी जा सकती है।

कुछ शताब्दी ट्रेनों में तो यह सुविधा दी भी गई है लेकिन दूसरे कोच, जिनमें बर्थ सिस्टम होता है। उसमें एक कोच में दोनों तरफ टीवी स्क्रीन लगाकर यह सुविधा नहीं दी जा सकती। ऐसी ट्रेनों के कोच के पैसेंजरों के लिए ही रेलवे नई सुविधा शुरू करने की तैयारी में है। रेलवे के अधिकारियों का कहना है कि दरअसल, मनोरंजन का कॉन्टेंट उपलब्ध कराने वाली कंपनी ट्रेन में उपकरण लगाकर वहां तरंगों की मदद से मनोरंजक कॉन्टेंट उपलब्ध कराएगी। ट्रेन में सफर करने वाले पैसेंजर अपने मोबाइल, टेबलट या लैपटॉप पर उसके पास ऑप्शन होंगे कि वह कौन-सा कॉन्टेंट देखना चाहता है। इनमें फिल्में भी होंगी। इसके बाद पैसेंजर अपनी मनपसंद फिल्म या दूसरे कॉन्टेंट डाउनलोड करके देख सकेगा।

### बीफ एक्सपोर्ट में गोमांस की जांच कराने के लिए लैब स्थापित करेगी मोदी सरकार

**नई दिल्ली :** गोमांस को लेकर देश भर में छिड़ी बहस के बीच केंद्र सरकार का कहना है कि वह जांच के लिए लैब बनाएगी। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री संजीव बालियान ने कहा कि हम दुनिया के दूसरे देशों में होने वाले मांस निर्यात की जांच करेंगे कि इसमें गोमांस तो शामिल नहीं हैं। बालियान ने कहा कि हमने अधिकारियों से कहा कि वह इस बारे में संभावनाएं तलाशें कि कैसे गोमांस की जांच की जा सकती है। उन्होंने कहा कि हम गोमांस की जांच के लिए लैब बनाएंगे।

बालियान ने कहा कि बंदरगाहों पर यह लैब बनाई जाएगी। पांच से छह राज्यों को छोड़कर उत्तर प्रदेश समेत देश के ज्यादा सूबों में गोवध पर बैन है। लेकिन यूपी में अवैध तरीकों से गायों को काटे जाने की खबरें सुनने को मिल रही हैं, इसलिए हमने लैबोरेट्री स्थापित करने का फैसला लिया है।

बालियान ने कहा, एपीडा के अधिकारियों ने बताया कि गौमांस का कोई अवैध निर्यात नहीं हो रहा है क्योंकि इसके उत्पादन और निर्यात की कड़ाई से निगरानी की जाती है। यह काम मीटनेट नाम के एक साफ्टवेयर के जरिये किया जाता है। फिर भी बंदरगाहों पर जांच प्रयोगशालायें लगाने का यह फैसला किया गया है ताकि गौमांस का अवैध निर्यात न हो सके। उन्होंने कहा कि मांस का ज्यादातर निर्यात मुंबई बंदरगाह के जरिये किया जाता है। यह पूछे जाने पर कि क्या दादरी कांड के बाद सरकार ने यह पहल की है, बालियान ने कहा कि हमने यह प्रयास पहले से ही शुरू कर दिए थे, लेकिन अब चर्चा में आए हैं। कृषि राज्य मंत्री ने कहा कि हमने सरकार बनने के कुछ दिन बाद ही मीट एक्सपोर्ट पर दी जाने वाली सब्सिडी समाप्त कर दी थी। तब से अब तक मीट के निर्यात में 14.7 पर्सेंट की कमी आ चुकी है।

# 4G वॉर के लिए एयरसेल से स्पेक्ट्रम खरीदेगी एयरटेल!

**नई दिल्ली :** भारती एयरटेल 2300 मेगाहट्र्ज बैंड में एयरसेल की 4G एयरवेव्स खरीदना चाहती है। इसके लिए उसने एयरसेल से बातचीत शुरू की है। भारती एयरटेल दरअसल अपनी हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड सेवाओं का देश में विस्तार करना चाहती है और इस मामले में रिलायंस जियो इंफोकॉम के करीब पहुंचना चाहती है। इसके लिए ही वह एयरसेल से स्पेक्ट्रम खरीदना चाहती है।

एयरटेल ने ऐसी किसी बातचीत से इनकार किया, वहीं मैक्सिस की एयरसेल ने कहा कि वह मार्केट की अटकलों पर कमेंट नहीं करती, लेकिन मामले की जानकारी रखने वाले लोगों ने बताया कि स्पेक्ट्रम ट्रेडिंग रूट के जरिए एयरसेल की 4G बैंडविड्थ खरीदने पर एयरटेल ने उससे बात की है। उधर एयरटेल, वोडाफोन इंडिया और आइडिया सेल्युलर सहित देश की टॉप जीएसएम कंपनियां ज्यादा भुगतान करने की क्षमता वाले डेटा सब्सक्राइबर्स को अपने साथ जोड़ने के लिए रिलायंस जियो के साथ जंग में उलझी हैं, जो दिसंबर में अपनी 4G सर्विसेज लॉन्च करने वाली है। वहीं जियो हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड सर्विसेज से जुड़ी बैंडविड्थ होल्डिंग बढ़ाने के लिए रिलायंस कम्युनिकेशंस के साथ ऑल इंडिया स्पेक्ट्रम शेयरिंग और ट्रेडिंग डील्स करने वाली है। एयरटेल के पास अभी 1800 मेगाहट्र्ज और 2300 मेगाहट्र्ज की एयरवेव्स हैं, जिन पर देश के 22 में से 15 सर्कल्स में इसकी 4G टेक्नोलॉजी निर्भर है। 8 सर्कल्स में एयरसेल की एयरवेव्स से सुनील मित्तल की कंपनी को 18 सर्कल्स में 4G सर्विसेज देने में सहूलियत होगी और इस तरह वह मुकेश अंबानी की जियो के करीब पहुंच जाएगी, जिसके पास सभी 22 सर्कल्स में 4G एयरवेव्स हैं।

4G के अपने 8 में से 6 सर्कल्स में सर्विसेज शुरू करने वाली एयरसेल पर 20,000 करोड़ रुपये का कर्ज है। वह 2G घोटाले में भी घिरी हुई है। एयरटेल जैसी किसी डील से उसे कर्ज चुकाने के लिए नकदी मिलेगी।

फिर वह एयरटेल, वोडाफोन इंडिया, आइडिया सेल्युलर और जियो-आरकॉम जैसी दिग्गजों की 4G जंग में भी नहीं फंसना चाहती है क्योंकि इसमें उसे ज्यादा रकम झोंकनी पड़ेगी। मामले की जानकारी रखने वाले ने कहा, एयरसेल 2300 मेगाहट्र्ज में एयरवेव्स बेचना चाहती है और अभी मार्केट में इसकी केवल एक खरीदार एयरटेल है। 1800 और 2100 मेगाहट्र्ज में दूसरी बड़ी कंपनियां दिलचस्पी दिखा सकती हैं।

### कमजोर मॉनसून के चलते बैंकों के 8 लाख करोड़ रुपये फंसने की आशंका

**मुंबई :** इस साल मॉनसून में अनुमान से कम बारिश ने किसानों के माथे पर शिकन तो बढ़ाई ही है, बैकों को भी चिंता में डाल दिया है। मॉनसून में कमी के चलते देश के बैंकिंग सेक्टर को 8 लाख करोड़ रुपये तक की चपत लग सकती है। बैंकों ने 8,07,800 करोड़ रुपये का कृषि ऋण बांट रखा है, लेकिन कम बारिश से किसानों की परेशानी से यह रकम फंसती दिख रही है।

भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक इस साल बारिश में 14 पर्सेंट की कमी रही है। इसके बाद बैंकर्स भी अपने लोन की राशि को रिस्ट्रक्चर करने पर विचार कर रहे हैं। बैंक को इसमें से बड़ी राशि नॉन परफॉर्मिंग असेट्स में डालनी पड़ सकती है।

देश के सबसे बड़े सार्वजनिक बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के चीफ जनरल मैनेजर जीके कंसल ने कहा, "उन इलाकों में परेशानी हो सकती है, जहां बारिश 20 पर्सेंट तक कम हुई है। यह सरकार के स्तर का मसला है कि किस इलाके को सूखा प्रभावित क्षेत्र घोषित किया जाता है। इसके बाद बैंकों को भी अपने कर्ज का पुनर्गठन करना पड़ेगा।"

कर्ज के पुनर्गठन का अर्थ बैंक की ओर से ऋण की राशि की किस्तों को दोबारा निर्धारित करना ताकि कर्ज लेने वाले आसानी से उसका भुगतान कर सकें। ताजा आंकड़ों के मुताबिक उत्तर और पश्चिमी भारत के कई इलाके भयंकर सूखे के शिकार हो सकते हैं। पूर्वी और उत्तर प्रदेश में इस मॉनसून सीजन में बारिश में क्रमश: 46 एवं 43 पर्सेंट की कमी रही है। इसके अलावा कोंकण और गोवा में 31 फीसदी कम बारिश हुई है। इसी तरह सेंट्रल महाराष्ट्र और मराठवाड़ा को भी बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है।

### एक जनवरी से लागू होंगी 7वें वेतन आयोग की सिफारिशें

**नई दिल्ली :** वित्तमंत्रालय ने विश्वास जताया कि सातवां वेतन आयोग केंद्रीय कर्मचारियों एवं पेंशनभोगियों के मामले में अपनी सिफारिश देते समय राजकोषीय स्थिति को लेकर सरकार की चिंताओं के प्रति सचेत होगा। न्यायमूर्ति एके माथुर की अध्यक्षता वाले आयोग को केंद्र सरकार के करीब 48 लाख कर्मचारियों तथा 55 लाख पेंशनभोगियों के नए वेतनमान, भत्तों और पेंशन की समीक्षा पर अपनी रिपोर्ट दिसंबर 2015 तक देनी है।

वित्त सचिव रतन वाटल ने संवाददाताओं से कहा, हमने वेतन आयोग को सार्वजनिक व्यय के टिकाउपन के संदर्भ में अपनी चिंता से अवगत कराया है। मुझे भरोसा है कि आयोग के सदस्य एवं चेयरमैन इससे अवगत हैं और हमारी चिंताओं को लेकर संवेदनशील होंगे।

उन्होंने कहा कि आयोग के पास अपनी रिपोर्ट देने के लिए दिसंबर तक का समय है। उसके बाद वित्त मंत्रालय में गठित होने वाला सचिवालय उसकी जांच करेगा। हालांकि सिफारिशों को 1 जनवरी 2016 से क्रियान्वित किया जाना है, पर चालू वित्त वर्ष में सरकारी खजाने पर बहुत ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा, हालांकि उन्होंने कहा कि इसका अगले वित्त वर्ष पर जरूर प्रभाव पड़ेगा।

# नए जमाने के मजनूं बने टाइगर श्रॉफ, लैला का है इंतजार !

**मुंबई :** फिल्म लैला-मजनूं के रीमेक में टाइगर श्रॉफ नए दौर के मजनूं बन सकते हैं। खबर है कि निर्माता एकता कपूर ने लैला-मजनूं के रीमेक के लिए टाइगर श्रॉफ को ऑफर दिया है। 1976 में रिलीज हुई हरनाम सिंह रवैल निर्देशित फिल्म लैला-मजनूं में ऋषि कपूर ने मजनूं की भूमिका निभाई थी और रंजीता लैला बनीं। अब इस फिल्म के रीमेक की योजना बना रही हैं एकता कपूर। सूत्रों के मुताबिक, यह फिल्म कास्टिंग को लेकर अटकी हुई थी। बताया जा रहा है कि एकता कपूर टाइगर श्रॉफ से बहुत प्रभावित हैं। टाइगर उनकी फिल्म उड़ता पंजाब में अभिनय कर रहे हैं। एकता ने टाइगर के काम को देखकर उन्हें नया ऑफर दिया है। जब टाइगर इस फिल्म को करने के लिए मंजूरी दे देंगे तब एकता तय करेंगी कि इस मजनूं की लैला कौन होंगी। अगर टाइगर मजनूं की भूमिका स्वीकारते हैं तो देखना दिलचस्प होगा की कैसा होगा आज का ये मजनूं।

# रणबीर के साथ काम करने में असहज हो जाती हूं : कटरीना

**रणबीर कपूर** और कटरीना कैफ भले ही पर्दे पर और असल जीवन में दोनों ही जगह एक साथ शानदार दिखते हों लेकिन कटरीना को अपने कथित प्रेमी रणबीर के साथ काम करना मुश्किल लगता है क्योंकि उनका मानना है कि कोई भी इंसान जो आपको बहुत अच्छे से जानता है उसके सामने अभिनय करना असहज होता है।

32 साल की अभिनेत्री रणबीर के साथ अनुराग बासु की आगामी फिल्म जग्गा जासूस में काम रह रही हैं। दोनों इससे पहले अजब प्रेम की गजब कहानी और राजनीति जैसी हिट फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं।

रणबीर के साथ काम करने के बारे में सवाल पूछे जाने पर कटरीना ने कहा, मुझे लगता है कि आप जिन लोगों को बहुत अच्छे से जानते हैं, उनके साथ काम करना मुश्किल होता है। मेरा मानना है कि अनजान लोगों के सामने अभिनय करना आसान है। जब कोई आपको बहुत अच्छे से जानता है और आप उसके सामने अभिनय कर रहे हों तो आप को लगता है कि ऐसा थोपा गया है, आपको लगता है कि आप अभिनय कर रहे हैं क्योंकि सामने वाले को पता होता है कि आप झूठ बोल रहे हैं।

कैटरीना पहली बार अनुराग बासु के साथ काम कर रही हैं। उन्होंने कहा, मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे दादा (बसु) के साथ काम करने का मौका मिला। उनके साथ हर कोई काम करना चाहता है। उनके काम करने का तरीका थोड़ा थकाऊ और मुश्किल होता है क्योंकि वह अपनी खुद की रफ्तार से काम करते हैं। फिल्म एक कॉमिडी-ड्रॉमा है और एक जासूस की कहानी है जो अपने लापता पिता की तलाश कर रहा है। फिल्म अगले साल जून में रिलीज होगी।

# कृष-4 का डायरेक्शन करेंगे ऋतिक

**मुंबई :** बॉलीवुड एक्टर ऋतिक रोशन अब अपने पिता की तरह ही फिल्म डायरेक्शन के क्षेत्र में कदम रखने जा रहे हैं। खबरों के मुताबिक ऋतिक अब निर्देशक बनने पर विचार कर रहे हैं। बता दें कि बतौर अभिनेता ऋतिक का कैरियर बेहतरीन चल रहा है। चर्चा है कि ऋतिक निर्देशन के मैदान में उतरने की सोच रहे हैं। कृष सीरीज की फिल्मों को अब तक राकेश रोशन ही निर्देशित करते रहे हैं, लेकिन अब ऋतिक इस सीरीज का चौथा भाग कृष- 4 के नाम से बनाएंगे। वह इस फिल्म में अभिनय भी करेंगे और निर्देशक के रूप में दोहरी जिम्मेदारी निभाएंगे। हालांकि उनके पिता राकेश रोशन भी इस काम में उनका हाथ बंटाएंगे। कहा जा रहा है कि राकेश की अब उम्र हो चुकी है और वे ज्यादा तनाव नहीं पालना चाहते हैं इसलिए ऋतिक उनकी जिम्मेदारी बांटेंगे। यह सीरीज इतनी महत्वपूर्ण है कि दूसरे निर्देशक को लेने का जोखिम वह नहीं उठा सकते हैं।

# राधिका 'फोबिया' में दिखाएंगी ऐक्टिंग स्किल

**मुंबई :** फिल्म मांझी द माउंटेन मैन और अहिल्या में दर्शकों और समीक्षकों को प्रभावित करने के बाद, अभिनेत्री राधिका आप्टे आगामी मनोवैज्ञानिक थ्रिलर फिल्म फोबिया में अपना अभिनय कौशल दिखाने के लिए तैयार हैं। फिल्म का निर्माण इरोज इंटरनैशनल ऐंड नेक्स्टजेन फिल्म्स ने मिलकर किया है। राधिका इसके लिए उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, मुझे थ्रिलर और हॉरर पसंद हैं। इसलिए मैं बहुत खुश हूं कि मैं पहली बार इस शैली में काम कर रही हूं। मैं खास तौर से इरोज, नेक्स्टजेन और पवन के साथ काम करने के लिए उत्साहित हूं। फिल्म फोबिया की शूटिंग पवन कृपलानी शुरू करने जा रहे हैं।

उन्होंने 2011 में फिल्म रागिनी एमएमएस का निर्देशन किया था। नेक्स्टजेन फिल्म्स के विकि रजानी ने इससे पहले आर राजकुमार और टेबल नम्बर 21 बनाई थी। उनका कहना है कि टीम को राधिका की ऐक्टिंग स्किल पर विश्वास है। रजानी ने कहा, राधिका ने अपनी पिछली फिल्मों में अपना टैलंट साबित किया है। मुझे यकीन है कि इस शैली में बेहतर करने के लिए वह सक्षम हैं। यह मेरे लिए भी पहला मौका है। इससे पहले पवन ने इस शैली में बेहतरीन निर्देशक किया था।

# सैफ के अलावा किसी को किस नहीं करेंगी करीना !

**मुंबई :** बॉलीवुड डिवा करीना कपूर जल्द ही अर्जुन कपूर के साथ फिल्म "की एंड का" में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में अर्जुन करीना के पति बने हैं। अर्जुन जहां करीना के साथ काम करके बहुत खुश हैं, वहीं करीना ने अर्जुन का दिल तोड़ दिया है। दरअसल करीना ने अर्जुन के साथ किसिंग सीन करने से इनकार कर दिया। सैफ अली खान से शादी के बाद करीना ने अन्य किसी एक्टर के साथ इंटिमेट और किसिंग सीन से परहेज करने लगी थी। इस फिल्म के लिए भी करीना ने जरूरत से ज्यादा इंटिमेट सींस डालने के लिए मना कर दिया। इस फिल्म को मशहूर निर्देशक आर बाल्की डायरेक्ट कर रहे हैं। आपको बता दें कि "की एंड का" में अर्जुन कपूर घर संभालने वाले पति की भूमिका में हैं, जबकि करीना कपूर उनकी वर्किंग वाइफ का किरदार निभा रही है। ये पहला मौका है, जब अर्जुन करीना के साथ सिल्वर स्क्रीन शेयर करेंगे। फिल्म में अमिताभ बच्चन और जया बच्चन की कैमियो भूमिका है।

# भारत में सबसे ज्यादा ऑनलाइन खलबली मचाती हैं प्रियंका चोपड़ा !

**नई दिल्ली :** अपने अमेरिकन टीवी शो 'क्वांटिको' को लेकर आजकल काफी चर्चा का विषय बनी हुई बॉलीवुड अदाकारा प्रियंका चोपड़ा का नाम साइबर जगत में 'सबसे ज्यादा सनसनीखेज सितारों' की फेहरिस्त में सबसे उपर है। इंटेल सिक्योरिटी की एक रिपोर्ट के मुताबिक साइबर अपराधी दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों वाले वेबसाइटों पर लोगों को आकर्षित करने के लिए उनके नाम का इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने 2015 'सबसे ज्यादा सनसनीखेज सितारों' की फेहरिस्त में आलिया भट्ट की जगह ली है। रिपोर्ट के मुताबिक सूची में नंबर दो पर श्रद्धा कपूर हैं जो पिछले साल नंबर छह पर थी। वहीं नंबर तीन पर कॉमेडियन कपिल शर्मा का नाम काफी चौंकाने वाला है।

आर.एन.आई. रजि. नं. **39661/84.** वर्ष-31, अंक-39 (11 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2015 तक). **स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक** राघवेन्द्र द्वारा बाबा प्रिंटर्स पटना से मुद्रित एवं 105 चंद्रिका ब्लॉक, विश्वनाथ प्लाजा, मीठापुर डी एरिया, पटना-1 से प्रकाशित, **संपादक**- डॉ दीपक कुमार राय, फोन नं- 06183-224005, ई मेल- **ganadesh.patna@gmail.com.** *कानूनी मामले पटना के सक्षम न्यायालय में ही निपटाये जायेंगे.